

THE CRAPLER



The Central Reserve Police News Letter & Magazine
1987

THE CRAPLER



**The Central Reserve Police News Letter & Magazine
1987**

Contents

28 February 1987 Vol 1: Number 6
31 March 1987 Vol 1: Number 7
31 May 1987 Vol 1: Number 1
30 June 1987 Vol 1: Number 2
31 August 1987 Vol 1: Number 3
30 September 1987 Vol 1: Number 4
30 November 1987 Vol 1: Number 5
31 December 1987 Vol 1: Number 6

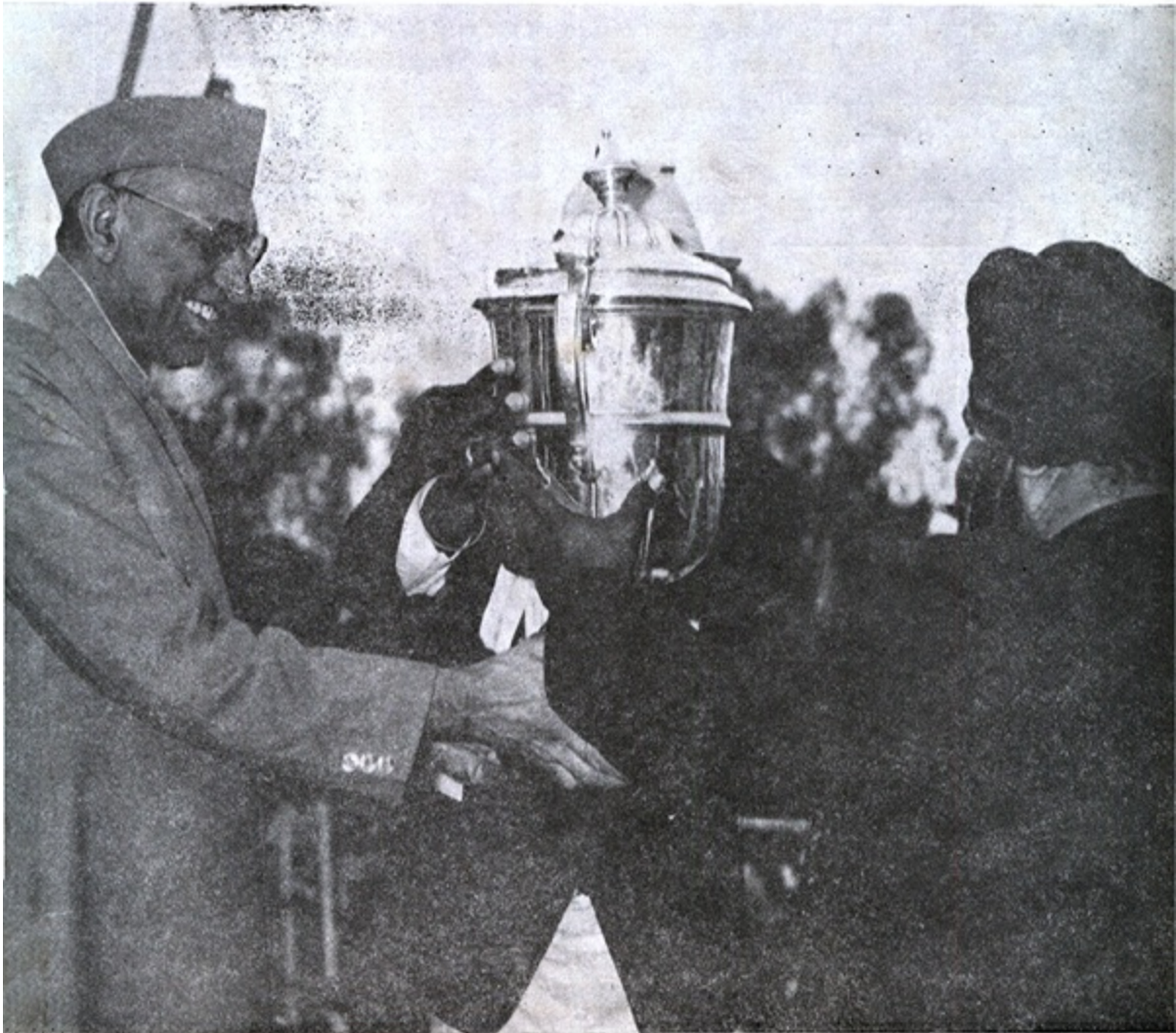
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खण्ड I अंक 6

मूल्य 1.60 रु०

[28 फरवरी, 1987] [9 फाल्गुन, 1908]



हरियाणा के मुख्य मंत्री श्री बंसीलाल से एथ्लेटिक्स चैम्पियनशिप ट्रॉफी पाते हुए सी० आर० पी० एफ० के मुख्य कोच श्री एच० पी० एस० चोमा

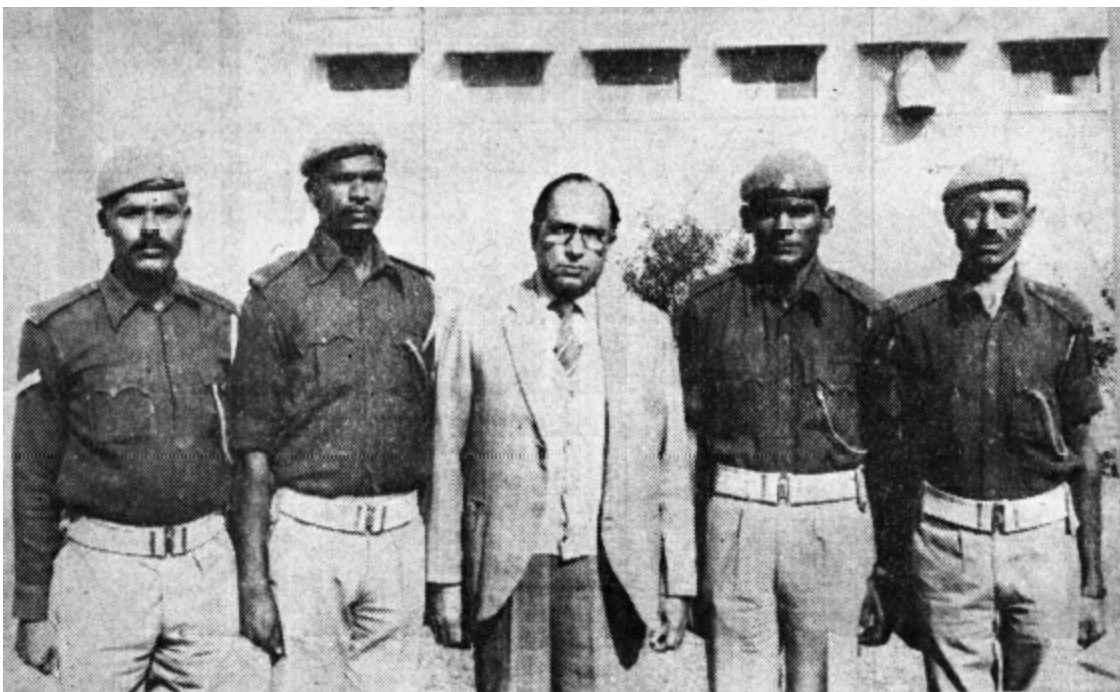
5वी बटालियन द्वारा 80 लाख रु० का सोना बरामद

रोहतक मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के पावर हाउस पर निरत 5 बटालियन की सुरक्षा टुकड़ी ने 30 नवम्बर 1986 को 80 लाख के मूल्य के 30 किलोग्राम के सोने के बिस्कुट बरामद किये।

उस टुकड़ी के कमांडर ना० बीरबल राम को उस क्षेत्र में घूमते हुए, एक व्यक्ति पर कुछ संदेह हुआ। उसने चौकीदार सुन्दर लाल को सतर्क किया। आध घंटे के बाद, जब उस नायक ने अपने अन्य साथियों के संग उस व्यक्ति को ललकारा, उसने अपने कंधे पर लटकाये थैले को पटक दिया और भागने लगा।

तदुपरान्त उसके भागने पर, नायक बीरबल राम ने अपने दो कान्स्टेबलों—के० रामाकृष्णन और ध्रुव सिंह के साथ, उसका पीछा किया तथा अन्य दो जवानों को उस थैले पर सतर्क दृष्टि रखने के लिये तुरन्त आदेश दिये। लगभग दो किलो मीटर पीछा करने के बाद संदिग्ध व्यक्ति सतनाम सिंह को पकड़ लिया गया।

30 किलोग्राम सोने के थैले के साथ, संदिग्ध व्यक्ति को स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।



कमांडेंट आर० एस० वोहरा उन चार जवानों के साथ जिन्होंने सोने के बिस्कुट बरामद किए। बाएं से ना० जवाहर लाल, का० के० रामाकृष्णन, का० इन्द्रसिंह और ना० बीरबल राम।

विदेशी मुद्रा बरामद

जालन्धर में, 47 बटालियन, के० रि० पु० बल की 'बी' कम्पनी और सिविल पुलिस

को एक संयुक्त प्रहरी टुकड़ी ने 27 नवम्बर 1986 को किसी गोविंदलाल बजाज के घर छापा मार कर, 16,200 रु० के मूल्य के अमरीकी डालर, 1,450 रु० की कीमत के अंग्रेजी पाउण्ड, 450 रु० के मूल्य के केनेडीयन डालर और 1,500 रु० की कीमत के दक्षिणी अरब के रियाल बरामद किये। गोविन्दलाल और एक अन्य व्यक्ति रमेश कुमार बन्दी बनाये गये।

चरस बरामद

जालन्धर में 20 दिसम्बर 1986 को नाकाबन्दी में सेवारत 47 बटालियन, के० रि० पु० बल के जवानों ने एक टुक से एक लाख रुपये से अधिक कीमत की 41 किलोग्राम चरस और अन्य निषेध वस्तुयें बरामद कीं। 1,31,600 रु० नकद भी पाये गये।

चार व्यक्ति बन्दी बनाये गये और स्थानीय पुलिस को बरामद की गई वस्तुओं के साथ उन्हें सौंप दिया गया।

सच्ची साधुता मनुष्य की अन्तरात्मा से उत्पन्न होती है; सभी मनुष्य होते उत्पन्न सन्त ही हैं।

—कन्फ्यूसियस

आतंकवादी गिरफ्तार

फिरोजपुर जिले में निरत के० रि० पु० बल ने विगत 23 जनवरी को, तीन रायफलों, एक पिस्तोल और 1685 राउन्ड्स के सहित उन खतरनाक आतंकवादियों को फतह गौरा ग्राम में बन्दी बनाया, जिनके बन्दी बनाने पर इनाम थे। उसी दिन फतहबाद (अमृतसर) के पास, शस्त्रों सहित छह संदिग्ध आतंकवादियों को भी इस बल ने पकड़ा। उससे पहले दिन, होशियारपुर जिले के गहरी मण्ड गाँव में, भारी गोलाबारूद के साथ 8 आतंकवादियों को इस बल ने बन्दी बनाया।

दुर्दान्त मारा गया

बिहार में देहरी आन सोन पर 18/19 जनवरी 1987 को एक दादा जल्ये से स्थानीय पुलिस के सहित 83 बटालियन, के० रि० पु० बल की मुठभेड़ हुई। उसमें दुर्दान्त राम प्रीति मारा गया। दो रायफलों एक हथगोला और 38 राउन्ड्स बरामद हुये।

अग्नि शमन

गौहाटी के करीमगंज बाजार में एक गोदाम में 16 दिसम्बर 1986 को लगी एक भयानक आग को 60 बटालियन के जवानों ने बुझायी। फलस्वरूप, लाखों रुपयों की सम्पत्ति भस्मीभूत होने से बच गयी।

एड्स को ठीक करने का के० रि० पु० बल के होम्योपैथ डाक्टर का

दावा

डॉ० जी. एस. सोनी, एक होम्योपैथ (जो पुलिस महानिरीक्षक से III के० रि० पु० बल के व्यक्तिगत सचिव हैं) यह दावा करते हैं कि एड्स का रोग होम्योपैथी औषधियों से ठीक हो सकता है। उनके मतानुसार, शीघ्र पता लगाने पर वह शीघ्र ठीक की जा सकती है, जब कि यदि बहुत समय बीतने पर उसका पता लगता है, तब दीर्घकालीन चिकित्सा जरूरी होगी।

अधिकारियों में फेर बदल

पुलिस महानिरीक्षक के रूप में पदोन्नति पाने और हरियाणा को लौटने पर, श्री आर. आर. सिंह, ने उपनिदेशक (प्रशिक्षण) महानिदेशालय का पदभार 19 दिसम्बर 1986 को हस्तांतरित कर दिया।

श्री टी. के. मिसाओ, पच्छिमी बंगाल कॉडर (1965 बैच) के भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में डेपूटेशन पर आकर, 17 दिसम्बर 1986 को, पुलिस उपमहानिरीक्षक, इम्फाल का पदभार ग्रहण किया।

ब्रह्मा ग्राम में के० रि० पु बल पर घात

तरनतारन के तहसील ब्रह्मा ग्राम की तलाशी लेने के बाद, सब इन्स्पेक्टर बनता राम (48 बटालियन) के नेतृत्व में 8 जवानों की टुकड़ी के वाहन पर 10 जनवरी 1987 की रात को लगभग पौने नौ बजे घात लगाई गई, जब एक गतिरोधक होने के कारण वाहन की गति धीमी हुयी। 15-20 मिनट तक गोलाबारी चली। बेतार सेट से इस घात की सूचना कम्पनी मुख्यालय को देते हुए, नायक वी० के० राय के पेट में एक विस्फोटक लगा और बेतार सेट को गोली से नष्ट कर दिया गया। अपूर्ण सूचना मिलते ही, अधिक जन शक्ति के साथ वरिष्ठ अधिकारी घटना स्थल जा पहुंचे। आतंकवादी अंधेरे का लाभ उठाकर, बच भागे।

छाती में गोली लगने से, स० इ० बनता राम की उसी समय मृत्यु हो गई। ना० बी० के० राय की मृत्यु अस्पताल ले जाते समय हो गई। अन्य चार बुरी भाँति घायल हुए और अस्पताल में भर्ती करा दिये गये।

23 छोड़े हुये कारतूस और 4 प्रयुक्त खोखों (12 बोर) के साथ, खेत में पड़ा एक पत्र भी मिला, जिसमें खुंखार आतंकवादी अवतार सिंह ब्रह्मा और उसके तीन सहयोगियों ने इस घात को के० रि० पु० बल से बदला लेने की कार्रवाई बताया है।

चलते रहो प्यारे की धुन पर के० रि० पु० बल

इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक चुस्त टुकड़ी ने राजधानी के राजपथ पर, पुलिस उपाधीक्षक बी० के० स्वामी द्वारा, थीम सांग 'चलते रहो प्यारे' पर बनाई गई धून पर मार्च किया। इ० पी. एस. थापा ने ही वादक वृन्द का नेतृत्व किया। के० रि० पु० बल के श्रीम सांग की रचना, श्री एस०डी० पाण्डेय, महानिदेशक ने की है।

विभिन्न पदों के 144 जवानों और तीन सब-इन्स्पेक्टर पद के अधीनस्थ अधिकारियों के सहित, के०रि०पु० बल की टुकड़ी का नेतृत्व पुलिस उपाधीक्षक बी.एस. चौहान ने किया।

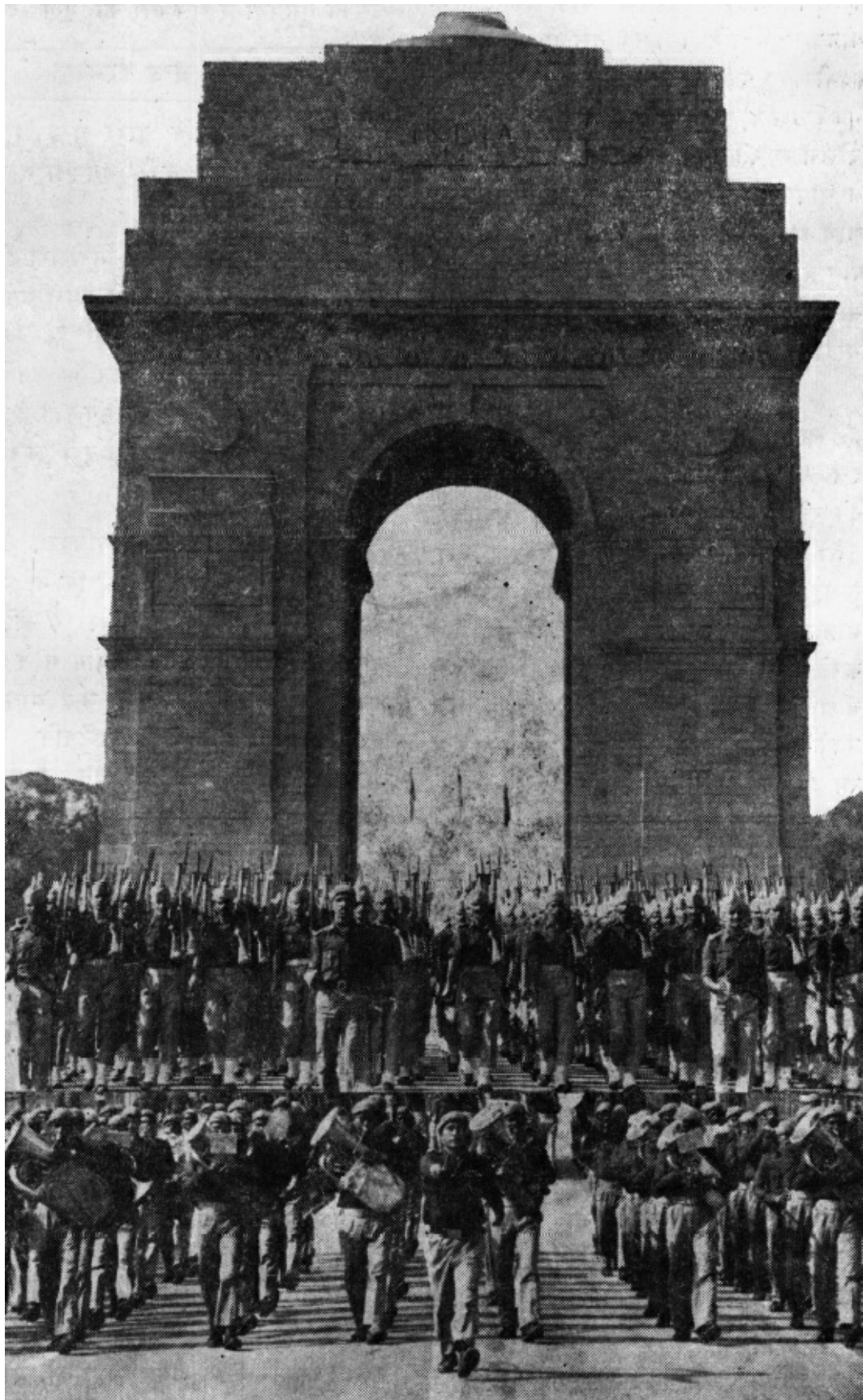
इस टुकड़ी के जवानों की औसत लम्बाई छह फूट थी और कलाई करी हुयी चमचमाती किरचों वाली 7.62 बोल्ट एक्शन की रायफलें उनके हाथों में थीं। दर्शकों ने इस टुकड़ी को बहुत सराहा।

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र II की दीक्षान्त परेड

आवड़ी में नवम्बर 1986 में उन्नीस-उन्नीस रंगरूटों के दो जत्थों की दीक्षान्त परेडें आयोजित हुईं। प्रिंसीपल श्री पी. वी. जगन्नाथन ने दोनों अवसरों पर सलामी ली।

सम्पत्ति बचाई

त्रिपुरा में कुर्मा मार्केट की चाय की दुकान पर 24 जनवरी 1987 को सहसा आग लगते देखकर, पुलिस उपाधीक्षक हरी सिंह के नेतृत्व में 70 बटालियन के जवानों ने तत्काल आग बुझा दी और अन्य दुकानें और ग्रामीणों की सम्पत्ति जलने से बचा ली।



इण्डिया गेट पर अभ्यास करते हुए के० रि० पु० बल की टुकड़ी

हिन्दी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अंचल में ले० प्रेम चन्द धस्माना

विविधता के बीच एकता की स्थापना में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राष्ट्रीय एकता की बात जब भी प्रारम्भ होती है, तब जिन महत्वपूर्ण उपादानों की ओर हमारा ध्यान जाता है, उनमें प्रमुख उपादान है—भाषा। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इस फोर्स का काफी योगदान रहा है। इस बल में केरल से कश्मीर, पंजाब से बंगाल, असम से गुजरात तक सभी प्रांतों के जवान हैं, जिनकी बोलचाल की भाषा हिन्दी है या उसके सहारे वे आपस में तथा प्रान्तों के नागरिकों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान कर पाते हैं। रिक्रूट ट्रेनिंग के दौरान हिन्दी भाषा सीखते हैं और सरकारी काम-काज को इस भाषा में उतारते हैं।

फोर्स के वर्तमान महानिदेशक श्री सतीश दत्त पाण्डेय भी इसी बात पर जोर देते रहे हैं। हाल ही में (22-23 अक्टूबर, 86) उन्होंने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, गुवाहाटी में रिक्रूट प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिला बटालियन की कंपनी को संबोधित करते हुए अहिन्दी भाषी रिक्रूटों से हिन्दी सीखने व प्रयोग करने पर जोर दिया, ताकि उनके कार्य संचालन में भाषा बाधा बनकर न रह जाय।

महानिदेशक महोदय, प्रख्यात साहित्यकार एवं हिन्दी भाषा के अच्छे जानकार होते हुये भी, मिश्रित एवं सरल हिन्दी के प्रयोग पर जोर देते हैं। सी आर पी एफ समाचार के भी वर्ष में अंग्रेजी के 4 अंकों के मुकाबले, 8 अंक हिन्दी में ही प्रकाशित किये जाते हैं। इस बल के कार्यालय अध्यक्षों को प्रेषित महानिदेशक महोदय का डी० ओ० लेटर भी हिन्दी में जारी होने लगा है तथा कोशिश की जा रही है कि उनके “टूरनोट्स” भी हिन्दी में जारी किये जायें। यूनिटों की लाइब्रेरियों में स्वस्थ हिन्दी साहित्य के अभाव को देखकर, उन्होंने तुरन्त 14000/- रु० की पुस्तकें उपहार स्वरूप प्रत्येक ग्रुपकेन्द्र को सुलभ करायीं। रणक्षेत्र हो या खेल का मैदान या दफ्तर, वे हिन्दी को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।

देवनागरी लिपि, देश तथा विश्व की प्रायः सभी ध्वनियों को प्रकट करने की क्षमता रखती है। देवनागरी लिपि जैसी लिखी जाती है, वैसी ही पढ़ी जाती है, जो उसकी सुगमता व सुलभता का गुण दर्शाती है। देवनागरी लिपि द्वारा अन्य प्रान्तों व विदेशी भाषाओं को बड़ी सुगमता से सीखा जा सकता है।

अधीनस्थ कार्यालयों में निरीक्षण दौरे के दौरान अनेक ऐसे अधिकारी तथा कर्मचारी से भेंट करने का अवसर मिला है, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। फिर भी

उनके मन में हिंदी में काम करने की उमंग रही है। वे इस बात में झिझक महसूस नहीं करते कि उन्हें हिंदी कम आती है।

किसी भी भाषा को व्यापकता प्रदान करने के लिये यह आवश्यक है कि नई प्रगति के अनुरूप उसके शब्द भंडार में वृद्धि की जाय। शब्दों के निरन्तर प्रयोग से वे सरल लगने लगते हैं और भाषा भी उन्हें आत्मसात् कर लेती है। आरम्भ में राष्ट्रपति, सचिवालय, संसद, विधेयक, संसाधन, पर्यावरण आदि शब्द कठिन लगते थे, परन्तु बार-बार प्रयोग और अभ्यास के कारण ये शब्द जुबान पर चढ़ गये हैं।

सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए, सरकार द्वारा की गई सुविधानों और प्रोत्साहनों में कमी नहीं है यथा, निःशुल्क प्रशिक्षण, मुफ्त पाठ्यपुस्तकें, मार्ग व्यय की प्रतिपूर्ति, राजपत्रित अधिकारियों, के लिये अलग कक्षाएँ, परीक्षा में प्राइवेट रूप से बैठने की छुट, परीक्षा पास करने पर सेवापंजी में इंदराज, अराजपत्रित एवं राजपत्रित को 12 महीने के लिये वेतनवृद्धि तथा 70, 60 व 55% अंक प्राप्त करने पर क्रमशः 300, 200 व 100 रु० का एक मुश्त पुरस्कार। उन कर्मचारियों को, जो ऐसे स्थानों पर नियुक्त हैं जहाँ हिन्दी शिक्षण योजना के केन्द्र नहीं हैं :— प्राज्ञः— 300 रु०, प्रवीण—250 रु० व प्रबोध—200 रु० दिये जाते हैं। हिन्दी टंकण/आशुलिपि की परीक्षाएँ पास करने पर वेतनवृद्धि/नकद पुरस्कार है। विशेष योग्यता के साथ परीक्षा पास करने पर—टाइप/आशुलिपि 300 रु०, 200 रु०, 100 रु०, क्रमशः 97/95, 95/92, 90/85 अंक प्राप्त करने पर जहाँ केन्द्र नहीं खोले गए हैं। सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी टिप्पण आलेखन में प्रोत्साहन निम्नलिखित है :

मुख्यालय/यूनिट

प्रथम 2 पुरस्कार प्रत्येक—500/400रु०

द्वितीय 3 ” ”—300/200रु०.

तृतीय 5 ” ”—150/150 रु०

अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी में भी टाइप लेखन और आशुलिपि कार्य करने के लिए क्रमशः 30 रु०/20 रु० प्रति माह विशेष भत्ता दिए जाने की व्यवस्था है। कार्यालयों में ऐसे भी कुछ पत्र होते हैं, जिन पर की जाने वाली कार्रवाई निश्चित होती है या जिन पर केवल प्राप्ति की सूचना ही भेजनी होती है या किसी विभाग विशेष की कार्य विधि या दिए गए किसी आदेश की प्रति यूनिटों को भेजनी होती है। ऐसे पत्रों का प्रारूप बारम्बार तैयार नहीं करना पड़ता। ऐसे पत्र सहजता से हिन्दी में तैयार किए जा सकते हैं।

इस बल में अधिकांश ग्रुप केन्द्रों से बल आदेश हिन्दी में जारी किए जा रहे हैं। बल के 99 प्रतिशत कार्यालय अधिसूचित किए जा चुके हैं। सभी स्तर पर परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम से उत्तर देने की छुट तथा प्रश्न पत्र द्विभाषी उपलब्ध कराए जाने लगे हैं। हाल ही में आयोजित परीक्षा में हिन्दी स्टेनोग्राफर एवं हिन्दी टाइपिस्ट ने बल के

इतिहास में ओपन मार्केट से पहली बार मोरेट लिस्ट में स्थान पाए हैं। संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति ने मद्रास, पल्लीपुरम, माउंट आबू, सिक्किम, श्रीनगर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण दौरा किया है तथा समिति के हिन्दी प्रगति की सराहना की है।



47वीं वार्षिकोत्सव

“के० रि० पु० बल की जनशक्ति बढ़ानी है”

—श्री बूटा सिंह

श्री बूटा सिंह गृह राज्यमन्त्री ने 28 दिसम्बर 1986 को बताया कि केन्द्रीय सरकार ने केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की जनशक्ति को समुचित रूप से बढ़ाने का निर्णय लिया है। देश के सभी भागों से इस बल की मांगों को ध्यान में रखते हुये, यह निर्णय लिया गया है।

श्री बूटा सिंह के० रि० पु० बल के 47वें वार्षिकोत्सव परेड में झड़ोदा कला (नई दिल्ली) में सलामी ले रहे थे। उनके कथनानुसार, के० रि० पु० बल के लिए माँग उस

विश्वास का सबूत है, जो इसने देश के विभिन्न राज्यों से पाया है।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री की इच्छानुसार, के० रि० पु० बल के प्रशिक्षण को सुधारने के लिए एक योजना तैयार की जा रही है तथा इस बल को आधुनिक हथियारों तथा संचार व्यवस्था से बेहतर लैस किया जायेगा।

गृहमंत्री ने कहा कि देश के विकास की गति को नष्ट भ्रष्ट करने के उद्देश्य से, क्या भीतरी और क्या बाहरी, खतरों से आज उसे जूझना पड़ रहा है। फल-स्वरूप, देश की एकता और स्वतंत्रता संकट में पड़ी है और केन्द्रीय पुलिस संगठनों तथा मुख्यकर के० रि० पु० बल की यह जिम्मेदारी है कि देश की अखण्डता और विकासगति बनाये रखने में वे अपना योगदान दें।

महिला बटालियन की महिलाओं समेत परेड में भाग लेने वाली सभी सदस्यों को उनके चुस्त प्रदर्शन के लिए श्री बूटासिंह ने बधाई दी।

परेड का नेतृत्व श्री इकबाल सिंह गिल, कमांडेंट, 9 बटालियन ने किया। परेड में भाग लेनेवाले 11 राजपत्रित अधिकारी, 40 अधीनस्थ अधिकारी, 108 महिलायें तथा 591 जवान थे, जो देश के सभी भागों से आये थे।

गृह मंत्री ने 11 सदस्यों को वीरता पदक प्रदान किये। उनमें 37 बटालियन के चार वे जवान थे, जिन्होंने त्रिपुरा नेशनल वालंटियर्स की घात से संघर्ष किया तथा का० दयाराम को खो दिया, जिसे मरणोपरान्त पदक मिला। दूसरा मरणोपरान्त पदक उसी बटालियन के का० मोहिन्दर पाल को मिला, जिसने असम में मणिपुरी राजद्रोहियों के विरुद्ध कार्यवाई में वीरगति पाई थी।

श्री बी० जे० एस० स्याल, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) और श्री के. आर. के. प्रसाद, पुलिस उपमहानिरीक्षक, मद्रास को विशिष्ट पुलिस सेवा पदक प्रदान किये गये। सूबेदार मेजर जगताराम, 53 बटालियन को भी विशिष्ट सेवा पदक मिला और इस पदक को पाने वाला इस बल में वह सब से पहला अराजपत्रित अधिकारी है।

गृह मंत्री द्वारा तैंतीस व्यक्तियों को सराहनीय पुलिस सेवा पदक प्रदान किये गये। पहली बार, एक रसोइये (एन. सुब्रह्मनियम) और एक सफाई कर्मचारी (किशनलाल) ने इस पदक को पाया।

इस अवसर पर, श्री सतीश दत्त पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने अनेकों उच्चपदाधिकारियों से संदेश पाये। जिनका उल्लेख पिछले संस्करण में हो चुका है।

अपने सन्देश में, राष्ट्रपति जैलसिंह ने कहा है “आज देश की बढ़ती हुई मांग ने यह सिद्ध कर दिया है कि बल के जवान अपनी कर्तव्य साधना की कसौटी पर खरे उतरे हैं। इस बल ने राष्ट्र की एकता और अखंडता को कायम रखने में बहुत ही रचनात्मक भूमिका निभाई है।”

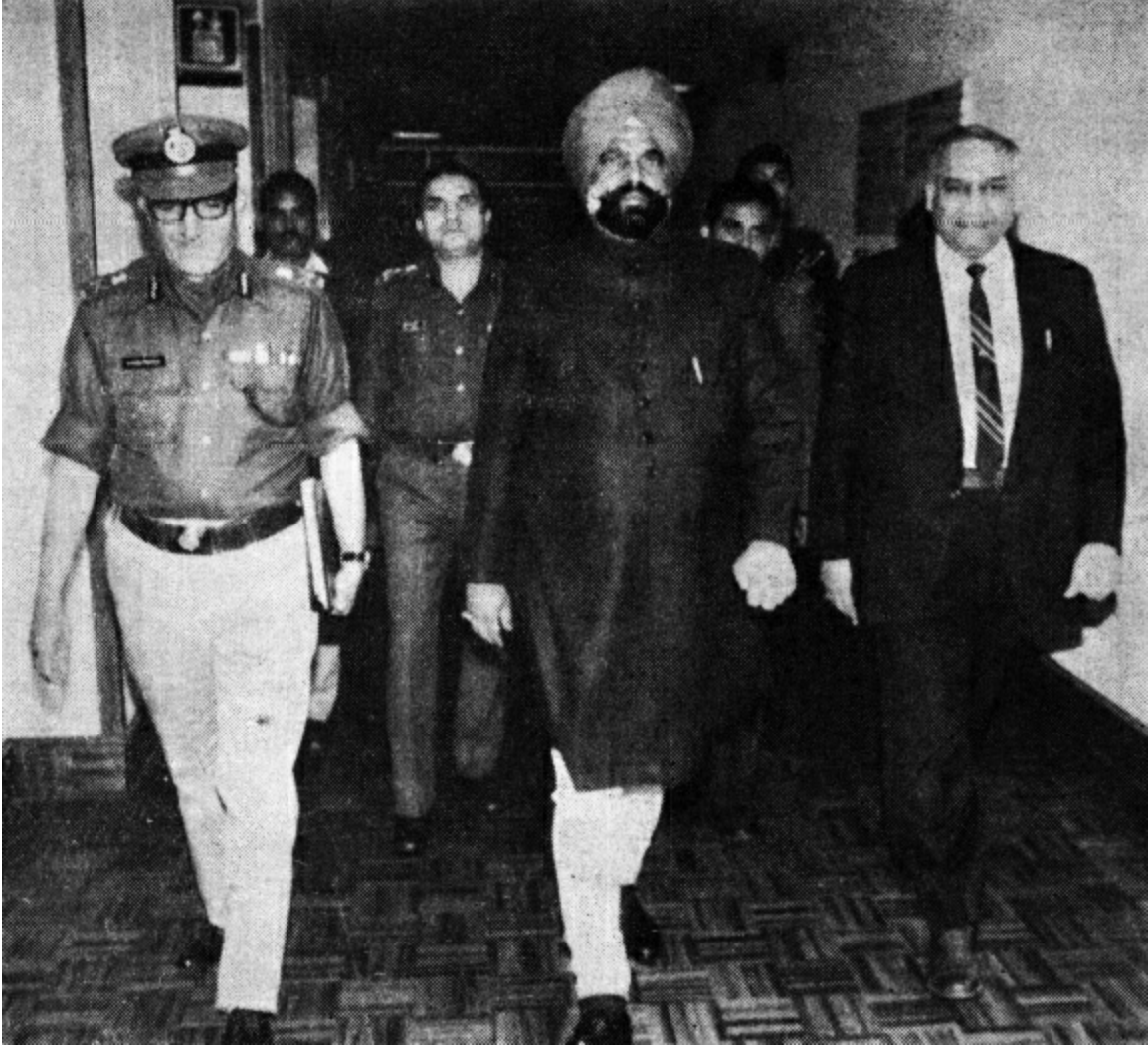
श्री राजीव गांधी, प्रधान मन्त्री ने अपने सन्देश में कहा है —“देश की आन्तरिक सुरक्षा बनाये रखने में, के० रि० पु० बल ने एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई है और आज भी इस क्षेत्र में इस बल का योगदान सराहनीय है। हम सभी भारतवासियों को

इस पर गव है। इस बल के भव्यभावेष् के लिये में हादेक कामनायें भजता हूं”

वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 27 दिसम्बर 1986 को वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये, श्री बूटासिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री ने पंजाब में आतंकवाद से जूझने के लिए, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा प्रयुक्त किए गये ढंग को बड़ा महत्व दिया।

उन्होंने पंजाब में के०रि०पु० बल की भूमिका की प्रशंसा की, जहां कुल मिलकर इस बल ने अच्छा नाम कमाया है। ‘मेरा मन उन जवानों के प्रति कृतज्ञता से भर आता है, जिन्होंने राष्ट्र के शत्रुओं से लड़ते हुये प्राण बलिदान किये हैं। मैं यह आश्चस्त होना चाहूंगा कि एक ओर तो महानिदेशक कोई कसर नहीं उठा रखेंगे तथा दूसरी ओर बल के कमांडर हर स्तर पर यह देखेंगे कि मृत सिपाहियों और अधिकारियों के परिवारों को वांछित सहायता जल्द से जल्द दी जाये। सभी घायल जवानों और अधिकारियों की उत्तम से उत्तम चिकित्सा होनी चाहिये और यदि उनमें से कोई प्रशक्त हो जाये, तब महानिदेशक स्वयं सुनिश्चित करें कि उसके शेष जीवन में उसकी और उसके परिवार की हम देखभाल करें।’



सम्मेलन के लिए पधारते हुए गृह मंत्री श्री बूटा सिंह

सिद्धान्त रूप से, मंत्री महोदय ने अधिकारियों का यह सुझाव मान लिया कि (जैसा आजकल किया जा रहा है) के०रि० पु० बल को अधिक जनशक्ति के रूप में निरत करने की जगह, इसको किन्हीं विशेष कार्यों के लिये एक कार्यदल के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। गृह मंत्रालय में गंभीर रूप से इस मामले की समीक्षा होगी।

‘नम्बर्स गेम’ (सांख्यिक खेल) नामक विषय पर मंत्री महोदय को श्रवणकारी चलचित्र प्रदर्शन दिखाया गया, जिसमें इस बात पर बल दिया है कि एक साधारण ढंग से निरत अनेक व्यक्तियों पर रहने की तुलना में एक कार्यदल के रूप में के०रि०पु० बल, कार्रवाइयों में अधिक कारगर सिद्ध हो सकता है।

यह प्रदर्शन, श्री के० आर० के० प्रसाद, पुलिस उपमहानिरीक्षक, मद्रास की देखरेख में श्री सी. वी. मैथ्यू, उप प्रधानाध्यापक, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज-II आवड़ी ने तैयार किया था। इस प्रस्तुति के दृश्य, महानिदेशालय जन सम्पर्क विभाग द्वारा दिये छाया चित्रों पर आधारित थे।

के०रि०पु० बल को कितनी ही बतालेयनों पर अपने कामेयों के लिये सन्तोषजनक आवास नहीं होने के कारण, सम्मेलन ने और अधिक आवास-व्यवस्था की मांग की। मंत्री महोदय ने वचन दिया कि इस मामले पर मुख्य मंत्रियों के आगामी सम्मेलन में विचार किया जायेगा और तत्पश्चात् गृह मंत्रालय में भी इस पर विचार-विमर्श होगा। अधिकारियों को उच्च प्रबन्ध प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये।

मंत्री महोदय इस सर्वसम्मति से भी सहमत हुये कि इस बल को उत्तम प्रशिक्षण की स्थिति में रखने के लिये कम्पनी स्तर पर बारी बारी से प्रशिक्षण फिर जल्द प्रारंभ हो।

श्री बूटासिंह ने अफसरों से अपने जवानों के कल्याण के लिये व्यक्तिगत ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने सम्मेलन को यह विश्वास दिलाया कि इस बल के मनोबल को बढ़ाने के लिये, सरकार हर सम्भव सहायता करेगी।

इससे पूर्व, श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक, के०रि०पु० बल ने गृहमंत्री की अगवानी की और इस बल की ज्वलन्त समस्याओं से अवगत कराया।

कल्याण संगोष्ठी का आयोजन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में पहली बार कल्याण संगोष्ठी का आयोजन 25 दिसम्बर 1986 को हुआ। महानिदेशक महोदय की धर्मपत्नी श्रीमती कमला पाण्डेय ने इस कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जिसमें प्रत्येक सेक्टर का एक-एक स्टाल लगाया गया। ग्रुप केन्द्रों में निर्मित सामान की काफी बिक्री हुयी। गृहमंत्री तथा अन्य विशिष्ट जन 28 दिसम्बर 1986 को यह प्रदर्शनी देखने गये और इसे सराहा।

कल्याण केन्द्रों व महिलाओं की प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे—

कल्याण केन्द्र

I. ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली, (से० III)— ट्राफी व 15,000 रु० की नकद राशि।

II. ग्रुप केन्द्र, नीमच (से० I)— 10,000 रु० की नकद राशि।

सर्वोत्तम महिलायें

I. श्रीमती कौशल्या देवी, पत्नी ला० ना० रतन सिंह, ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली— स्टेन लेस डिनर सेट व पेन सेट।

II. श्रीमती द्रोपदी नायर, ग्रुप केन्द्र नीमच-एक कीमती ऊन कम्बल व पेन सेट।

III. श्रीमती सकीना बेगम, ग्रुप केन्द्र, मोकामाघाट (सेक्टर-2)—एक ऊनी शाल व पेन सेट। गृहमंत्री ने उपर्युक्त पुरस्कार वितरित किये।

कल्याण प्रदर्शनी में सेक्टर प्रथम

हैदराबाद में 3 नवम्बर 1986 को अन्तः सेक्टर कल्याण प्रदर्शनों लगाई गयी, जिस में से० I प्रथम रहा। श्री सुब्रह्मण्यम, महानिरीक्षक, से० I ने 28 दिसम्बर 1986 को गृहमंत्री से प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

49 सर्वश्रेष्ठ बटालियन

1986 वर्ष की 49 बटालियन ने 'सर्वश्रेष्ठ बटालियन' की ट्राफी, प्राप्त की। यह ट्राफी उसने निरन्तर पांचवें वर्ष पायी है।

के० रि० पु० बल के वार्षिकोत्सव पर श्री बूटासिंह, केन्द्रीय गृह मंत्री ने इस ट्राफी को श्री नन्द लाल, कमांडेंट, 49 बटालियन को प्रदान की।

भुवनेश्वर में पेट्रोल पम्प

ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर के परिसर में, 1 जनवरी 1987 को श्री सतीश कुमार महेन्द्र, अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक ने पेट्रोल एवं डीजल पम्प का उद्घाटन किया। इस पम्प की मशीने इलेक्ट्रानिक हैं और उड़ीसा राज्य में इस प्रकार की मशीन पहली बार लगाई गई।



कहानी

दिया तले अंधेरा

ले० स० उ० नि० हंस राज ओझा

नदी-किनारे पर टैक्सियाँ खड़ी थी। नाव से उतरते ही, सभी टैक्सी चालक एक स्वर में बोल पड़े- ‘बाबू ! टैक्सी खाली है, जल्दी कीजिये। भाड़ा बिल्कुल कम। विक्रमगंज के लिये केवल तेरह रुपये। राकेश को ऐसा लगा मानों वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे हों। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था कि वे सब कैसे जान गये थे कि उसे विक्रमगंज जाना है जब कि उनमें कोई भी परिचित चेहरा नहीं था। अन्य कोई सवारी भी उपलब्ध नहीं थी; साथ में, उनकी नव विवाहिता पत्नी थी। अतः एव, विवश होकर टैक्सी में दोनों मियाँ बीवी को सवार होना पड़ा।

टैक्सी को सड़क पार करते हुए मेन रोड पर आने में देर नहीं लगी और अब वह हवा से बातें करने लगी। तभी, अचानक सामने से आते भाड़े के एक टुक से टकराते, टैक्सी बाल-बाल बची; लेकिन काफी प्रयास करने पर भी, चालक टैक्सी को बगल के गड्ढे में गिरने से नहीं रोक सका। इस घटना में, पति-पत्नी दोनों की आँख सहसा बन्द हो गयीं। आँखे खुलने पर, उन दोनों के पैरों के तले की भूमि निकल गयी, जब अपने चारों तरफ घातक हथियारों से लैस पाँच-छह डाकुओं को मूछों पर ताव देते देखा।

अपने जीवन साथी के संग दिल में नया संसार बसाने वाली नव विवाहिता पत्नी का दिल धक से बैठ गया। जब एक दुदन्ति डाकू गरजा ‘क्या देखते हो। मरोड़ दो बाहें; छीन लो हाथ से अटैची और ले चलो सब सामान।’ राकेश बहुत गिड़गिड़ाया-“दादा हमारे पास कुछ नहीं है। हम शादी करके जरूर आ रहे हैं। परन्तु मैं दान दहेज की प्रथा के बहुत खिलाफ हूँ।”

डाकू हँसा, बच निकलने का अच्छा नुस्खा तैयार किया है। फिर अपने साथियों को डाटा। वे सब उन दोनों पर भूखे बाज से झपटे और एक ने पत्नी के गले का लाकेट तुरन्त छीन लिया। दूसरे ने, राकेश के हाथ से अटैची हथियाली।

संयोग से, आग बुझाने वाली गाड़ी ने आकर साइरन दिया। डकैत घबड़ा गये और जल्दी से टैक्सी में सवार हो कर नौ दो ग्यारह हुये। साथ में, स्कूटर चालक भी कहीं अन्तर्धान हो गया।

यद्यपि उन दोनों के हाथ में वैवाहिक प्रणय सूत्र के अलावा और कुछ नहीं रहा था, परन्तु वे प्रभु को सकोटी धन्यवाद दे रहे थे कि वे विवाहिता की इज्जत के साथ खिलवाड़ नहीं कर पाये।

राकेश को मामले को शिकायत विक्रमगंज थाने के प्रभारी से करनी पड़ी, और वह पिस्तौल और कारतूस भी वहाँ जमा करा दिये गये, जो डाकु भागते हुये छोड़ गये थे। पिस्तौल देशी थी और नम्बर भी नकली। तत्पश्चात् वह पत्नी के साथ घर लौटा।

पुलिस के एक अधिकारी के रूप में, राकेश ने इस अप्रत्याशित घटना से अपने दफ्तर को सूचित किया। फिर क्या था ? सारी घटना की छानबीन के लिये, पुलिस का जाल फौरन बिछा दिया गया। स्कूटर चालक की तलाश शुरू हुई, जिसकी पहचान के लिये राकेश ने उसकी नाक पर एक बड़ा काला तिल बताया था। सबसे पहले टान्सपोर्ट कार्यालय से उस टैक्सी के मालिक का पता लगाना चाहा, तब यह जान कर हैरत हुई कि उस गाड़ी का स्वामी एक लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति है।

छानबीन के दौरान, एक रंग बदली हुयी नम्बर की टैक्सी सादे पोशाक पहने थाना प्रभारी की ओर आती दिखाई दी। संयोग से, चालक भी वही था। फिर क्या था, उसे तुरन्त बन्दी बनाया गया और टैक्सी जब्त कर ली गयी।

टैक्सी चालक को काल कोठरी में दिन भर भूखा प्यासा रखा गया। सायं को उसे कार्यालय में झुनझुनिया पहनाये लाया गया और पूछताछ आरंभ हुई, जिसमें प्रमुख प्रश्न था-

‘इसका असली मालिक कौन है ?

चालक की हड्डी-हड्डी में मार से बुरी भांति दर्द था। वह फफक पड़ा-‘जी... मा.. मालिक-बाबू साहब जी।’

मुंशी ने देखा तो किसी बाबू साहब के नाम टैक्सी क्या, तिपाहिया भी रजिस्टर्ड नहीं था। फिर कोड़ों की मार पड़ी -“अच्छा यह बता कि तेरे साथियों की पिस्तौल कहाँ है ? ”

नम्बर सुन कर वह हक्का बक्का रह गया; फिर भी संयम रखता हुआ बोला “जी कौन सी पिस्तौल ?”

मुंशी ने दांत पीस कर चालक पर कोड़ों का ऐसा प्रहार किया कि उसकी आँखों के बिजली कौंध गयी। वह गिड़ गिड़ाया “हजूर, मुझे बख्श दो। मैं सिर्फ भाड़े पर गाड़ी चलाने गया था। सोउनपुर के राजू बाबू की गाड़ी है और वह पिस्तौल भी उन्हीं की है।”

साउनपुर के राजू बाबू बड़े सज्जन और परोपकारी व्यक्ति माने जाते थे।

इधर राजेश को अपने विभागीय कर्मचारी से ऐसी सूचना मिली, तब वह दाँतों तले अंगुली दबा गया। सच्च होते हुये भी, विश्वास नहीं होता था कि उसके पिता की मृत्यु के बाद उसके सगे चाचा गरिमा सिंह उसकी शादी में भारी दान दहेज लेने के चक्कर में थे और राकेश के सिद्धान्त के सामने अपनी दाल गलती नहीं देख कर, इन्हीं के इशारे पर यह सब कुछ हुआ था। उन्हीं की शतरंजी चाल से, राकेश को अकेली पत्नी लेकर नदी के मार्ग से आना पड़ा था।

अब गरिमा सिंह की तलाश शुरू हुई। गरिमा सिंह जाना माना व्यक्ति था; थाने के

प्रायः सभी कमों उससे पारोचेत थे, परन्तु तब थाना प्रभारों ने स्वयं कमर कसी। सादों सफेद पोशाक में वह सुल्तानपुर के लिए रवाना होने ही वाला था कि उसने गरिमा को एक बस से उतरते देखा। फिर क्या, था तुरन्त बन्दी बना लिया गया।

समाज में गरिमा सिंह की अच्छी गरिमा थी; उसकी गिरफ्तारी से, समाज में बड़ी खलबली मच गई। गरिमा सिंह ने पैसे के बल पर मामले को दबाना चाहा; पर सफलता नहीं मिली।

अन्ततोगत्वा, कचहरी में मुकदमा चला। चाचा के रूप में अपराधी और भतीजे के रूप में पुलिस अधिकारी का मुकदमा सुनने भारी भीड़ उपस्थित थी।

सरकारी वकील ने सबसे पहले प्रश्न किया 'गरिमा सिंह। आप तो समाज में दहेज प्रथा के विरुद्ध भाषण देते हैं, फिर यह दिया तले कैसा अंधेरा ?”

गरिमा ने सरल सीधी जनता की आँख में धूल झोंक कर, जो गरिमा स्थापित की थी, आज पर्दा फाश होने पर उसपर सभी थू थू कर रहे थे।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में उत्तम निर्माण-योजनायें

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों का जीवन बड़ा ही कष्टप्रद और चलवासी है। उसे देश के विभिन्न भागों में एक स्थान से दूसरे स्थान को, एक चुनौती से दूसरी चुनौती निपटने को चलते रहना पड़ता है। इस तथ्य ने के० रि० पु० बल को 'चलते रहो प्यारे' काव्यंग्यात्मक नाम सचमुच में दे दिया है।

आवास हेतु राहत पाने के लिये, के० रि० पू० बल ने एक लम्बी चौड़ी योजना बनाकर गृह मंत्रालय को भेजी है। इस बीच, कुछ उल्लेखनीय प्रगति हो चुकी है। केन्द्रीय सरकार ने चण्डीगढ़ के निकट पिंजोर में एक ग्रुप केन्द्र स्थापित करने की स्वीकृति दे दी है। इसमें चार बटालियन रह सकेंगी। 160 एकड़ भूमि इस हेतु प्राप्त हो चुकी है और शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू हो जायेगा। साथ ही, चण्डीगढ़ के निकट हालो माजरा में एक बटालियन और पुलिस उपमहानिरीक्षक के आवास के लिये, 24 एकड़ भूमि मिल गई है और निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है।

पालम (दिल्ली) पर इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास, 170 एकड़ भूमि प्राप्त करने का एक प्रस्ताव है, जहाँ विशेष ड्यूटी दल और दो आवाजाही बटालियनों के आवास की व्यवस्था है।

लखनऊ और भोपाल में दो और ग्रुप केन्द्रों के निर्माण का प्रस्ताव है।

लाडो सराय, अंधेरिया मोड़, और रबिन्द्र रंगशाला में, 3 बटालियनों के लिये स्थायी आवास कुछ बन भी चुका है।

एक-एक बटालियन के लिये चण्डीगढ़, वजीराबाद (दिल्ली), घरोली (नोएडा) और

महावीर नगर (दिल्ली) में भूमि प्राप्त कर ली गई है। जम्मू-कश्मीर राज्य में दो बटालियों को स्थाई रखने के लिये भूमि प्राप्त करने का प्रस्ताव है।

पंजाब में निम्नलिखित स्थानों पर बटालियों के स्थाई आवास के लिये भूमि अधिग्रहण करने का प्रस्ताव है :

जालंधर 50 एकड़

लुधियाना 24 एकड़

पटियाला 50 एकड़

अलीगढ़ में, के०रि०पु० बल के जवानों के लिये अर्द्ध स्थायी मकानों का निर्माण होगा, जहाँ उत्तर प्रदेश सरकार ने मुफ्त 86 एकड़ भूमि दे दी है। शिलांग और रांची में आवास-सुविधायें बढ़ा दी गई हैं।



ट्रांजिट अफसर मेस निर्माताओं को बधाई देते हुये महानिदेशक

दिल्ली में विशिष्ट महत्वपूर्ण जनों, दूतावासों और परमावश्यक संस्थानों की सुरक्षा कार्यों पर निरत के०रि०पु० बल के जवानों के लिये, 75 सुवाह्य लाने ले जाने वाले कुटीर बनाये गए हैं। इनके इलावा 90 और बनाए जाएंगे। अतिविशिष्ट महत्वपूर्ण व्यक्तियों के आवासों पर, 250 सन्तरी कक्ष बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है। अभी

तक उनके लिये इन स्थानों पर सिर ढकने को छतें नहीं थीं।

-एच. एस. सेठी.

41 बटालियन के लिए पक्के मकान

महानिदेशक, ने 8 जनवरी 1987 को 41 बटालियन के मुख्यालय अंधेरी मोड़ पर उन जवानों की बारिकों, मुख्य कार्यालय ब्लॉक और क्वार्टर गार्ड भवन का उद्घाटन किया, जिसका शिलान्यास श्री शिव मोहन सिंह, भूतपूर्व पुलिस महानिरीक्षक से० III ने किया था। इस योजना पर मूल्य 9,25,000 रु० हुआ।

उद्घाटन समारोह पर, महानिदेशक ने बताया कि जवानों की निर्वाह-स्थिति के सुधारने के यत्न जारी रहेंगे।

नई दिल्ली में ट्रान्जिट अफसर मेस

नई दिल्ली की रबिन्द्र रंगशाला में 20 दिसम्बर 1986 को श्री एस० डी० पाण्डेय, महानिदेशक ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक ट्रान्जिट अफसर मेस का उद्घाटन किया।

शान्तिरक्षिणी बटालियन की पायनियर कम्पनी के 34 जवानों ने एक मास के भीतर सुसज्जित आठ कमरे निर्मित किये।

मेस के बनने से, दिल्ली से गुजरते हुए के० रि० पु० बल के अधिकारी थोड़ी अवधि के लिये राजधानी में आराम से यहां ठहर सकेंगे। यह मेस 9 बटालियन के परिसर में है।

इस मेस के बनाने वाले जवानों और अधिकारियों को महानिदेशक ने बधाई दी।

आतंकवादी बन्दी

अमृतसर के भुल्लर गांव में नाकाबन्दी करते हुये 24 बटालियन के. रि. पु. बल के जवानों ने राजगेवन सिंह नामक आतंकवादी को बन्दी बनाया। उससे 12 बोर की एक पिस्तौल, 2 कारतूस और एक खाली कारतूस प्राप्त हुये।

अ-भा. पुलिस खेल

के० रि० पु० बल दौड़ कूद में फिर विजयी

ले०-एम० पी० नथैनियल

इन्हीं दिनों, मधुबन (करनाल) में आयोजित 36-वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों की मण्डली के होते हुये, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को दौड़कूद में निरन्तर नौवीं वर्ष चैम्पियनशिप टाफी पाना कठिन नहीं था। के० रि० पु० बल ने 264 अंक पाये, जबकि 186 अंकों पर सीमा सुरक्षा बल द्वितीय स्थान पर आया। केरल पुलिस (98 अंक) तृतीय रही।

इस चार दिवसीय प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के सब इन्स्पेक्टर सुरिन्दर सिंह ने सचमुच सब का ध्यान आकर्षित किये रखा। उसने तीन स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य पदक पाया। जबकि दो स्वर्ण और एक रजत पदक उसने व्यक्तिगत स्पर्धा में पाये, एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक रिले स्पर्धाओं में उसे मिले।

दूसरे दिन 200 मी० दौड़ को 21.9 से० में पूरा करने पर भी केरल के शाजीमोन से पिछड़ कर, सुरिन्दरसिंह ने रजत पदक पाया। शाजीमोन ने भी दौड़ को 21.9 से० में पूरा किया। अन्तिम दिन सुरिन्दरसिंह 100 मी. दौड़ को 11 से. में पूरा कर। सब से तेज धावक उभर कर आया। उसी दिन, 400 मी० दौड़ को भी 49.1 से० में पूराकर वह विजयी रहा; साथ में, 4X400 मी० रिले में भी के० रि० पु० बल के चौगड्डे को 3 मि० 18.3 से. में दौड़कर विजयी बनाने का श्रेय उसने पाया। जब कि 4X100 मी० रिले में केरल पुलिस (42.2 से०) प्रथम और सी० सु० बल (42.6 से.) द्वितीय रहा, सुरिन्दरसिंह के शानदार सहयोग से के० रि० पु० बल के चौगड्डे को कांस्य पदक मिला। सुरिन्दर सिंह प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ एथलीट घोषित हुआ।

पिछले वर्ष केन्या के प्रख्यात किपचोगे कीनों से भलीभांति प्रशिक्षण दिल्ली और नैरोबी में पाया हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय शम्सुद्दीन (के० रि० पु० बल) सरलतापूर्वक 5,000 मी० और 3,000 मी० की स्टीपल चेज दौड़ में विजेता रहा। 5,000 मी० दौड़ को उसने 14 मि० 34.0 से० में पूरा किया। उसके पीछे ईश्वरसिंह (सी० सु० बल) ने 14 मि. 37.1 से० और तत्पश्चात् एम. एम. अय्यन्ना (सी० सु० बल) ने 14 मि० 38.7 से० लिये। अन्तिम दिन, शम्सुद्दीन ने 3,000 मी० स्टीपल चेज दौड़ में सारे मार्ग आगे रह कर 8 मि० 58.4 से० में दूरी तय की, जबकि पिछले वर्ष का विजेता ईश्वरसिंह (सी० सु० बल) ने 9 मि० 04.6 से० और तदुपरान्त उसी की टीम का धावक स्वर्णदास ने 9 मि० 05.5 से० लिये। श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने, जो वहाँ उपस्थित थे, शम्सुद्दीन को हेड कांस्टेबल से सब इन्स्पेक्टर के पद पर उन्नति की तुरन्त घोषणा की।



रिले दौड़ का चौगुना (बाये से दाये) दलजीत सिंह, सुरिन्दर सिंह, गुरमेल सिंह और सुरेश कुमार

कष्टदायी मैराथान को अन्तर्राष्ट्रीय विद्याधर (सी० सु० बल) ने 2 घं० 24 मि० 30 से० में पूरा कर विजय पायी। पिछले रिकार्ड विजेता रसदेवसिंह (के० रि० पु० बल) 27 से० पीछे रह कर द्वितीय और उसी की टीम का धावक रामभगत (2 घं० 26 मि० 09 से०) तृतीय रहा।

के० रि० पु० बल के बलजीत सिंह ने पुनर्गणना पर पोलवाल्ट जीता। मांगेराम (सी० सु० बल) और मोहिन्दर सिंह (हरियाणा) के साथ उसने 4.10 मी० की ऊंचाई पार की।

दो रिकार्ड, जो नये बने, महिला सिपाहियों द्वारा स्थापित हुये। ऊँची कूद में, मध्यप्रदेश पुलिस की निशा जायसवाल ने अपने ही 1.40 मी० वाले कीर्तिमान को .5 मी० से सुधारा। बिहार की दोनों एम. पत्रा और सरोजिनी लकरा 1.40 मी० की ऊंचाई के आधार पर द्वितीय और तृतीय स्थान पाये।

दूसरा कीर्तिमान लम्बी कूद में एमिल्डा इक्का (बिहार) ने स्थापित किया। 4.72 मी० के पिछले रिकार्ड को मिटा कर उसने 5.11 मी. का कीर्तिमान बनाया। फलस्वरूप, कान्स्टेबल से सहायक उपनिरीक्षक के पद पर उसकी उन्नति हो गई। जबकि उषा विश्वकर्मा (मध्य प्रदेश) ने 4.61 मी० के आधार पर रजत पदक पाया तथा पिछले वर्ष की स्वर्णपदक विजेता अंजलि लकरा (बिहार) को 4.48 मी० के यत्न पर, कांस्य पदक पर सन्तोष करना पड़ा।

यद्यपि रमा शंकर (के० रि० पु० बल) न 68.80 मी० के पिछले रिकार्ड को भंग करते हुये, भाले को 70.18 मीटर दूर फेंका, किन्तु तकनीकी अधिकारियों से उसे इस

आधार पर स्वीकार नहीं किया कि वह नवीनतम अंतराष्ट्रीय विशेषताओं के अनुरूप नहीं था। यूसुफ खां (बिहार) और जोगिन्दर सिंह। (सी० सु० बल) को क्रमशः 68.20 मी० और 64.20 मी० की दूरियों के आधार पर द्वितीय तथा तृतीय स्थान मिले।

दौड़ कूदों से पहले वाले अन्य खेलों में, पंजाब पुलिस ने भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस को 2-1 से हरा कर, हॉकी चैम्पियनशिप और सी० सु० बल ने पंजाब पुलिस को (55-49) हरा कर, बास्केटबॉल चैम्पियनशिप जीती।

कबड्डी में, पंजाब पुलिस न हरियाणा पुलिस को और वालीबॉल में केरल पुलिस में सी० सु० बल को फाइनलों में हरा कर सिरमौर जीते। फुटबॉल फाइनल में, पंजाब पुलिस को सी० सु० बल ने बुरी तरह हराया।



के० रि० पु० बल की विजेता जिम्नास्टिक्स टीम

जिम्नास्टिक्स में, के० रि० पु० बल के बलराम शील ने फ्लोर एक्सरसाइजेज और होराइजन्टल बार में स्वर्ण पदक, वाल्टिंग हार्स में रजत पदक और पोमेल्ड हार्स तथा रोमन रिंग्स में कांस्य पदक पाये। 99.20 अंकों के अपने कुल योग पर, बलराम शील को सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट घोषित किया गया। के० रि० पु० बल ने टीम चैम्पियनशिप ट्रॉफी 567.68 अंक पाकर अपने पास रखी जबकि भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस (540.30 अंक) द्वितीय और सी० सु० बल (496.16 अंक) तृतीय रहा।

कुश्ती में, 51 अंकों के कुलयोग पर, सी० सु० बल ने चौम्पेयनाशेप टाफी अपने पास रखी। सी० सु० बल के राजेश कुमार (48 किलोग्राम तक), महावीर सिंह (82 किलोग्राम तक), सुभाष (90 किलोग्राम तक) और जयप्रकाश (100 किलोग्राम तक) ने स्वर्ण पदक जीते। सियोल एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता करतार सिंह (पंजाब) ने 100 किलोग्राम से ऊपर वाली श्रेणी में आसानी से प्रथम स्थान पाया।

अखिल भारतीय पुलिस खेलों में पहली बार खेली गई जूडो स्पर्धानों में के०रि०पू० बल 43.5 अंकों को पाकर, सर्वश्रेष्ठ रहा मोहन सिंह (50 किलोग्राम तक), राम सिंह (55 किलोग्राम तक), वेद प्रकाश (68



सुरिन्दर सिंह—सर्वश्रेष्ठ एथलिट

किलोग्राम तक), राधेश्याम (76 किलोग्राम तक), और रजनाथ यादव (खुलेभार) में स्वर्ण पदक विजेता रहे। 85 किलोग्राम से ऊपर वाली श्रेणी में, बन्नू सिंह को कांस्य

पदक पर सन्तोष करना पड़ा, जबकि भरत सिंह यादव (मध्यप्रदेश) ने स्वर्ण पदक तथा जगपाल सिंह (के० औ० सु० बल) ने रजत पदक जीता।

श्री एस. एम. एच. बर्नी, राज्यपाल, हरियाणा ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया, जबकि श्री बन्सी लाल, मुख्य मंत्री, हरियाणा ने पुरस्कार वितरित किये।

(मुख पृष्ठ छाया—डी० एन० तिवारी)

नासिर अली शतरंज में विजयी

मदुराई में श्री मापीलाई विनयनगर शतरंज द्वारा जनवरी 1987 में आयोजित 23 वीं अखिल भारतीय खुली शतरंज प्रतियोगिता में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एस. नासिर अली विजयी रहा।

8 अंकों में से, उसने 7 अंक पाये।

इस विजय के उपलक्ष्य में, उसे 1,000 रु० का नकद पुरस्कार मिला।

अन्तर्रंज दौड़ कूद

इन्हीं दिनों झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में चार दिवसीय अन्तर्रंज दौड़कूद प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज ने (168 अंक) फिर सिरमौर जीता, जबकि श्रीनगर रेंज (149 अंक) और मद्रास रेंज (122 अंक) क्रमशः द्वितीय और तृतीय रहीं।

चारों दिन एक-एक कीर्तिमान बनाने का नियम रहा। चक्का फेंक में रघुबीर सिंह बल ने, भालाफेंक में रमाशंकर ने, शाटपुट में कमलदीप ने तथा पोलवाल्ट में वलजीतसिंह ने नये रिकार्ड बनाये। रघुबीरसिंह बल को प्रतियोगिता का 'सर्वश्रेष्ठ एथलीट', घोषित किया गया।

एयर वायस मार्शल एच. एल. कपूर, उपराज्यपाल, दिल्ली ने पुरस्कार वितरित किये, जबकि इस प्रतियोगिता का उद्घाटन 'फ्लाईंग' सिख मिलखा सिंह ने किया था।

राष्ट्रीय खेल संस्थान में के० रि० पु० बल का डाक्टर

पटियाला के राष्ट्रीय खेल संस्थान में खेल औषधियों के डिप्लोमा के कोर्स में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के डॉक्टर सी. आर. के० मूर्ति भाग ले रहे हैं। देश में एक वर्ष का सबसे पहला यह कोर्स है।

इस से पहले, यह डॉक्टर नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में भारतीय खेल औषध एसोसियेशन द्वारा आयोजित 'खेल औषधों में आधुनिक प्रगति' की विचारगोष्ठी में भाग ले चुके हैं।

1987 के लिए खेल कार्यक्रम

1987 के लिये खेल कार्यक्रम घोषित हो चुके हैं। ग्रुप केन्द्र दिल्ली में 17 अप्रैल को अन्तर्रज क्रासकंटी दौड़ होगी, जब कि 5 से 16 जून तक रामपुर में पहली बार अन्तर्रज शूटिंग का आयोजन होगा।

अन्तर्रज बास्केट-बाल और वालीबॉल प्रतियोगितायें क्रमशः जुलाई और अगस्त में, ग्रुप केन्द्र बनतलाब और हैदराबाद में आयोजित होंगी।

अन्तर्रज तैराकी 10 से 14 मई तक गांधीनगर में होगी, जबकि दौड़कूद प्रतियोगिता की तिथियाँ और क्रीड़ा-स्थल, रेंज खेल अफसरों के सम्मेलन में निश्चय किया जायेगा।



मानव संसाधन मंत्री श्री पी० वी० नरसिम्हा राव से 50,000 और 75,000 रु० के चेक पाते हुए बन्नूसिंह (जूड) और खजानसिंह (तैराकी) । इन्हें गत जनवरी 25, 1987 को भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा दिल्ली में सम्मानित किया गया।

रेल-अधिकार

सरकारी कर्मचारियों के रेल-अधिकार इस प्रकार सुधारे गये हैं—

वेतन-विस्तार

2800 रु० और ऊपर

1400 रु० और ऊपर किन्तु 2800 से कम

1400 रु० से कम

यात्रा-अधिकार

ए.सी. 2-टायर/प्रथम श्रेणी।

ए.सी. कुर्सी कार/प्रथम श्रेणी।

द्वितीय श्रेणी स्लीपर।

स्थानांतरण (ट्रांसफर) अनुदान

एक मुश्त ट्रांसफर और पौकेंग भते के नियम नेम्र प्रकार से सरकार ने संशोधित किये हैं—

वेतन-विस्तार	एक मुस्तअनुदान	पैकिंगभत्ता
	(रुपये)	(रुपये)
2800 रु० और ऊपर	3000	1200
1900 रु० और ऊपर किन्तु 2800 रु० से कम	1500	900
1400 रु० और ऊपर किन्तु 1900 रु० से कम	1000	600
1100 रु० और ऊपर किन्तु 1400 रु० से कम	600	600
1100 रु० से कम	450	450

के० रि० पु० बल की वालीबॉल टीम विजेता

बेतुल में नवम्बर 1986 में आयोजित इन्दिरा गांधी स्वर्ण वालीबाल टूर्नामेण्ट में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की वालीबाल टीम ने सिरमौर जीता। फाइनल में, उसने भारतीय कोल माइन्स फील्ड को 15-9, 13-15, 15-8 और 15-9 से हराया।

उस टूर्नामेण्ट में भाग लेने वाली अन्य प्रमुख टीमों थीं—मध्य प्रदेश पुलिस, केन्द्रीय रेलवे, नागपुर और ई. एम. ई., भोपाल।

के० रि० पु० बल को विजयी बनाने का श्रेय स० इ० आगस्टीन जार्ज, स० इ० स्वतंत्र सिंह और ला० ना० धरमवीर सिंह को खास तौर पर जाता है।

रामभगत को दस हजार का पुरस्कार

इलाहाबाद में पिछले दिसम्बर में आयोजित अखिल भारतीय अर्द्ध मैराथान की खुली वार्षिक प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के इ० रामभगत और इ० रसदेवसिंह ने तृतीय और सातवें स्थान पाने पर क्रमशः 10,000 रु० और 2,500 रु० के नकद पुरस्कार पाये।

ये पुरस्कार श्री राजीव गांधी, प्रधान मंत्री, ने उन्हें प्रदान किये।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल तथा जे. एस. शर्मा।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के० रि० पु० बल, ब्लाक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खण्ड I अंक 7

मूल्य 1.60 रु०

[31 मार्च, 1987] [10 चेत्रा 1909]



त्रिपुरा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान गांव के निवासियों को प्राथमिक चिकित्सा देते हुए।



महानिदेशालय में हिन्दी कार्यशाला

महानिदेशालय के कर्मिकों को हिंदी में सरकारी कामकाज का अभ्यास कराने के लिए दिनांक 16.2.87 से 28.2.87 तक 10-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन महानिदेशक, के० रि० पु० बल, श्री एस० डी० पाण्डेय द्वारा किया गया जिसमें महानिदेशालय के सभी रैंक के अधिकारी व कार्मिक उपस्थित थे। इस आयोजन में राजभाषा विभाग के निदेशक डॉ. महेश चन्द्र गुप्त मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किए गए थे।

उपनिदेशक (प्रशासन) श्री सतीश कुमार सक्सेना ने बताया कि बल में कार्यशाला के आयोजन से अनुकूल प्रभाव पड़ा है और सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग की मात्रा बढ़ी है जिसकी संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भी प्रशंसा की गई है। हाल ही में समिति द्वारा निरीक्षण किए गए ग्रुप केन्द्र, के० रि० पु० बल पल्लिपुरम एवं भुवनेश्वर में हिन्दी प्रगति की सराहना की गई है।

उप निदेशक (प्रशासन) ने सूचित किया कि अगली कार्यशाला अधिकारियों के लिए आयोजित की जायेगी जिसका मुख्य उद्देश्य अधिकारी वर्ग में आत्मविश्वास पैदा करना है।

महानिदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण में इस बात पर जोर दिया कि हमें राजभाषा अधिनियम एवं नियमों की जानकारी अवश्य हासिल कर लेनी चाहिए। हम सरकारी कर्मचारी हैं अतः सरकार के आदेशों का पालन करना हमारा कर्तव्य है। यह छोटी बात है, किन्तु महत्वपूर्ण है। वास्तव में हम नियमों को जानने की कोशिश

नहीं करते। उन्होंने बताया कि वे भी राजभाषा के संबंधित नियमों से अनाभज्ञ थे किन्तु सी० आर० पी० में आने पर उन्होंने इसकी जानकारी हासिल की। अतः राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी नियमों/अनुदेशों के प्रति, बल के सभी कार्मिकों का ध्यान दिलाया जाए।

अन्त में उन्होंने राजभाषा निदेशक डॉ० गुप्त को कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए धन्यवाद दिया। डॉ० महेशचन्द्र गुप्त, निदेशक, राजभाषा ने सभी से अपील की कि सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें।

॥ सूक्तिसुधा ॥

शान्त चित से बहस कीजिये, क्योंकि गर्मी खाने से गलती, अपराध बन जाती है और सच्चाई, अभद्रता।

हर्बर्ट ।

जो अपराध को रोकने की सामर्थ्य रखता हुआ भी नहीं रोकता, वह अपराध को बढ़ावा देता है।

सेनेका ।

दरिद्र कौन है ? जो अत्यन्त तृष्णावान है; सम्पन्न कौन है, जिस पर सन्तोष है।

शंकराचार्य।



जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री फारूख अब्दुल्ला, 76 बटालियन के क्वार्टर गार्ड का निरीक्षण करते हुए। के० रि० पु० बल के 47 वीं वार्षिकोत्सव पर उन्होंने इस बटालियन को एक लाख रू० का भेंट दिया।

11 के० रि० पु० कर्मियों को शौर्यता पदक



नारायण सिंह



सरवन सिंह



बच्चन लाल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 11 कार्मिकों को राष्ट्रपति द्वारा बहादुरी का पदक

प्रदान किया गया जिनमें से 4 को बहादुरी के लिए राष्ट्रपाते के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया और शेष को उनकी बहादुरी के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया।

जिन्हें बहादुरी के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया, वे हैं - 7वीं बटालियन के हेड कांस्टेबल नन्दन सिंह (मरणोपरान्त), 14 वीं बटा० के उपनिरीक्षक नारायण सिंह, हेड कांस्टेबल सरवन सिंह और कांस्टेबल बचन लाल ।

11 फरवरी 1986 को हवलदार नन्दनसिंह भारतीय स्टेट बैंक के प्रवेश द्वार पर निगरानी ड्यूटी पर थे जबकि अवैध घोषित नागालैंड नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल के 11 उग्रवादियों द्वारा उन पर हमला किया गया। तीन उग्रवादियों ने एन. सी. ओ. पर नजदीक से फायर किया। यद्यपि नन्दन सिंह गोलियों से छलनी हो गए थे तथापि आक्रमणकारियों से जूझते रहे और मर कर धरती पर गिर जाने तक उनको बैंक में प्रवेश करने से उन्होंने रोका।

14वीं बटालियन के अन्य तीन व्यक्तियों को 22 फरवरी 1985 को नागालैंड में दीमापुर-कोहिमा सड़क के नजदीक भूमिगत तत्वों को पकड़ने में उत्कृष्ट बहादुरी के प्रदर्शन करने के सम्मान में मैडल प्रदान किया गया।

यह सूचना मिलने पर कि विद्रोही नागाओं ने अपने क्षेत्र में कैम्प लगाया है, पूर्वी और पश्चिमी दीमापुर के थाना अधिकारी, के० रि० पु० बल की एक टुकड़ी के साथ मध्य रात्रि को उस स्थान की ओर गए। उप-निरीक्षक नारायण सिंह के उस स्थान के चारों तरफ अपनी टुकड़ी तैनात करने के बाद एक हवलदार ने झोपड़ी का दरवाजा खटखटाया। जवाब में विद्रोहियों ने झोपड़ी के अन्दर से दो ग्रैनेड फेंके जिसके परिणामस्वरूप हवलदार की मृत्यु हो गई। विद्रोहियों ने तब भागने की चेष्टा की मगर उप-निरीक्षक नारायण सिंह ने उनके प्रयत्न को विफल कर दिया। हवलदार सरवनसिंह और का० बचन लाल ने प्रभावी ढंग से गोली मारकर घटनास्थल पर ही उन तीनों को मार गिराया। उस झोपड़ी से एक महिला को गिरफ्तार किया गया। एक पिस्तौल, कुछ कारतूस और नागालैंड तथा मणिपुर में भूमिगत तत्वों की योजना लिखी व्यक्तिगत डायरी बरामद की गई।

जिनको बहादुरी के लिए पुलिस पद प्रदान किया गया, वे हैं :- 40वीं बटा० के हवलदार उधो दास (मरणोपरान्त) और 7वीं बटालियन के कांस्टेबल बी. एल. ननैया (मरणोपरान्त), नायक शेरसिंह, का० जय दीपसिंह, उपनिरीक्षक पातीराम, का० बिरंची चौधरी और का० बिष्णु कुमार।

11 फरवरी 1986 को सेनापति में भारतीय स्टेट बैंक के सामने का० ननैया संतरी ड्यूटी पर था जबकि उग्रवादियों द्वारा उस पर गोली चलाई गई। अपने शरीर में गोली की चोट की परवाह किए बगैर वह बैंक के गेट की ओर दौड़ा और भागते हुए उग्रवादियों पर गोली चलाई। एक दूसरे उग्रवादी द्वारा दो और गोलियां चलाई गईं जिसके परिणाम स्वरूप कांस्टेबल मूर्छित हो गया। थोड़ी देर बाद उसकी मृत्यु हो गयी।



ऊपर (बायें से)—उधो दास, पाति राम, बिरंची चौधरी और विष्णु कुमार।
नीचे (बायें से)—नन्दन सिंह, बी०एल० नानैया, शेर सिंह और जयदीप सिंह।

नायक शेरसिंह और कांस्टेबल जयदीप सिंह बैंक के स्टांगरूम के नजदीक गार्ड ड्यूटी पर खड़े थे। उन्होंने उग्रवादियों पर गोली चलाकर उन्हें भागने पर मजबूर किया। गोली बारी के दौरान उस नायक के जबड़े पर गोली की गम्भीर चोट आई।

तारीख 24 मई, 1985 को नागालैंड में मेइजीफीमा और फेरिमा के बीच के० रि० पु० बल की कानवाई पर नागा विद्रोहियों द्वारा लगाई गई घात में लड़ते हुए हवलदार उधो दास ने अपनी जान गवाई। अपने जीवन को गम्भीर जोखिम में डालकर अनुकूल स्थान से प्रभावी फायर किया जबकि वे विभिन्न दिशाओं से उग्रवादियों से घिरे हुए थे। इस कार्यवाई में गोली लगने के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया।

उप-निरीक्षक पाति राम, का० बिरंची चौधरी और विष्णु कुमार को इसी दुर्घटना में उनकी बहादुरी के लिए पदक प्रदान किए गए। उनके प्रभावी फायर के फलस्वरूप उग्रवादी धुन्ध की आड़ में निकट के जंगलों में भाग गए।

के० रि० पु० बल के निरीक्षक मारे गए

तारीख 1 मार्च 1987 को अमृतसर में के० रि० पु० बल की छट्टीबिंड चौकी पर आतंकवादियों ने गोलीबारी की, जिसमें तीसरी बटालियन, के० रि० पु० बल “सी” कम्पनी के निरीक्षक जगत नारायण सिंह सांघातिक रूप से घायल हो गये थे।



उक्त निरीक्षक लगभग शाम 8.30 बजे जब चौकी के जवानों को कुछ बता रहे थे तभी आतंकवादियों ने तीन दिशाओं से चौकी पर फायर किया। एस० जी० टी० बी० अस्पताल में चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

आतंकवादियों की अन्धाधुन्ध फायरिंग के फलस्वरूप 3 अन्य नागरिकों की मृत्यु हो गई तथा दस घायल हुए।



‘ए’ कम्पनी, 43 बटालियन के जवान जिन्होंने तीन आतंकवादियों को पकड़ा।

के० रि० पु० द्वारा तीन आतंकवादी गिरफ्तार

21 फरवरी 1987 को होशियारपुर में टंडा के नजदीक मियानी गांव में आतंकवादियों के एक गिरोह के साथ हुई मुठभेड़ में 43 बटालियन की “ए” कम्पनी के जवानों ने तीन आतंकवादियों को पकड़ा। उनके कब्जे से 2 देशी पिस्तौल और गोली-बारूद बरामद किए गए।

आतंकवादियों के विरुद्ध के० रि० पु० बल का अभियान

इस वर्ष पंजाब में फरवरी के दौरान के०रि०पु०बल और आतंकवादीयों के बीच हुए विभिन्न मुठभेड़ों में दस आतंकवादी मारे गये और एक घायल हुआ तथा 266 संदिग्ध आतंकवादी गिरफ्तार किए गए।

माह के दौरान 29 हथियार और 129 विविध गोला बारूद बरामद किए गए।

नैशनल जिम्नास्टिक्स में बलरामशील सर्वोत्तम

इस वर्ष मार्च में कटक में आयोजित 29-वीं सीनियर जिम्नास्टिक चैम्पियनशिप में के०रि०पु० बल के निरीक्षक बलराम शील को सर्वोत्कृष्ट जिम्नाष्ट निर्णित किया गया। उड़ीसा के प्रतिनिधित्व में उन्होंने कुल 96 अंक दिलाए।

के रि०पु० बल द्वारा राइफल बरामद

दार्जिलिंग में निरत के०रि०पु० बल ने 16 जनवरी 1987 को गोरखा आतंकवादियों (जी० एन० एल० एफ०) द्वारा दार्जिलिंग के जिला मजिस्ट्रेट, रेंज पुलिस उप-महानिरीक्षक तथा वरिष्ठ पुलिसाधीक्षक पर लगाइ घात को विफल कर दिया। 18 जनवरी 1987 को, एक दूसरी मुठभेड़ में, इस बल ने 46 राउन्डों के साथ, एक एस० एल० आर० बरामद की जिन्हें दो दिन पहले सीमा सुरक्षा बल के एक जवान से आतंकवादी छीन ले गये थे।

गुणों का ही सदैव सम्मान होता है, गुणी के वंश का नहीं, लोग वासुदेव (कृष्ण) की वन्दना करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नहीं।

चाणक्य।

कन्वर्शन रिएक्शन (परिवर्तन प्रत्रिया) का रोगी

2. सिगनल बटालियन, के० रि० पु० बल के एक 32-वर्षीय नायक आपरेटर को 2-बेस अस्पताल, हैदराबाद में बायीं और पक्षाघात और वाणी रुद्धता के साथ बायें शरीर

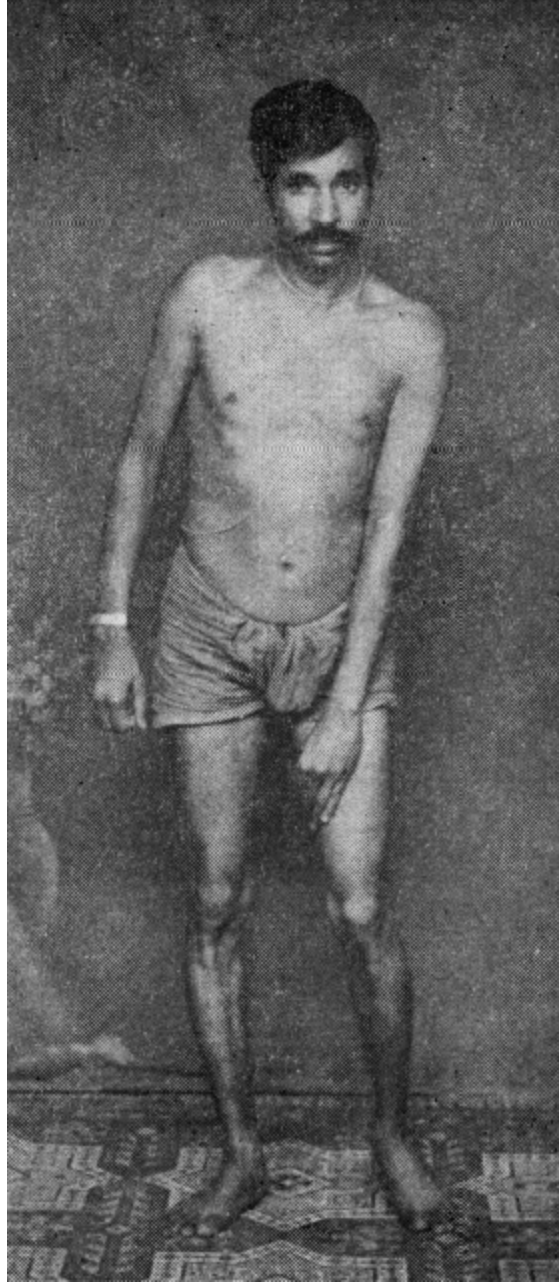
में दुबेलता के कारण भर्ती किया गया। रोगी बड़ा लंगड़ा कर चलता था; और अन्य लक्षणों के साथ, बायें कान से बिल्कुल नहीं सुनता था तथा बायीं आँख से कम देख पाता था। ये शिकायतें उसे 7 मास से थीं।

रोगी का इलाज जयपुर और बैंगलूर के कई अस्पतालों में किया गया; परन्तु कोई सुधार नहीं हुआ। तब 2-बेस अस्पताल के मनोरोग केन्द्र में उसकी चिकित्सा की गई और अब वह पूर्णतया नीरोग है।

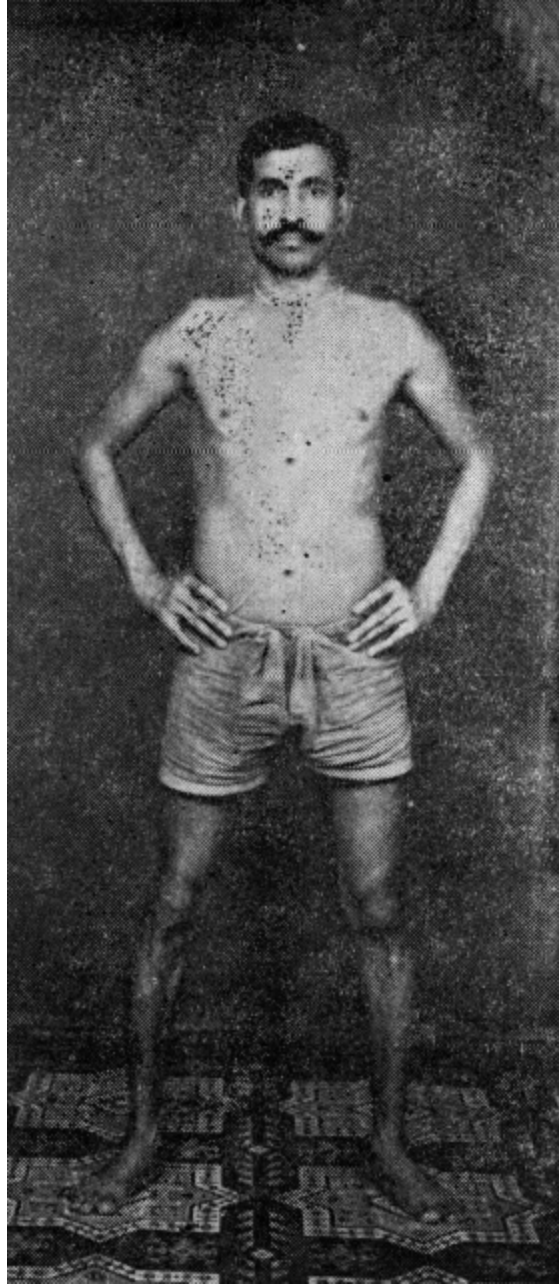
यह उल्लेखनीय है कि कन्वर्शन रिएक्शन एक मानसिक रोग है, जिससे पूरा छुटकारा, सच्चे निदान और चिकित्सा होने पर मिल सकता है।

सकलानन्द का स्रोत हमारे अन्दर है, हमें उसको केवल खोजना, जानना और अनुभव करना है।

—स्वामी रामदेव



इलाज से पहले



इलाज के बाद



62 बटालियन में परिवार नियोजन आपरेशन ।

39 बटालियन में परिवार कल्याण शिविर

11 मार्च, 1987 को खजुरी खास, नई दिल्ली क्षेत्र में स्थित 39 बटालियन, के० रि० पु० बल में एक परिवार कल्याण शिविर का आयोजन किया गया था।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल के चिकित्सक दल द्वारा बटालियन के आठ कर्मिकों ने परिवार नियोजन का आपरेशन कराया।

62 बटालियन, के० रि० पु० बल ने 27 फरवरी, 1987 को रविन्द्र रंगशाला में एक परिवार नियोजन शिविर आयोजित किया। यह भी लोकनायक जय प्रकाश नारायण अस्पताल, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।

क्रमशः 11 जवान और 3 महिलाओं ने परिवार नियोजन के लिए आपरेशन कराया।

भारतीय खिलाड़ियों को विश्व स्तर पर कैसे लाया जा

सकता है

ले०-स.उ.नि. (लि०) किशनसिंह राठौड़

प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह गांव का हो या शहर का, देश का हो या विदेश का, बच्चा हो या बूढ़ा; खेल के प्रति हमेशा से आकर्षित होता आया है। सिन्धु घाटी की सभ्यता तक से प्राप्त अवशेषों के अनुसार, उस समय भी खेलों का प्रचलन था।

भारत में खिलाड़ियों की कमी नहीं है, परन्तु उन्हें उच्च और गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सहस्रों वर्ष भारतीय गुलामी की जिन्दगी जीते रहे। उसके बाद, ईस्ट इण्डिया कम्पनी (इंग्लैंड) का प्रभुत्व हो गया। उसने खेलों की तरफ, कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। स्वतंत्रता के बाद, लोकतांत्रिक सरकार बनी। तब से, खेलों को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन इसी देश में हुआ एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में, भारतीय दल भेजे जाने लगे।

हमारी नाकामयाबी के कारण—हमारे देश में ना तो खिलाड़ियों को उचित प्रशिक्षण मिल पाता है और ना ही उन्हें उचित प्रशिक्षण देने को सुविधाएँ उपलब्ध हैं। गलत नीतियों से, अच्छे खिलाड़ियों का चयन नहीं हो पाता है और ना ही खिलाड़ियों को उचित सुविधाएँ प्राप्त हो पाती हैं। बेहतर खिलाड़ियों का चयन न होने पर, उनमें निराशा उत्पन्न होती है। अन्तर्राष्ट्रीय खेल परिषद के बदलते नियमों के अनुसार, भारतीय खिलाड़ी अपने आपको नहीं ढाल पाते हैं। अतएव, भारतीय खिलाड़ी बहुत अधिक सफलता नहीं पा सके हैं।

विश्व स्तर पर लाने के प्रयत्न—भारतीय खिलाड़ियों को विश्व स्तर पर लाने के लिये कितने ही यत्न आवश्यक हैं, जिनमें प्रमुख ये हैं—

1. योग्य प्रशिक्षक—योग्य प्रशिक्षकों के अभाव में भारतीय खिलाड़ियों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है। पी. टी. उषा की सफलता का श्रेय उसके प्रशिक्षक को भी जाता है। इसी प्रकार, खजान सिंह को भारत का सर्वोत्तम तैराक बनाने में, आस्ट्रेलिया के ऐं० रि० आर्नोल्ड का बहुत हाथ है।

2. नीतियों में परिवर्तन—हमारे राष्ट्र में अधिकतर अधिकारियों को खेलों में कोई रुचि नहीं रखते हुये भी, नियुक्त किया जाता है। खेल अधिकारी ऐसे व्यक्तियों को बनाया जाना चाहिये, जो खेलों में सचमुच रुचि रखते हों।

3. खेल संगठनों का एकीकरण—खेल संगठनों का एकीकरण कर, एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का निर्माण करना चाहिये, जिसके द्वारा हमारे खिलाड़ी विदेशों में भी प्रशिक्षण पा सकें एवं विदेशों से खिलाड़ी यहां बुलाना चाहिये, ताकि उनकी अच्छाइयाँ सीख कर हमारे खिलाड़ी विश्वस्तर के बन सकें।

4. नई तकनीकें—खेलों में नई तकनीकें अपनानी चाहिये। इस सम्बन्ध में, स्वर्ण पदक विजेता करतार सिंह का मत है—‘हमें नई तकनीकें अपनानी होंगी। अन्य देशों ने जहां अत्यधिक प्रगति की है, वहीं हम जहाँ के तहाँ पड़े हैं। कोरिया में प्रत्येक

स्टेडियम वातानुकूलित है, जो कुश्ती, मुक्केबाजी और जूडो के लिये आवश्यक है।”

अतः हमारे देश में भी, नयी तकनीकों का उपयोग करते हुये, आधुनिक स्टेडियम का निर्माण करना चाहिये।

5. चयन पद्धति में सुधार—हमारे देश में चयन पद्धति गलत है। दलजीत का कहना है—“दक्षिण कोरिया ने अपनी टीम की घोषणा चार वर्ष पूर्व ही कर दी थी और तभी से मुक्केबाजों को प्रशिक्षण दिया जाने लगा था। लेकिन भारत में आखिरी समय तक यह पता नहीं था कि कौन सियोल जा सकेगा और प्रशिक्षण भी एक-दो महीने का मिल सका।”

अतएव टीम का चयन जल्दी करके खिलाड़ियों को अच्छे से अच्छा और ज्यादा से ज्यादा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

6. शारीरिक क्षमता में वृद्धि—शारीरिक क्षमता में विकास हेतु, उन्हें सन्तुलित आहार मिलना परमावश्यक है और उसकी पूरी-पूरी व्यवस्था करनी चाहिये। साथ ही, समय-समय पर खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिये, जिससे शारीरिक क्षमता बनी रहे।

7. अन्तर्राष्ट्रीय खेल नियमावलि के अनुरूप ढालना—भारतीय खिलाड़ियों को चाहिये कि अन्तर्राष्ट्रीय नियमों में परिवर्तन होने पर, उसी के अनुरूप अपने आप को ढाल लें। जैसे हॉकी में प्लास्टिक गेंद से खेलने को अनुमति मिल गयी है; कृत्रिम घास के लान पर खेलने लगे हैं। अतः भारतीय खिलाड़ियों को इन परिवर्तनों के अनुसार सुविधायें उपलब्ध करानी चाहिये, जिससे वे विश्व स्तर पर सफलता पा सकें।

8. खिलाड़ियों को प्रोत्साहन—अच्छे खिलाड़ियों को समय-समय पर उनके प्रदर्शनों के अनुसार सम्मानित करना चाहिये, जिससे उनके मनोबल में वृद्धि हो और वे विश्व स्तर पर सफलता पाने का प्रयत्न करें।

9. दृढ़ निश्चय—खिलाड़ियों में भी निश्चय की भावना होनी चाहिये कि वे जिस प्रतियोगिता में भाग लेंगे, उसमें सफल होकर रहेंगे। इसके लिये, हमारे खिलाड़ियों को, महिला खिलाड़ी पी. टी. उषा से प्रेरणा लेनी चाहिए। महिला होते हुये भी, उसने दसवें एशियाई खेलों में, चार स्वर्ण और दो रजत भारत को दिलाये। जब उषा ओलिम्पिक खेलों में एक सेकण्ड के सौवें भाग से पीछे रहने पर पदक से वंचित रह गई थी, तब उसने दृढ़ निश्चय किया था कि उसे दसवें एशियाड में छह स्वर्ण पदक पाने हैं।

अतः हमें सामूहिक रूप से, भारतीय खिलाड़ियों को सब सुविधायें उपलब्ध करानी चाहिये, जिससे भारत में विश्व स्तर के खिलाड़ी तैयार हो सकें।

दौड़-कूद के क्षितिज पर नयी तारिका

देश के दौड़कूद के क्षितिज में एक नई तारिका उदित हो रही है। यह है केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला बटालियन के लान्स नायक के पद पर निरत दिल्ली की 20-वर्षीया सीता केशव । 21 दिसम्बर 1986 को आयोजित रथ मॅरार्थन में, इसने कांस्य पदक पाया । इस से पूर्व, अप्रैल 1986 में नई दिल्ली में आयोजित ओपन मिडडे क्रासकंटी प्रतियोगिता में, इसने रजत पदक पाया था। यह ध्यान में रखते हुये कि आशा अग्रवाल जैसी प्रसिद्ध एथलीटों से यह प्रतिस्पर्द्धा थी, इसका यह प्रदर्शन कोई निम्न कोटि का नहीं था। रथ मॅरार्थन में प्राप्त तीसरे स्थान में उसे नकद पुरस्कार ही नहीं दिलाया, बल्कि के० रि० पु० बल में उसे कान्स्टेबल से लांस नायक के पद पर उन्नति भी प्राप्त कराई।

अपने बचपन और स्कूल में, दिल्ली की इस किशोरी ने दौड़ों में अदभुत प्रतिभा दर्शायी थी। 1986 में, दिल्ली राज्य दौड़ों में 3000 मी० की प्रतिस्पर्द्धा में स्वर्णपदक और 1,500 मी० की प्रतियोगिता में कांस्य पदक पाया। सचमुच में खेल में रुचि के लिये पढ़ने लिखने में लापरवाही दिखाने का यह एक अपने ही किस्म का दृष्टान्त है। के०रि०पु० बल में भर्ती होने की प्रबल इच्छा के कारण, यह दसवीं कक्षा उत्तीर्ण नहीं कर पायी, क्योंकि इसने सोचा कि महिला बटालियन में भर्ती होकर, अपनी प्रथम रुचि-खेल-की प्रगति के लिए, इसका भविष्य अधिक उज्ज्वल, बनेगा।

दुबली पतली (जैसे देश के सभी लम्बी दूरी के धावक होते हैं) सीता के० रि० पु० बल के झड़ौदा कलां स्टेडियम के पथ पर घंटों दौड़ कर, पूरा प्रशिक्षण स्वयं कर रही है।

इसके कथनानुसार— “मुझे उत्तम आहार देने में बटालियन के विशेष ध्यान देने पर भी, मैं अपना सारा वेतन दौड़ में खोयी हुई ऊर्जा को पूरा करने के लिये खर्च कर देती हूँ। मेरे माता-पिता मेरे वेतन का एक पैसा नहीं लेते, वे तो दौड़ कूद में जगमगाता हुआ मेरा नाम चाहते हैं।”



बड़े परिवार और आर्थिक स्थिति भी उसकी कोई खास अच्छी नहीं होते हुये, परिवार को धन की आवश्यकता नहीं है; पर वह सीता को प्यार करता है और धन की तुलना में खेल को अधिक तरजीह देता है। रथ मैराथन के समय, तीनों भाइयों और दोनों बहनों के सहित, सारा परिवार उसको स्वर्णपदक पाते हुए देखने को आया। स्वयं दौड़ तक में, उसके दो भाई साइकिल पर पीछे चलते रहे और मार्ग में सन्तरे उसे देते रहे, यद्यपि उनकी वहाँ कोई कमी नहीं थी।

राष्ट्रीय खेल संस्थान में प्रशिक्षित इसके प्रशिक्षक श्री सुरेश सिंह, पुलिस उपार्थीक्षक, के०रि०पु० बल को इस से बड़ी आशाएँ हैं। 'उसके अन्दर प्रबल आत्म शक्ति है और लम्बी दूरी की दौड़ के क्षेत्र में शिखरपर पहुँचने के लिये यह दृढ़ संकल्प है। यह अभी रचनात्मक अवस्था में है तथा आयु इसके पक्ष में है। इसे मैराथान, अर्द्ध मैराथान और 10,000 मी० दौड़ के लिये प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यहाँ शीघ्र ही यह अपना स्थान बना लेगी।'

-एच० एस० सेठी

के. रि. पु. बल ने नेहरू हाकी कप जीता

1 मार्च 1987 को रामपुर में खेले गए अंतिम मैच में इंडियन एयरलाइंस के शक्तिशाली टीम को 1 गोल से हराकर, के. रि. पु. बल ने नेहरू स्मारक हाकी कप जीत लिया।

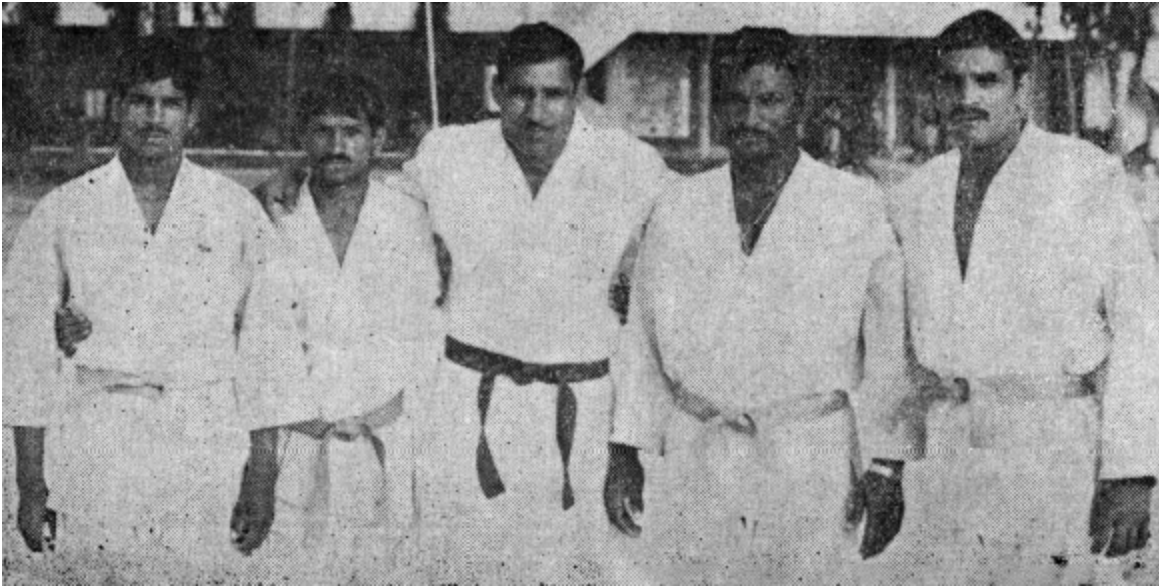
खेल शुरू होने के प्रथम चरण के 7 मिनट के अन्दर के. रि. पु. बल के जवानों ने

शानदार गोल किया।

खेल के दूसरे चरण के 31वें मिनट में के. रि. पु. बल के लेफ्ट आउट खिलाड़ी देवेन्द्र पाल सिंह द्वारा दिए गए सुन्दर पास पर राइट आउट कर्नैल सिंह द्वारा दूसरा गोल करके बढ़त हासिल की।

खेल के अन्तिम क्षणों में एयर लाइन्स को जो एक गोल हासिल हुआ वह जफर इकबाल द्वारा किया गया था।

इन्डियन एयर लाइन्स के पास पिछले दो वर्षों से यह कप था।



के रि० पु० बल के जडो खिलाड़ी जिन्होंने अ-भा पुलिस खेलों में चैम्पियनशिप ट्राफी जीती

भारत माता के हम

[रचयिता—का० श्याम सुन्दर, 20 वटालयन]

भारत माता के सपूत हम, यही हमारा नाता है।
भूल सभी रिश्ते-नातों को, हर प्रहरी बँध जाता है।
खाई जो माँ की कसमें तो, कुछ करके दिखलाना है।
कर्तव्यों के आंचल से फिर, मुंह ढक कर सो जाना है।
इस निद्रा के अनुपम सुख को, के०रि०पु० बल ही पाता है।
भारत माता के सपूत हम, यही हमारा नाता है ॥1॥

सचमुच सपूत है के० रि० पु० बल, हर संकट जिसने टाला।
 हंस कर कुर्बानी देने में, हर प्रहरी है मतवाला ॥
 यह भाव अमिट ही सब जन में, गौरव सदा दिलाता है।
 भारत माता के सपूत हम, यही हमारा नाता है । 2।
 हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-इसाई, हर भारत वासी अपना ।
 भारत माँ के बंटवारे का, केवल है झूठा सपना।
 भारत माँ के सुत जो द्रोही, उन पर रोना आता है।
 भारत माता के सपूत हम, यही हमारा नाता है । 3।
 बैर भाव अज्ञान मिटा कर, शान्ति तथा सुख लाना है।
 उसके हेतु खून तक हमको, निश्चय सदा बहाना है।
 'शान्ति दूत' यह 'संकट मोचन', के०रि०पु० बल कहलाता है।
 भारत माता के सपूत हम, यही हमारा नाता है । 4।

त्रिपुरा में बचाव कार्य

त्रिपुरा में यात्रियों को ले जा रही एक बस 5 फरवरी 1987 की सांयकाल कंचनपुर के नजदीक जब एक खाई में गिरी तो उस रास्ते से जा रहे 70 बटालियन के, के०रि०पु० बल के जवानों ने यात्रियों को बचा लिया।

उन्होंने दो यात्रियों को जो बस के ढांचे के नीचे बुरी तरह से फसे थे, बड़ी कठिनाई से बाहर निकाल कर उनके जीवन की रक्षा की।

सभी दुर्घटनाग्रस्त लोगों को के०रि०पु० बल के जवानों द्वारा तत्काल सिविल अस्पताल में पहुंचाया गया।

63 बटालियन सर्वश्रेष्ठ

इस वर्ष चंडीगढ़ में गणतंत्र दिवस समारोह में 63 बटालियन, के.रि.पु. बल की एक टुकड़ी ने हिस्सा लिया।

निरीक्षक टी. पी. प्रभाकरन के नेतृत्व वाली इस टुकड़ी को सर्वोत्तम टुकड़ी मानी गई।

यह भी खूब रही

यात्री—तुम्हारे खेत से स्टेशन तक जाने में कितना समय लगेगा?

किसान—यह आपकी चाल पर निर्भर करेगा। यदि जल्दी पहुंचना है, तब मैं

अपना कुत्ता आपके पोछे लगाये देता हूँ।

स्वास्थ्य अध्यापिका—मुन्नी, गले के, बारे में बताओ।

मुन्नी—जो पदार्थ सड़ गल जाते हैं, वे गले कहलाते हैं।

मोटा रोगी—धत् तेरे की, पाँच मंजिल से भी कूदने पर भी मैं नहीं मरा।

नर्स—मरते या मार लेते। हजरत, पूरे पाँच लोग मर गये; जिन पर आप धड़ाम से आ गिरे।

के० रि० पु० बल के कर्मचारी की ईमानदारी



भोपाल स्टेशन पर 5 मई 1986 को, उतरते समय किसी महिला का आभूषणों आदि से भरा सूटकेस खो गया। ग्रुप केंद्र, के० रि० पु० बल, नीमच के सब इन्स्पेक्टर (लिपिक) के० पी० प्रभाकरन, जो वहाँ यात्रा कर रहा था, की दृष्टि उस पर पड़ी। एक मजिस्ट्रेट के सामने उसने सब चीजें गिनवा और मूल्यांकित करवा कर न्यायिक सुरक्षा में उसने सूटकेस जमा करा दिया। फिर उस महिलायात्री का पता भरसक यत्न करके लगा लिया और सूटकेस का उसे सूचना दिया।

महानिदेशक, के० रि० पु० बल को लिखे अपने पत्र में, उस महिला के श्वसुर ने इस बल की उच्च परम्पराओं तथा प्रभाकरन की कर्तव्य परायणता और ईमानदारी की प्रशंसा की है।

पहेलियाँ

[प्रस्तोता-दफ्तरी गणेश प्रसाद, ग्रुपकेंद्र, बनतलाब]

एक नारि का रंग दूधिया,
जंगल से घर आई।
बड़े बेदर्री दुनिया वाले,
उसकी करें धुनाई ॥

एक तार पर खूब नचाये।
गले हरेक फिर उसे लगाये ॥ 1 ॥

एक नारी है गोरी-गोरी,
ताल - तलैया दौड़ी।
पीठ से ऊँची, पेट में घाव।
दो कौड़ी का, नाम रखाव ॥ 2 ॥

दो लाठी आप में लड़-लड़।
पट-दीवार गिरा नीचे कर॥
उसका फिर वे वस्त्र बनायें।
शर्दी से जन-जन को बचायें ॥ 3 ॥
उत्तर :— 1. कपास 2. कौड़ी 3. ऊन बुनने की सलाइयाँ

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल तथा जे. एस. शर्मा।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ.
काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खण्ड I अंक I

मूल्य 1.60 ₹०

[31 मई, 1987] [10 ज्येष्ठ 1909]



88 महिला के० रि० पु० बल के अधिकारियों से हाथ मिलाते हुए श्री राजीव गांधी

दो कुख्यात डाकू मारे गए

बिहार के रोहतास जिले में दिनांक 12 फरवरी, 1987 को सिकरी गाँव के नजदीक के० रि० पु० बल की टुकड़ी और डाकुओं के गैंग के बीच भारी गोला-बारी होने के बाद दो डाकू मारे गए और 9 हथियार बरामद हुए।



होशियार सिंह

के० रि० पु० बल की 36वीं बटालियन की “ई” कम्पनी की टुकड़ी ने सूचना पाते ही उस स्थान को तुरन्त प्रस्थान कर दिया जहाँ सिकरी सिकर-वार गाँव से 2 कि०मी० दूर जंगल में राम वचन यादव का एक डाकू गैंग जंगल में पड़ाव डाले हुए था। के० रि० पु० बल के जवान उनके छिपने के स्थान से 1500 गज की दूरी पर ही थे कि उन्होंने भारी गोलाबारी शुरू कर दी। के० रि० पु० बल की टुकड़ी ने भी बचाव में गोली चलाई तथा दो घन्टे तक दोनों तरफ से गोली बारी होती रही। डाकुओं ने चूँकि एक गड्ढे में पोजीशन ली हुई थी तथा एक शिलाखंड के पीछे से गोली बारी कर रहे थे, अतः उन पर के० रि० पु० बल की फायरिंग का कोई असर नहीं हो रहा था। दोनों पार्टियों के बीच में ऊबड़-खाबड़ धरातल होने के कारण भी फायरिंग का कोई असर नहीं हो पा रहा था।

जैसे ही झुटपुटा होना शुरू हुआ अंधेरे का फायदा उठाकर उनके बच भाग निकलने का उस समय अन्देशा हो गया था। इसी लिए कांस्टेबल होशियार सिंह एक सूखे नाले में रेंगते हुए किसी प्रकार डाकुओं के ठिकाने के नजदीक पहुंच गया। उसने डाकुओं के ऊपर गोलियां दागीं परन्तु डाकुओं ने आत्मसमर्पण नहीं किया। अपनी पोजीशन से बाहर आकर कांस्टेबल होशियार सिंह ने डाकुओं पर हमला बोल दिया जिससे वे भाग खड़े हुए तथा अपने पीछे मारे गए एक साथी और हथियार छोड़ गए। अपनी जान की परवाह न करते हुए कांस्टेबल होशियार सिंह ने के० रि० पु० बल की टुकड़ी के अन्य साथियों के साथ डाकुओं का पीछा किया। परिणामस्वरूप उनमें से एक डाकू को मार गिराया। दोनों मारे गए डाकुओं की बाद में सारदानन्द यादव और

मुखलाल यादव के रूप में शिनाख्त कर ली गई।

अन्य दूसरे 10 डाकू अंधेरे की आड़ में भाग निकलने में सफल हो गए। डाकूओं द्वारा छोड़े गए नौ हथियार भी मुठभेड़ के स्थान से बरामद कर लिए गए।

मुठभेड़ में भाग लेने वाले के० रि० पु० बल के सभी 12 जवानों में से प्रत्येक को पुलिस उप महानिरीक्षक द्वारा चार चार सौ रुपये इनाम के रूप में दिए गए।

तीन जी. एन. एल. एफ. उग्रवादी मारे गए

दिनांक 13 अप्रैल, 1987 को के० रि० पु० बल की 34 बटालियन की “ई कम्पनी” के सिपाही रंधीर सिंह को जी. एन. एल. एफ. उग्रवादियों के ट्रक ने उस समय कुचल दिया जब वह ट्रक 15 जी. एन. एल. एफ. उग्रवादियों को लेकर जा रहा था। वह सिपाही सी. आर. पी. कैम्प के पास अपने सेक्शन कार्मिकों के साथ खराब गाड़ी के पास खड़ा था, जब ट्रक बड़ी तेज रफ्तार से आया और सिपाही को कुचल दिया।

जी. एन. एल. एफ. उग्रवादियों ने पास से गुजरते समय कार्मिकों पर बम्ब फेंके और पेड़ से जाकर टकराया। के. रि. पु. बल के कार्मिकों ने तुरन्त फायर किया। उनमें से तीन जी. एन. एल. एफ. उग्रवादी उसी समय मारे गए जबकि दूसरे भाग निकले।

पदोन्नति

श्री के० पी० एस० गिल, के० रि० पु० बल के भूतपूर्व पुलिस महानिरीक्षक, उत्तर पश्चिमी सेक्टर, ने अपनी अपर महानिदेशक, पंजाब पुलिस की पदोन्नति होने के फलस्वरूप श्री आर० के० मेहता, पुलिस उप महानिरीक्षक, के० रि० पु० बल चंडीगढ़ को कार्य भार सौंप दिया।

के० रि० पु० बल के अधिकारी को बहादुरी के लिए इनाम

राष्ट्रपति ने 29वीं बटालियन, के० रि० पु० बल के श्री नगेन्द्र नाथ मिश्र, सहायक कमांडेंट को बहादुरी के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया।

श्री मिश्र (वर्तमान समय कमांडेंट) को 1980 में मणिपुर में काउब हिल्स के जंगलों में उग्रवादियों के खिलाफ मुहिम में साहसिक कार्य के लिए इनाम दिया गया था। छापा-मार टुकड़ी को तीन भागों में बांटा गया था जिसमें से एक की कमान श्री नगेन्द्र नाथ मिश्र ने, दूसरी की एक अपर पुलिस अधीक्षक ने और तीसरी की दो पुलिस इन्स्पेक्टरों ने संभाली हुई थी। जब एक छापा-मार टुकड़ी उग्रवादियों के कैम्प के निकट आई तो इस टुकड़ी पर गोलीबारी कर दी गई।

इस बीच दूसरी टुकड़ी की कमान सम्भालते हुए श्री मिश्र ने उग्रवादियों को जिन्दा पकड़ने के लिए उनके कैम्प पर धावा बोल दिया। उग्रवादियों का उत्साह गिर गया

और वे भय से भाग खड़े हुए। उनमें से कुछ बचकर भाग गए जबकि दो को मार गिराया और शस्त्र तथा गोला बारूद की भारी मात्रा जप्त कर ली गई।

के० रि० पु० बल के छः कार्मिक सम्मानित

राष्ट्रपति के द्वारा 22 बटालियन के० रि० पु० बल के छः आदमियों को बहादुरी के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया।

कांस्टेबल जे० एस० पिल्ले को और काली राम को बहादुरी के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया।

चार पुलिस पदक पाने वालों में से दो को मरणोपरान्त मिला। वे हैड कांस्टेबल कन्हैया लाल और नायक रेशम सिंह थे। दूसरे दो सिपाही मोहम्मद बशीर और गिर धारी लाल को भी सम्मानित किया गया।

24 मार्च, 1986 को अमृतसर में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ का वर्णन दिनांक 30 जून, 86 को जारी सी. आर. पी. एफ. समाचार में प्रकाशित हो चुका है।

जोखिमनिधि लाभ

अप्रैल 1987 के दौरान के० रि० पू० बल के मारे गए 13 कर्मचारियों के निकट-सम्बन्धियों को कुल 2,21,000 रु० अदा किए गए।

दो आतंकवादी मारे गए

दिनांक 4 मई, 1987 की रात को अमृतसर के बाहरी इलाके में, प्रथम बटा० के० रि० पु० बल के कर्मचारियों के साथ मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए।

सब-इन्स्पेक्टर होशियार सिंह की कमान में जब एक गश्ती टुकड़ी कोट-खालसा क्षेत्र में गश्त लगा रही थी तो गुरु तेग बहादुर नगर में 5 सिख युवकों द्वारा पिस्तौल दिखा कर एक दूकानदार को लूटने की सूचना प्राप्त हुई।

गश्ती टुकड़ी तुरन्त मौके पर पहुंच गई। सब-इन्स्पेक्टर होशियार सिंह ने जब भागते हुए युवकों को रुकने के लिए आदेश दिया तो उन्होंने गश्ती टुकड़ी पर फायर कर दिया। परिणामस्वरूप सिपाही लेखराम के सीने में गोली लगी और वह गिर गया।

सब-इन्स्पेक्टर होशियार सिंह ने अपनी पिस्तौल से गोली दाग कर जवाबी हमला किया। उनमें से भूपेन्द्र सिंह नामक युवक की गर्दन से गोली पार हो गई और वह वहीं गिर गया। अन्य चार संदिग्ध आतंकवादी अंधेरे की आड़ में बचकर भाग गए। जखमी सिपाही व आतंकवादी को अस्पताल भेजने के बाद, सब-इन्स्पेक्टर होशियार सिंह आतंकवादियों का लगातार पीछा करते हुए खेतों में खड़ी गेहूं की फसल के बीच पहुंच गए।

वेरी-लाइट की रोशनी की मदद से सब-इन्स्पेक्टर होशियार सिंह और साथियों ने खेतों में छिपे आतंकवादियों को ढूंढ लिया। जैसे ही दूसरा वेरी-लाइट कारतूस फायर

किया तो उन्होंने के० रि० पु० बल की टुकड़ी पर गोली दाग दी जिसके जवाब में के० रि० पु० बल की टुकड़ी को भी गोली चलानी पड़ी।

करीब आधे घण्टे तक दोनों तरफ से गोली-बारी चलने के बाद, आतंकवादियों की ओर से फायर बन्द हो गया। तब वैरी-लाइट की रोशनी में के० रि० पु० बल की टुकड़ी उस जगह गई और दो शव पड़े हुए पाए। उनसे एक 12 बोर की देशी पिस्तौल, एक .303 देशी पिस्तौल, कारतूस, और खाली खोके बरामद हुए।

मुठभेड़ के दौरान अंधेरे की आड़ में दो आतंकवादी बचकर भाग निकलने में सफल हो गए।

इस मुठभेड़ में के० रि० पु० बल की वीरतापूर्ण भूमिका की पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री जे० एफ० रिबेरो ने अत्यन्त प्रशंसा की।



40 बटालियन, के० रि० पु० बल द्वारा पकड़े गए हथियार

कुख्यात आतंकवादी पकड़े गए

दिनांक 13 अप्रैल, 1987 को जालंधर में स्थित कथार के पास के० रि० पु० बल की 40 बटालियन की “ए कंपनी” के कर्मचारियों ने मुठभेड़ में दो आतंकवादियों सुरजिन्दर सिंह और स्वरूप सिंह को पकड़ लिया। सुरजिन्दर सिंह ‘बी प्लस’ श्रेणी

का आतंकवादी है।

सूचना प्राप्त होने पर 40 बटालियन के कमांडेंट ने यूनिट के कार्मिकों और स्थानीय पुलिस के साथ कथार में विशेष नाकाबंदी की। जब उन्होंने तेज रफ्तार से चलने वाली दो कारों को रुकने का आदेश दिया तथा कार की तालाशी लेनी चाही तो कार में सवार पांचों आदमी जल्दी से बाहर निकल आए और के० रि० पु० बल के कर्मिकों पर गोली चलानी शुरू कर दी। जब जवाबी फायर हा तो पांचों भाग निकले। काफी पीछा करने के बाद दो आतंकवादी पकड़े गए जबकि तीन भाग निकले। पकड़े हुए व्यक्तियों के पास से दो •38 रिवाल्वर्स समेत छः खाली खोखे बरामद हुए।

आतंकवादियों द्वारा छोड़ी गई कार में से एक एम० एम०जी०, दो एल०एम०जी०, नौ एस०एम०जी०, एक स्टेनगन कारबाइन, एम०एम०जी० की 200 गोलियाँ, 303 की 50 गोलियाँ और 3,260 अन्य राउन्ड्स बरामद हुए।

13,26,350 रु० भी प्राप्त हुए। यह राशि इस वर्ष आतंकवादियों द्वारा पंजाब नेशनल बैंक से लूटी गई थी।

74 बटालियन ने आतंकवादी पकड़ा

दिनांक 23 अप्रैल, 1987 को रोपड़ में गांव ब्रजा माजरा के पास 74 बटालियन के० रि० पु० बल के कर्मिकों की आतंकवादियों के साथ गोली बारी हुई और पाँच आतंकवादी पकड़े गए। उनसे एक 9 एम० एम० पिस्तौलें, दो रिवाल्वर, 2 देशी पिस्तौलें और कुछ सजीव गोलियाँ प्राप्त हुई।

पकड़े गए पाँचों आतंकवादियों में से दो कुख्यात 'बी श्रेणी' के आतंकवादी थे, जिनका नाम कुलविन्द्र सिंह और हरमीत सिंह है।

के० रि० पु० बल के कार्मिक और स्थानीय पुलिस “नाका” ड्यूटी पर चनकौर साहिब और रोपड़ रोड पर थे, जब उन्होंने पाँच आतंकवादियों को कार में जाते हुए रोका। आतंकवादियों ने जवानों पर फायर किया जिसके फलस्वरूप मुठभेड़ हुई।

प्रधानमंत्री द्वारा के० रि० पु० बल की महिलाओं की प्रशंसा

माननीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने दिनांक 30 मार्च, 1987 को दिल्ली में नजफगढ़ के पास के० रि० पु० बल, झड़ौदा कलां में 88 महिला बटालियन की समारोह परेड में सलामी ली।

यह अवसर एक वर्ष की लम्बी प्रशिक्षण अवधि समाप्त होने के बाद आया।

प्रधानमन्त्री ने परेड में लड़कियों के सराहनीय प्रदर्शन और चुस्त पोशाक की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह एक अच्छा प्रमाण है कि महिलायें हर क्षेत्र में पुरुषों

के बराबर काम कर सकती हैं। प्रधान मंत्री ने खुशी जाहिर की, कि उनके द्वारा बनाई गई पहली अर्द्ध सैनिक महिला वाहिनी सफल रही।

माननीय प्रधान मंत्री ने कहा कि के० रि० पु० बल देश की सभी पुलिस बलों से पुरानी फोर्स है। के० रि० पु० बल में महिला बटालियन के खुल जाने से के० रि० पु० बल के इतिहास में नया अध्याय जुड़ा है। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि यह महिला बटालियन सी०पार०पी०एफ० का नाम ऊँचा करेगी।

सी० टी० सी०-2, मद्रास में एस० ओ० कोर्स में आए प्रथम उप निरीक्षक रवि कला ने परेड का नेतृत्व किया।

9 उप निरीक्षकों और 324 अन्य रैंकों ने परेड में भाग लिया। 36 महिलाओं के ग्रुप ने सबाध दौड़ प्रदर्शित की और दूसरी 30 महिलाओं ने बिना हथियारों की लड़ाई (अनआर्मड काम्बेट) प्रदर्शित की।

प्रधानमंत्री महोदय ने प्रशिक्षण के सभी क्षेत्रों में कुशल कांस्टेबल नीलम पाल को मंडल से सम्मानित किया। आउटडोर मंडल कांस्टेबल चम्पा हरनालवाल को दिया। कांस्टेबल महेश्वरी रावत को “फस्ट इन इन्डोर सब्जक्ट्स” मैडल दिया।

महिला बटालियन की “एफ” कम्पनी को “उत्तम कम्पनी” ट्राफी से पुरस्कृत किया गया। प्रधान मन्त्री महोदय के भाषण का अविकल रूप निम्न प्रकार है :

बूटा सिंह जी, चिदम्बरम् जी, डी०जी० पान्दे, कमांडेंट खान, महिला बटालियन के सब रैंक्स, बहिनों एवं भाइयों,

हमें आपकी परेड देखकर एक बहुत खास खुशी हुई। आपका डिसीप्लिन, स्मार्टनेस और माचिंग देखकर। आपकी जोरदार कमांड दिये गए, उनको सुनकर।

बहुत बार हम अपनी ही डिवीजन्स बना देते हैं, गाँवों में कोई काम हम मर्दों को देते हैं। कोई काम हम महिलाओं के लिए बना देते हैं, लेकिन जैसे मैंने देखा और जो कुछ बातें करके मैं समझा हूँ, ऐसी कोई डिवीजन असलियत में नहीं है और महिलाएं सब काम पूरी तेजी से और पूरी ताकत से और बगैर सहारे कर सकती हैं।



बहुत महीनों से होम मिनिस्ट्री से लड़-झगड़ कर मैंने मंजूर करवाया है कि महिलाओं की एक बटालियन होनी चाहिए और फिर उसके बाद भी कई महीने खूब जोर से हमें धक्का देना पड़ा जिससे ये बटालियन असलियत में आगे बढ़े और आज इसलिए मुझे खास खुशी होती है आपकी पासिंग आउट को देखकर।

सी०आर०पी० हमारा एक बहुत पुराना फोर्स है। आज से सी० आर० पी० के इस पुराने इतिहास में एक नया चैप्टर लिखा जा रहा है। जो महिलाएं इस बटालियन में भाग ले रही हैं वो इस चैप्टर को लिख रही हैं। और जिस तरह से आप आगे जाकर काम करेंगी, जिस तरह से आप सी०आर०पी का झंडा, भारत का झंडा ऊंचा रखेंगी, उसी तरह से आगे सी० आर० पी० का इतिहास बनेगा। मैं देखता हूं कि आप सी०आर०पी० का रिकार्ड आगे ले जा करके और भी बढ़िया बनाएंगी, सी०आर०पी०एफ०, भारत के झंडों को और ऊंचा उठाएंगी, आप भारत का गौरव बनेंगी।

पिछले महीनों में, पिछले सालों में हमने देखा है कि सी० आर०पी० पर बहुत जोर हम डाल रहे हैं, बहुत दबाव डाल रहे हैं, बहुत ज्यादा काम हम सी०आर०पी० से ले रहे हैं। एक तरह से ये तो दिखलाता कि हम कितना भरोसा सी०आर०पी० पर करते हैं और आप कितनी अच्छी तरह से परफोर्म करते हैं। लेकिन दूसरी तरफ मुझे लगता है कि कभी-कभी हम बहुत ज्यादा ही जोर डालते हैं और मुझे लगता है कि अब हमें खास ध्यान देना चाहिए कि इन डिप्लायमेंट के पीरिएड के बीच में ठीक

तरह से टोनेंग हो और ठोक तरह से थोड़ा आफ-टाइम भी मिले। सी०आर०पी० को हर बटालियन को, हर कम्पनी को। खाली कन्टीनियुस टेनिंग के साथ, पूरी डिसीप्लिन बन सकती हैं और स्टैन्डर्ड मेंटेन कर सकती हैं। हमारी उम्मीद है इसे हम पूरा ध्यान दे करके अब शुरू करेंगे।



समारोह परेड से पूर्व श्री राजीव गांधी, के० रि० पु० बल के उच्च अधिकारियों से मिले। चित्र में उनकी भेंट श्री बी०जे०एस० स्याल, महानिरीक्षक से।



के० रि० पु० बल की ओर से श्री राजीव गांधी को भेंट देते हुए के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री एस० डी० पाण्डेय

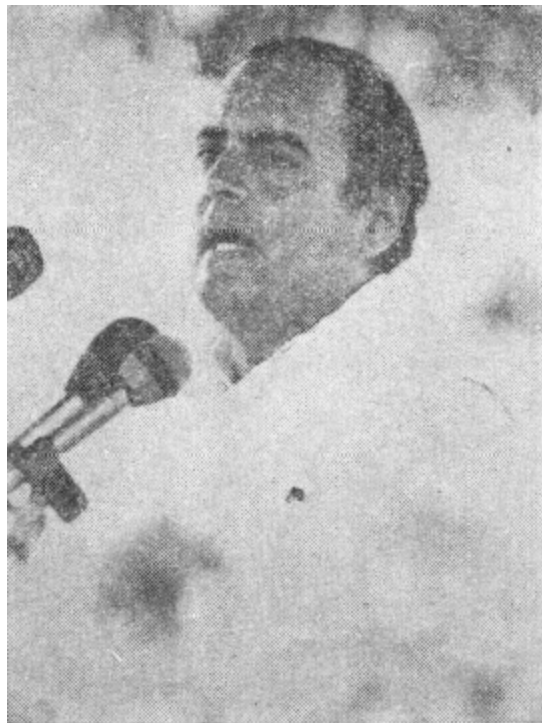
इसके साथ हमें खास देखना है कि दूसरी एक्टिविटीज पर भी ध्यान दिया जाय, क्योंकि अगर खाली एक जगह पूरा ध्यान जाता है तब मनुष्य पूरी तरह से डेवलप नहीं होता है। हमें देखना चाहिए कि एक्स्ट्रा क्यूरेकुलर एक्टिविटीज में, स्पोर्ट्स में, दूसरी चीजों में भी सी० आर० पी० हर तरह से भाग ले, जिसमें एक पूरा जीवन बने, सी०आर०पी० के हर रैंक्स का। हमारी उम्मीद है कि सी० आर० पी० ये अब करना शुरू करेगी और देखेंगे कि सी० आर० पी० की असली ताकत इससे बने।

ट्रेनिंग का एक हिस्सा, खाली एक हिस्सा फीजिकल ट्रेनिंग होता है। उसके साथ एक नेशनलिज्म पर भी, पेटियाटिज्म पर भी कोई शिक्षा देनी चाहिए। आज हम देख रहे हैं देश में कि सब आर्थिक विकास के पीछे दौड़कर हम हमारे पुराने मूल्य भूल रहे हैं, हम लक्ष्य भूल रहे हैं, हमारे सिद्धान्त निकल रहे हैं। आज अगर भारत की ताकत बननी है तो हमें देखना है कि हमारी पुरानी विरासत, परम्पराएँ, हमारी संस्कृति और हमारे मूल्य पीछे आती हुई पीढ़ियों को हम दें। हमें देखना है कि देश भक्तिता भी हम सिखाएँ। हमारे जवानों को, लड़कियों-लड़के को हर तरह से देश भक्त बनाएँ।

भारत दुनियाँ में एक नया रास्ता दिखा रहा है जो गाँधी जी ने हमें रास्ता दिखाया, वो रास्ता हम दुनिया में ले जा रहे हैं। इससे जो जमी हुई ताकतें हैं दुनिया में वो हिलती

हैं। इससे भारत सरकार हर तरह से आजाद होकर मजबूत होकर खड़ा होता है और इससे दूसरे देश हमें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं, हमें पीछे हटाने की कोशिश करते हैं। आज अगर हमें इस रास्ते पर चलना है, अगर आज भारत को हर तरह से आजाद रखना है, तो हमें देखना है कि अन्दर से भारत में कोई कमजोरी न आए। हमें देखना है कि हम आपस में एक होकर खड़े रहें। ये तब होगा जब हमारे आपस के मतभेद खत्म होंगे। ये तब होगा जब हमारे आपस के झगड़े खत्म होंगे।

हमने इन दो सालों में देखा है, भारत में जो बड़े-बड़े झगड़े हो रहे थे, जहाँ तनाव हो रहा था वो हमने कम किया है। असम में, मिजोरम में, कश्मीर में बढ़ रहा था, वो भी अब ठीक हो रहा है। पंजाब में भी पिछले महीने से ठीक रास्ते पर काम चल रहा है। अब हमें देखना है कि ये ताकत और मजबूत बने, क्योंकि खाली जब ये एकता बनेगी तब हम अपनी आजादी के रास्ते पर चल सकते हैं और खाली तब हम देश में आर्थिक विकास ला सकते हैं और खाली तब हम गरीबी हटाने के हमारे कार्यक्रम पूरी तेजी से लागू कर सकते हैं। आपका इसमें एक बहुत बड़ा काम है।



सी०आर०पी० देश को जोड़ने में, देश को एक रखने में हर तरह से काम करता है। अपनी कम्पनीज के फौरमेशन से, अपने रैंक से जो देश के कोने-कोने से आते हैं, अपने डिप्लायमेंट से जो देश के कोने-कोने में जाकर अपना काम करते हैं।



महिला बटालियन की एक महिला द्वारा बिना हथियार की लड़ाई का प्रदर्शन

मेरी उम्मीद है कि महिलाएँ भी जो आज सी०आर०पी० में भर्ती होकर मैदान में निकल रही हैं वो इसमें पूरा भाग लेंगी। मैं जानता हूँ कि भारत की महिलाओं ने जिस तरह से आजादी की लड़ाई में भाग लिया, जिस तरह से वो आज भारत बनाने में भाग ले रही हैं, उसी तरह से इस राष्ट्रीय फील्ड में, सी०आर०पी० में, भारत की फोर्सेज में भाग लेंगे, भारत को मजबूत करेंगी।

मैं दुबारा आप सबको मुबारकवाद देता हूँ। धन्यवाद। जयहिन्द।

(मुख पृष्ठ छाया-उप निरी० बिहारी लाल)

आर०टी०सी०-3 में दीक्षान्त परेड

लगभग 700 रंगरूटों को प्रशिक्षण देने के लिये दिनांक 9 जून, 1986 को रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 तदर्थ आधार पर पल्लिपुरम में खोला गया। दिनांक 1 दिसम्बर, 1986 को इसने अपना काम शुरू कर दिया।

36 हफ्तों की बेसिक प्रशिक्षण की अवधि के बाद, दिनांक 24 अप्रैल, 1987 को 665 रंगरूट पास हो गए।

श्री सी० सुब्रह्मणियम, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर ने सलामी ली और उन्होंने पदक और प्रमाण पत्र वितरित किए।

81 रंगरूट सिपाही बनें

दिनांक 4 मई, 1987 को रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3, आवड़ी में 81 रंगरूटों ने अटेस्टेशन-कम-पासिंग आउट परेड करने के बाद सिपाही बने।

केन्द्र के प्रिंसिपल श्री पी.वी. जगन्नाथन ने सलामी ली।

हथियार बनाने की फैक्टरी खोजी

दिनांक 24 मई, 1987 को साउथ त्रिपुरा के गाँव तुइहारचुंगवाड़ी के पास के० रि० पु० बल की 70 बटालियन की “ई” कम्पनी ने गश्ती करते समय हथियार बनाने की फैक्टरी खोज निकाली।

घर से देशी 12 बोर एस. बी. एम. एल. बन्दूक, दो ढीली बैरल और छः लोहे के पाइप बरामद हुए।

घर का मालिक पकड़ा गया और स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

आबू-पर्वत में आंतरिक सुरक्षा संगोष्ठी

आंतरिक सुरक्षा अकादमी, के० रि० पु० बल, की आबू पर्वत में दिनांक 6 से 11 मई, 1987 तक 6 दिन की आंतरिक सुरक्षा संगोष्ठी आयोजित हुई।

परिचर्चा का विषय था “भारत में पुलिस और अर्द्ध-सैनिक बलों की संवृद्धि तथा आंतरिक सुरक्षा के लिए उनका योगदान”, “स्थानीय समस्याओं से पनपे आतंकवाद का राजनैतिक समाधान” तथा “आन्दोलनों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी”।

गोष्ठी में जिन्होंने भाग लिया उनमें डा० बी. वर्मा, निदेशक, आ० सु० अ०, श्री बी. के. राय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की पूर्व निदेशक, डा० (श्रीमती) एन.बी. मोदी, बम्बई यूनिवर्सिटी, श्री वेनुगोपाल राव, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो के पूर्व-निदेशक, अहमदाबाद के प्रोफेसर डी० पाठक, श्री एस. एम. डायज, रा० पु० अ० के पूर्व निदेशक, श्री आर० के० खंडेलवाल, चेयरमैन, संयुक्त आसूचना समिति, श्री टी. ए. सुब्रमनियम, महानिदेशक, पु० अ० वि० ब्यूरो, प्रो० पी. डी. जोशी, राजस्थान यूनिवर्सिटी तथा श्री सी. सुब्रमणियम, पु० महा०, दक्षिणी क्षेत्र, के० रि० पु० बल भी उपस्थित थे।

के० रि० पु० बल के केन्द्रीय विद्यालयों का अच्छा परिणाम

के० रि० पु० बल, झड़ौदाकलां कैम्प के केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थी मास्टर सुरेश कुमार रोहिला ने अखिल भारतीय सेकेन्ड्री स्कूल की इस वर्ष की 12वीं क्लास की परीक्षा में “हिन्दी वैकल्पिक” में टाप किया।

अखिल भारतीय 10वीं कक्षा के गणित पेपर में दुर्गापुर सी. आर. पी. कैम्प केन्द्रीय विद्यालय के एक और विद्यार्थी मास्टर सुरेश साहा प्रथम रहे। उन्होंने 100 में से 100

अंक प्राप्त किए।

सी.आर.पी.एफ. केन्द्रीय विद्यालय, आवड़ी में 12वीं क्लास परीक्षा में प्रथम बैच में से 29 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। शेष चार ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की।



श्री एस० डी० पाण्डेय, महानिदेशक, श्री मोहन सिंह और श्री आर० डी० शर्मा को सेवा निवृत्ति से पूर्व उनकी अन्तिम दिन ग्रेज्युटी-राशि का चेक प्रदान करते हुए।

के० रि० पु० बल द्वारा बचाव कार्य

50 बटा० द्वारा आग पर काबू पाना

दिनांक 14 अप्रैल, 1987 को शिलाँग में मोलई जेल के निकटवर्ती क्षेत्र में आग लग गई जो कि तुरन्त ही के० रि० पु० बल की 50 बटा० द्वारा बुझाई गई।

एक औरत जिसका घर बुरी तरह से जल गया था उसे इस दुर्घटना में जान गवानी पड़ी।

जनता द्वारा के० रि० पु० बल के कर्मियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। उन्होंने समय पर पहुंचकर आग बुझा दी नहीं तो आग दूसरे घरों तक भी फैल जाती।

इम्फाल में आग बुझाना

दिनांक 13 मई 1987 सुबह को इम्फाल में शोपिंग काम्पलैक्स, सिंगजामई में आग लग गई जोकि के० रि० पु० बल की 68 बटालियन की “डी” कम्पनी के प्लाटून द्वारा काफी संघर्ष के बाद बुझाई गई।

पाँच दुकानें जल गई, जिसके फलस्वरूप 30,000 रु० की सम्पत्ति की क्षति हुई। यदि के० रि० पु० बल के कार्मिक समय पर आग पर काबू न पाते, तो आग पड़ोस की और दुकानों में फैल सकती थी। के० रि० पु० बल के कर्मचारियों द्वारा किए गए काम को सभी लोगों और पुलिस ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

दुर्घटना पीड़ित को बचाया

44वीं बटालियन, के० रि० पु० बल की “सी” कम्पनी के कर्मचारियों ने 10 मई, 1987 की भोर में एक युवक की उस समय जान बचाई जब चूड़ाचाँदपुर में चौकी के नजदीक उसकी वेन, जिसे वह चला रहा था गंभीर रूप से दुर्घटनाग्रस्त हो गई।

नीलमणि सिंह नामक वह युवक वेन के टूटे-मलबे में फंस गया था और उसका काफी खून निकल चुका था, अतः उसे शीघ्र ही अस्पताल पहुंचाया गया।

ग्रुप केंद्र दुर्गापुर में तात्कालिक चित्र प्रतियोगिता

ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर में 18 जनवरी 1987 को एक तात्कालिक चित्र प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 17 वर्ष तक के 206 बालकों ने भाग लिया। प्रतियोगिता की सुविधा के लिए उनको चार आयु वर्ग में विभाजित किया गया। जिन 31 बालकों ने सर्वोत्तम चित्र और रेखाचित्र बनाए, उन्हें 26 जनवरी, 1987 (गणतंत्र दिवस) को पुरस्कृत किया गया।

इस प्रतियोगिता को आयोजित करने का मुख्य आशय बालकों में रचनात्मक प्रतिभा को पैदा और हृदयगम कराना था। चित्रों और रेखाचित्रों को प्रदर्शनी के रूप में ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर के परिवार कल्याण केन्द्र में लगाया गया है।

रजिस्टर्ड नं० F.2(C/30) Press/87

श्रीनगर न क्रास कन्ट्री खिताब जीता

15 अप्रैल, 1987 को झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में आयोजित इन्टर-रेंज क्रास कन्ट्री मीट में कुल 58 अंक प्राप्त कर, श्रीनगर रेंज ने क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप जीती।

उस क्रम से अजमेर (82) तथा मद्रास (101) ने अगले दो स्थान प्राप्त किए।

श्रीनगर की विजय का श्रेय एम०एस० यूनम, जीत राम, हरजिन्द्र सिंह एवं कुलविन्द्र सिंह को है।

श्री पी० कुमार, कमांडेंट, प्रथम सिगनल बटालियन, के० रि० पु० बल ने इनाम बाँटे।

प्राथमिक चिकित्सा में पटना प्रथम

गांधीनगर में दिनांक 21 से 27 फरवरी, 1987 तक आयोजित 21वें प्राथमिक चिकित्सा अन्तर-रेंज प्रतियोगिता में पटना रेंज ने 800 में से 548 अंक लेकर विजय हांसिल की। मद्रास रेंज 476.5 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर तथा नीमच रेंज 469 अंक से तीसरे स्थान पर रहा।

व्यक्तिगत अंकों के हिसाब में से 75 अंक लेकर पटना रेंज के कांस्टेबल लेखराज ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उनकी टीम के नायक हनुमानसिंह को 3 अंक कम मिले और दूसरे स्थान पर रहे। कांस्टेबल कैलाशचन्द्र 51.5 अंक प्राप्त कर अगले स्थान पर रहे।

करनैल सिंह भारतीय टीम के कोच चुने गए

इस वर्ष नवम्बर में बैकांक में होने वाली “एशियन वास्केटबॉल कन्फेडरेशन मीट” की तैयारी में भारतीय सम्भावित खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने के लिए भारतीय बास्केटबाल संघ ने के० रि० पु० बल के श्री करनैल सिंह चीमा, पुलिस उपअधीक्षक का चयन किया है।

15 जून से 8 अगस्त 1987 तक पटियाला में कैम्प का आयोजन किया जा रहा है।

कैप के लिए चुने गए प्रशिक्षार्थियों में के० रि० पु० बल के सब-इन्स्पेक्टर जसमिन्दर सिंह भी शामिल हैं।

दिल्ली ने फुटबाल मैच जीता

दिनांक 15 अप्रैल से 24 अप्रैल 1987 तक नीमच में हुई 21-वें अन्तर्राष्ट्रीय फुटबाल टूर्नामेंट में दिल्ली रेंज ने चैम्पियनशिप ट्रॉफी जीत ली।

रनर्स अप ट्रॉफी कलकत्ता रेंज ने जीती जबकि इम्फाल रेंज को तीसरा स्थान मिला।



श्रीनगर रेंज को विजयी क्रास कन्ट्री टीम श्री के० एल० दुबे, पुलिस उप महानिरीक्षक और अन्य अधिकारियों के साथ।

अन्तर-रेंज तैराकी मे खजान सिंह विजयी

गाँधीनगर में दिनांक 11 से 14 मई 1987 तक 21वीं अन्तर-रेंज जल-क्रीड़ा प्रतियोगिताएं हुईं जिनमें एशिया-खेलों के रजत पदक विजेता खजान सिंह आयोजन के मुख्य आकर्षण रहे।

इस स्पर्द्धा स्थल पर अचानक आकर उन्होंने जिन सभी छः प्रतियोगिताओं में दाव लगाया उन सभी में स्वर्ण पदक बटोर लिए। तीन रिले प्रतियोगिताओं में उन्होंने अपने प्रयासों से दो रजत और एक कांस्य पदक अपने मेडलों की श्रंखला में जोड़ लिए। इस 23-वर्षीय पुलिस उप-अधीक्षक ने बड़ी ही आसानी से सर्व-श्रेष्ठ तैराक का खिताब भी जीत लिया।

कलकत्ता रेंज का प्रतिनिधित्व करते हुए खजानसिंह ने 100 मी० की बैक स्ट्रोक, 200 मी० व्यक्तिगत मैडले, 400 मी० फ्रीस्टाइल, 200 मी० बैक स्ट्रोक, 100 मी० बटर-फ्लाय और 100 मी० फ्री-स्टाइल में स्वर्ण पदक जीता।

23-वर्षीय मणिपुर-किशोर आर० के० रोजन ने अजमेर रेंज का प्रतिनिधित्व करते हुए 200 मी० फ्री-स्टाइल, 400 मी० व्यक्तिगत मैडले और 200 मी० बटर-फ्लाय में तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किए। 400 मी० और 1500 मी० फ्री स्टाइल में दो रजत उनके हिस्से में आए, जबकि 200 मी० की व्यक्तिगत मैडले में उन्हें कांस्य लेकर ही संतोष करना पड़ा।

पवित्रो शर्मा और बी.एस. रवि शेखर के अनुपस्थिति में बी. एन. तमोची (हैदराबाद) को हाई-बोर्ड डाइविंग जीतने में कोई परेशानी नहीं हुई।

दिल्ली रेंज सुरेशचन्द ने “स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग” प्रतियोगिता जीती।

वाटर-पोलो के फाइनल में मद्रास के खिलाड़ियों ने अजमेर के लड़कों को करारा जवाब दिया।

अजमेर रेंज ने 175 अंक हासिल कर चैंपियनशिप के खिताब को बरकरार रखा जबकि कलकत्ता 136 अंक लेकर दूसरे स्थान पर रहा।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खण्ड I अंक 2

मूल्य 1.60 रु०

[30 जून 1987] [9 अगस्त 1989]



मेरठ में के० रि० पु० बल के महिलाओं द्वारा बरामद किए गए हथियार

बीस साल बाद स्वेच्छा से सेवा निवृत्ति

ले०—ज्ञानसिंह रावत

निरीक्षक (मंत्रालयिक)

केन्द्रीय सिविल सेवाओं के बीस साल बाद अपनी इच्छा अनुसार सेवा से निवृत्त (रिटायर) होने का नियम कर्मचारियों के लिये भारत सरकार द्वारा अगस्त, 1977 से लागू किया गया। अन्य बातों के अलावा शायद देश की बढ़ती बेरोजगारी की समस्या व प्रशासन को चुस्त बनाने के दृष्टिकोण से ही इस नियम का सृजन हुआ। वैसे भी समय के अनुसार नियम कानून बदलते रहते हैं। उपरोक्त नियम के परिणाम-स्वरूप केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की नियमावली, 1955 के नियम 43 में भी सरकार द्वारा आवश्यक संशोधन किया गया।

नियम की स्थिति

के०रि०पु० बल नियमावली के अनुसार बल का कोई भी सदस्य, जिसने कम से कम 20 वर्ष की अर्हक (क्वालिफाइंग) सर्विस पूरी कर ली हो, अपने नियुक्ति प्राधिकारी को तीन माह का (स्वेच्छा से रिटायर होने का) लिखित नोटिस देने से रिटायर हो सकता है। जब तक सेवा की नितान्त आवश्यकता न हो, कर्मचारी को उसकी स्वेच्छा से सेवा निवृत्त होने दिया जायेगा। स्वेच्छा से रिटायर होने का नोटिस देने से पहले उस सदस्य को अपने अधिकारी (कमांडेंट), जिसके अधीन वह कार्यरत हो, एक प्रार्थना-पत्र के माध्यम से इस बात की पुष्टि कर लेनी आवश्यक है कि उस कर्मचारी ने बीस साल की अर्हक (क्वालिफाइंग) सर्विस पूरी कर ली है। जब इस बात की पुष्टि हो जाये, तब अमुक कर्मचारी अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी दिन से अपनी इच्छा से रिटायर होने का तीन माह का नोटिस अपने अधिकारी को दे सकता है। उल्लेखनीय है कि :

- (क) उपयुक्त मामलों में नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा तीन माह से कम का नोटिस भी स्वीकार किया जा सकता है।
- (ख) नोटिस का तीन माह का समय पूरा होने से पहले उसे नियुक्ति प्राधिकारी के अनुमोदन से वापिस भी लिया जा सकता है।

सम्भावित प्रेरक कारण

इस नियम के अधीन पिछले लगभग 10 वर्षों में इस बल से काफी सदस्य विदा ले चुके हैं। यह सर्व विदित है कि वर्तमान समय में देश की कानून व व्यवस्था की बढ़ती समस्या के कारण बल के सदस्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर तुरंत पहुंचने के लिए आठों पहर तैयार रहना पड़ता है। वैसे भी इस फोर्स का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत

होने से सदस्यों को भिन्न-भिन्न जलवायु वाले प्रदेशों में तैनात रहना पड़ता है, जिसका प्रतिकूल असर पड़ता है। इसके अलावा, लगभग मात्र 15 प्रतिशत सदस्यों को पारिवारिक आवास (फैमली क्वार्टरों) की सुविधा उपलब्ध है। शेष सभी या तो अविवाहित हैं अथवा अविवाहित जैसा जीवन यापन करते हैं। ऐसे सदस्य वर्ष में केवल दो ढाई माह के अवकाश के दौरान ही अपने पारिवारिक प्रियजनों के साथ रह सकते हैं।

जहाँ एक ओर नवीनतम तकनीकी (टेक्नोलौजी) के वरदान से शारीरिक सुख के लिए नाना प्रकार की सुविधायें सुलभ हैं, वहीं दूसरी ओर भागा-दौड़ी की इस बल की असाधारण सेवा में बल के सदस्यों को कभी कभी भार तो खुले आसमान के नीचे, जैसे कहते हैं 'भूखण्ड बिछा आकाश ओढ़', रहना पड़ता है। लेकिन ऐसी परिस्थितियाँ तो यदाकदा ही आती हैं व फिर पृथ्वी का भोग तो वीर ही कर सकते हैं। कुल मिलाकर, निरन्तर अत्यधिक संचलन (मूवमेंट) व पारिवारिक अलगाव की समस्या ही ऐसे अन्य कारणों में से प्रमुख हैं जो सदस्य को बीस साल बाद रिटायर होने का निर्णय लेने को बाध्य करते हैं।

विचारणीय प्रश्न

अच्छा है बीस साल बाद स्वेच्छा से रिटायर होने की सुविधा सबको दी गई है। किन्तु देखना है कि क्या कोई इस सुविधा का दुरुपयोग तो नहीं कर रहे हैं। लीजिए चन्द प्रश्नों का उत्तर अपने आपसे पूछिए :

- (1) क्या आप आवेश में आकर तो यह कदम नहीं उठा रहे हैं ?
- (2) क्या इस बल में आने की जो भी आपकी आकांक्षाएँ थी, वे पूरी हो चुकी हैं ?
- (3) क्या अपने आश्रितों के प्रति आपकी जिम्मेदारियाँ पूरी हो चुकी हैं व बीस साल बाद मिलने वाली अल्प-आय पेंशन से आपके परिवार का भरण-पोषण पूरा हो सकेगा?
- (4) मनुष्य जीवन बिना काम (कर्म) के शून्य हो जाता है। विद्वानों के मतानुसार निष्क्रियता ही मृत्यु का दूसरा नाम है। फिर आप जहाँ भी रहेंगे काम तो जरूरी है। क्या आपने अपने लिए ऐसा उपयुक्त काम चुना है ?
- (5) इस बल में आकर जो आपने पिछले बीस साल के दौरान बहुमूल्य प्रशिक्षण व अनुभव प्राप्त किया है, उसका आप क्या सदुपयोग कर पायेंगे ?

यदि आपके पास उपरोक्त प्रश्नों के सार्थक उत्तर हों, तब ही आपका बीस साल बाद स्वेच्छा से रिटायर होना उचित होगा; अन्यथा कहीं ऐसा न हो 'आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पाये।'

उपसंहार

के०रि०पु० बल में भर्ती की न्यूनतम आयु 18 वर्ष व सेवा निवृत्ति की अधिकतम आयु 55 वर्ष है। इस प्रकार यदि कोई सदस्य 18 या 20 वर्ष की आयु में इस बल में शामिल (भर्ती) हुआ हो, वह केवल 38 या 40 वर्ष की अवस्था में ही बीस साल बाद स्वेच्छा से रिटायर होने का पात्र है। किन्तु इस प्रौढ़ उम्र में रिटायर होना क्या उसके

हित में होगा अथवा क्या पिछले बीस वर्षों में उसका आज्ञित अनुभव व प्राशिक्षण उसके उपयोग में आ सकेगा, यह स्वयम् विचारणीय प्रश्न है। इन प्रश्नों का अनुकूल उत्तर न मिलने पर सदस्यों का स्वेच्छा से रिटायर होना समझदारी का काम न होगा, क्योंकि इसका असर उनके साथ-साथ फोर्स पर भी पड़ता है, जो अपने एक प्रशिक्षित अनुभवी सदस्य को जवानी में ही खो बैठता है। जैसे समाज या परिवार में बुजुर्गों का अपना अलग महत्व होता है उसी प्रकार फोर्स के प्रत्येक इकाई में प्रशिक्षित व अनुभवी सदस्यों का प्रचुर मात्रा में मौजूद रहना परमावश्यक है। शायद यही कारण है कि भारतीय सेना में विभिन्न रैंकों के लिए रिटायर होने की शर्तें भी अलग-अलग हैं। बहुमूल्य प्रशिक्षण प्राप्त करने के अलावा फोर्स में जैसे-जैसे सेवा (सर्विस) की अवधि बढ़ती है उसी अनुपात में बल के सदस्य का अनुभव भी बढ़ता है और उसी के आधार पर वह कई विकट परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हो सकता है। **किसी भी फोर्स में जितने अधिक अनुभवी सदस्य होंगे वह उतना ही अधिक मजबूत होगा।** अतएव बीस साल बाद स्वेच्छा से रिटायर होने के अपने मामले पर ऐसे दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए स्वयं विचार करें, जिससे लिया गया निर्णय सुखदायी व अनुकरणीय हो।

जवान ने रक्त दान किया

ईटानगर में दिनांक 29 अप्रैल 1987 को 8वीं बटालियन, के० रि० पु० बल के कांस्टेबल इस्ताक अहमद ने अरुणाचल प्रदेश पुलिस के जवान को रक्त दान कर उसकी जान बचाई। दुर्घटना में गम्भीर रूप से घायल जवान की रक्त दान के लिए अपील सुनते ही के० रि० पु० बल का यह जवान राम कृष्ण मिशन अस्पताल में शीघ्र पहुंचा जहां वह पुलिस जवान दाखिल था और उसे रक्त दान किया।

अरुणाचल प्रदेश के सहायक पुलिस महानिरीक्षक ने सिपाही इस्ताक अहमद की पहल की प्रशंसा की और उसे 50/- रु० का नकद इनाम दिया।

पहेलियाँ

1. कोई मेरे तनको काटे,
भर-भर आँसू रोया,
जग वालों का स्वाद बना,
अर्थ लगावे कोय ॥
2. गये विदेश हमारे अब्बा
वहां से लाए छाता डिब्बा,
छाते में जोड़ी एक तार,
डिब्बे में दीखे सब संसार ॥

3. पेट का सवाल है,
डाढ़ी में एक बाल है।

उत्तर— 1. प्याज, 2. टेलिविजन, 3. जौ



मेरठ में के० रि० पु० बल महिलाओं की सराहनीय भूमिका

सामान्य दिनों की भाँति महिला कम्पनियों ने अपना दैनिक कार्य-पी. टी. और परेड किया। दोपहर पश्चात् अध्यन कार्य सम्पन्न किया ही था कि एक सिगनल आ पहुंचा और शीघ्र ही कमांडेंट के आदेशानुसार तीन महिला कम्पनियाँ मेरठ के लिए रवाना हुई।

महिला कम्पनियों के प्रशिक्षण के बाद मुख्यालय से बाहर तैनाती का यह सर्वप्रथम मौका था। महिला बटालियन के दिल्ली से मेरठ रवानगी के साथ स्वयं कमांडेंट एस०ए० खान साथ चले। इस वाहनी की कानवाय के मेरठ पहुंचने पर, शहर

को काफी क्षातेग्रस्त स्थिति में देखा गया।

स्वतंत्रता के पश्चात मेरठ का यह सबसे बड़ा साम्प्रदायिक दंगा था। इसमें जान-माल का काफी नुकसान हुआ। महिला कम्पनियों ने प्रशिक्षण के दौरान जो कुछ भी सिखलाई ग्रहण किया उसका स्पष्ट प्रभाव मेरठ के दंगों में व्यावहारिक रूप से देखने में आया।

महिला वाहनी के मेरठ पहुंचने से पहले शहर में सिविल पुलिस, पी. ए. सी. व सेना तैनात थी। शहर के चारों तरफ कर्फ्यू लगा था। महिला कम्पनियों ने सिविल पुलिस तथा सेना के साथ शहर में अनेक स्थानों—तोपखाना बाजार, बली बाजार, सदर बाजार, गुदड़ी बाजार, कोतवाली बलियाना, सिविल लाईन, ट्रासपोर्ट नगर, लाल कुर्ती, बेगमपुल, अब्दुलापुर, लिसाड़ी गेट, और हस्तामाबाद—में तलाशी लिया। तलाशी के दौरान सी. आर. पी. एफ. महिलाओं ने अनेक हथियार बरामद किए जिन्हें दंगे में प्रयोग किया गया था।

तोपखाना में एक घर की तलाशी लेते समय महिला कम्पनी की एक सेक्शन ने एक बाक्स में छिपाये गये विदेशी हथियार बरामद किये। सेना अधिकारी तथा सिविल पुलिस अधिकारियों ने उनमें कार्य की लगन की प्रशंसा की तथा शाबासी दी। रामपुर से डी० आई० जी० पी० श्री एस० एन० माथुर, मेरठ में दंगों का दौरा करने आए तथा इन महिलाओं को नकद पुरस्कार दे गए।

महिला कम्पनियों ने तप्त गर्मी में घर-घर जाकर तलाशी ही नहीं ली बल्कि बड़ी संख्या में आए महिलाओं के जलूस को भी नियंत्रण में रखा। मेरठ के दंगे ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने जब प्रधानमन्त्री और अन्य मन्त्री आए, तब महिला बटालियन के महिलाओं ने लोगों को पूर्णतया नियंत्रण में रखा। प्रधानमन्त्री ने स्वयं कुछ क्षण रुककर सी०आर० पी०एफ० के महिलाओं से बात किया तथा उन्हें उनके काम के लिए शाबासी दी।

शहर के विभिन्न क्षेत्रों में लगे कर्फ्यू के दौरान, तलाशी के अलावा महिला कम्पनी के महिलाओं ने पिकटिंग तथा पेट्रोलिंग भी की। महिलाओं को पेट्रोलिंग करते देखकर आम जनता को आश्चर्य हुआ।

महिला कम्पनियों की फुर्ती एवं लगन को देखकर राज्य पुलिस अधिकारियों ने महिला वाहिनी के स्थायी रूप से रहने की माँग की। लेकिन कम्पनियों का स्थानीय एक जगह असंभव है। महिला कम्पनियों को देश में जहाँ भी जरूरत होती है, जहाँ भी माँग होती है, वहीं पर तैनात की जाती है।

—एस० रामालिंगम

सेक्टर पुलिस महानिरीक्षक का दोबारा नामकरण

सैक्टर पुलिस महानिरीक्षक के नामकरण में परिवर्तन को सरकार ने अनुमति दे दी है।

पुलिस महानिरीक्षक से०-I को आगे से पुलिस महानिरीक्षक, दाक्षिणी सेक्टर कहा जाएगा जबकि पुलिस महानिरीक्षक-II,III,IV और V तदनुसार पुलिस महानिरीक्षक पूर्वी, उत्तरी, उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी सेक्टर कहा जाएगा।

मृत्यु के मामलों में अनुदान की बढ़ोत्तरी

महानिदेशालय में मई 1987 में आयोजित केन्द्रीय कल्याण निधि की शासी निकाय की बैठक में मृत्यु के मामलों में एक मुश्त अनुदान 6,000/—रु० से 10,000/—रु० बढ़ाने का निर्णय लिया गया था।

मृत्यु के मामलों में बटालियन कल्याणनिधि से तुरन्त अनुदान की राशि भी 1000/—रु० से 2,000/—रु. बढ़ा दी गई है।

मंत्रालयिक कार्मिकों को जी० डी० के समान वेतनमान

के० रि० पु० बल एवं बी० एस० एफ० के अराजपत्रित एक्जीक्यूटिव पदों के लिए चतुर्थ वेतन आयोग द्वारा सिफारिश किए गए वेतनमानों को अराजपत्रित मंत्रालयिक स्टाफ पर भी लागू किया गया है।

यह आदेश इसके जारी होने की तिथि—11 जून, 1987—से प्रभावी होगा।

8वीं बटालियन ने पौधे लगाये

जून 1987 के दौरान, ईटानगर में स्थित 8वीं बटालियन, के० रि० पु० बल के कार्मिकों ने यूनिट हैडक्वार्टर्स कैम्प, ईटानगर में 1000 से ज्यादा अनेक प्रकार के फलों के पौधे और छायादार वृक्ष लगाए।



मणीपुर के पुलिस महानिरीक्षक श्री वी० पी० कपूर, 51 बटालियन के विजेता फुटबाल टीम को पुरस्कार देते हुए।

51 बटालियन की मणीपुर से विदाई

श्री वी०पी० कपूर, पुलिस महानिरीक्षक, मणीपुर ने दिनांक 7 मई, 1987 को इम्फाल राज्य के लाम्फेलपट में स्थित 51वीं बटालियन, के० रि० पु० बल के राज्य से प्रस्थान करने से पूर्व दौरा किया।

दरबार में यूनिट के कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने यूनिट द्वारा राज्य में 4 वर्षों से निभाई गई कानून एवं व्यवस्था की भूमिका की सराहना की।

भारत का अभिमान

[रचयिता—श्री एम० डी० वर्मा]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
भारत का अभिमान ।
सूर्य : चन्द्रमा जैसी इसकी,

अटल रहे यह 'आन' ॥
शाँति, सुरक्षा, सेवा का ब्रत,
'देश-भक्ति' अमृत से कृत कृत
जाति, धर्म से परे,
शक्ति से भरे,
कर्म से कर्मठ
इसके सभी जवान ।
लौह पुरुष का मिला इसे वरदान,
जन जीवन का प्राण ॥
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
भारत का अभिमान ।

कमांडैन्ट श्री के० डी० मैनी ने पुलिस महानिरीक्षक द्वारा ड्यूटियों को निभाते समय यूनिट के कार्मिकों को दिए गये मार्ग दर्शन के लिए उनको धन्यवाद दिया।

श्री कपूर ने यूनिट के अन्तर-कम्पनी फुटबाल एवं हॉकी टूर्नामेंट के विजेता खिलाड़ियों को इनाम दिए ।

नीमच में हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 4 से 9 मई, 1987 तक ग्रुप केन्द्र, के० रि० पु० बल, नीमच ने शहर में स्थित 4 सिग्नल बटा०, 80 बटा०, रं० प्र० के-1, के० प्र० का०-1, ग्रुप केन्द्र एवं पुलिस उप-महानिरीक्षक, नीमच के कार्यालयीन कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया । इस कार्यशाला में 14 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री बी० एस० नारंग, सहायक कमांडैन्ट (प्रशासन), ग्रुप केन्द्र, के० रि० पु० बल, नीमच ने किया। राजभाषा नीति और हमारे उत्तरदायित्व, बल की कार्यप्रणाली के अनुरूप टिप्पणियों व पत्राचार शब्दावली, हिंदी वाक्य विन्यास और महानिदेशालय से कार्यशाला के बारे में प्राप्त पाठों की व्यापक जानकारी दी गई। इस कार्यशाला में पर्याप्त व्यावहारिक कार्य भी कराया गया।

85 बटालियन ने तीन आतंकवादी मारे

85 बटालियन, के० रि० पु० बल की 'डी' कम्पनी के जवानों ने 3 मई, 1987 की सुबह को फिरोजपुर के नल्लावाला एवं कालेमवाला जिले के बीच में एक छुटपुट मुठभेड़ में तीन आतंकवादियों को मार डाला। उनमें से एक "बी प्लस" श्रेणी का आतंकवादी था।

टुक पर सवार सड़क पर जा रहे 3 आतंकवादियों को “नाका” ड्यूटी पर तेनात के० रि० पु० बल के कार्मिकों ने रोका।

टुक के रुकते ही आतंकवादियों ने के० रि० पु० बल के जवानों पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दी, जिसका शीघ्र ही जवाबी फायर किया। परिणामस्वरूप 3 आतंकवादी मारे गए।

मृत आतंकवादियों से एक स्टेनगन, दो भरी हुई मैगजीन, 230 राउन्ड्स तथा 15 खाली खोखे बरामद किए गए।

हथियार और गोला-बारुद बरामद

दिनांक 16 अप्रैल, 1987 की सुबह को जब 30 बटालियन, के० रि० पु० बल और पंजाब पुलिस की संयुक्त पार्टी ने कपूरथला में बोअलपुर गाँव में छापा मारा, तब उन्होंने पाँच आदमियों को ट्यूबवेल से निकटवर्ती खेतों की ओर भागते देखा।

छापामारी पार्टी ने उनका पीछा किया और दो को पकड़ लिया जबकि शेष भाग निकले। ट्यूबवेल क्षेत्र के पास ढूँढने पर दो .303 राइफल, एक .315 राइफल, एक 12 बोर की डी.बी.बी.एल. गन, .303 की 156 गोलियाँ, .38 की 60 गोलियाँ, 9 एम. एम. की 55 गोलियाँ, .22 की 16 गोलियाँ और 12 बोर के 27 कारतूस प्राप्त हुए।

कर्नल के घर से हथियार बरामद

दिनांक 18 और 19 अप्रैल, 1987 को अर्धरात्रि के समय 25 बटालियन, के० रि० पु० बल ने एक सेवा-निवृत्त ले० कर्नल के घर अमृतसर में वसन्त एवेन्यू में तलाशी ली। काफी गोला बारुद बरामद हुआ। उनमें से एक 7.8 बेल्जियम राइफल, एक .38 पिस्तौल, एक .32 पिस्तौल, एक अमरीकी कारबाइन, एक 12 बोर एस. बी. गन, दो गन कांटन प्राइमर, रिसट्रिक्टिड नक्शे और अलग-अलग किस्म की हजारों गोलियाँ बरामद हुईं।

भूतपूर्व सेना अधिकारी ले० कर्नल नगेन्द्र सिंह चड्ढा को पुलिस को सौंप दिया गया।

आक्रमणकारी मारे गये

दिनांक 2 अप्रैल, 1987 की सुबह को के० रि० पु० बल की 12 बटालियन की “सी” कम्पनी के कार्मिकों और स्थानीय पुलिस द्वारा पठानकोट में गाँव गौतमपुरा के पास आतंकवादियों से मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में तीन आतंकवादी मारे गए।

आतंकवादियों ने श्री नागरमल महाजन के बन्दूकधारी को मार गिराया और उसकी स्टेनगन लेकर भाग गए। के० रि० पु० बल और स्थानीय पुलिस ने उनका पीछा किया और आपस में मुठभेड़ हो गई।

आतंकवादियों के पास से दो •38 रिवाल्वर, एक 9 एम. एम. पिस्तौल, एक स्टेन, एक हथगोला, 9 एम. एम. की 18 गोलियाँ और कुछ खाली खोखे बरामद हुए।

सी.सु. बल, के० रि० पु० बल, पंजाब पुलिस द्वारा संयुक्त छापामारी करना

दिनांक 4 अप्रैल, 1987 को के० रि० पु० बल की बटालियन ने सीमा सुरक्षा बल और पंजाब पुलिस के साथ मिलकर जिला फरीदकोट में गाँव द्वारकोट में छापामारी की।

हरदीपसिंह नामक आतंकवादी के घर से तीन डी. बी. बी. एल. गन, दो .38 रिवाल्वर, एक 9 एम. एम. पिस्तौल, 189 अलग अलग बोर के गोला-बारूद और 38 खाली खोके बरामद हुए।

आतंकवादी पकड़ा गया

दिनांक 8 अप्रैल, 1987 को अमृतसर में तरनतारन के पास बुलोहक में 48 बटालियन, के०रि०पु० बल और स्थानीय पुलिस ने मुठभेड़ में दो आतंकवादियों को पकड़ लिया।

इनमें से एक राणा प्रताप सिंह था जिसके पकड़ने पर 15,000 रु० का इनाम रखा गया।

उसके कब्जे से एक देशी रिवाल्वर, एक देशी पिस्तौल और कुछ गोला-बारूद बरामद हुआ।

उग्रवादी मारा गया

दिनांक 11 मार्च, 1987 को सायंकाल लुधियाना में गुरू अंगद देव कालोनी के नजदीक 52 बटालियन, के०रि०पु० बल की “ई” कम्पनी के गश्ती दल और उग्रवादियों के बीच गोली-बारी में एक उग्रवादी मारा गया तथा के०रि०पु० बल के दो हेड काँस्टेबल गम्भीर रूप से घायल हो गए।



राम आनन्द राम

गम्भीर रूप से घायल के० रि० पु० बल के उन दो हेड कॉस्टेबलों में से राम आनन्द राम की बाद में मृत्यु हो गई।

छापामारी में हथियार बरामद

दिनांक 4 मई, 1987 सुबह को लुधियाना जिले के गाँव समरला में छापामारी में के० रि० पु० बल के 16 बटालियन की 'बी' कम्पनी के जवानों को एक 12 बोर की डी. बी. बी. एल. गन, एक .303 की भरी हुई राइफल और विभिन्न प्रकार की गोलियाँ बरामद हुई।

छापामारी के दौरान आठ संदिग्ध व्यक्ति पकड़े गए।

आतंकवादी मारा गया

दिनांक 4 मई 1987 की रात को तरन तारन के गांव मलुवाल के पास केनाल रोड पर 48 बटालियन, के० रि० पु० बल के कार्मिकों ने तीन आतंकवादियों पर गोली चलाई। एक आतंकवादी मारा गया। उसके पास से दो विदेशी पिस्तौल बरामद हुई।

तीनों आतंकवादी के० रि० पु० बल गश्ती के पास से दो साइकिलों पर जा रहे थे। उनको रुकने के लिए कहे जाने पर उन्होंने के० रि० पु० बल के कार्मिकों पर गोली चलानी शुरू कर दी।

के० रि० पु० बल ने बदले में गोली चलाई। एक आतंकवादी मारा गया। दो भागने में सफल हो गए।

घात में आतंकवादी मारा गया

5 मई, 1987 को तरन तारन में जौरा पुल पर के० रि० पु० बल एवं सिविल पुलिस के संयुक्त पेट्रोल द्वारा जब दो आतंकवादियों पर घात लगाया गया, तब एक आतंकवादी मारा गया तथा दूसरा भागने में सफल हुआ। के० रि० पु० बल के जवान, 48वीं बटालियन के थे।

शस्त्र व गोला-बारूद बरामद

के० रि० पु० बल की 52वीं बटालियन के कर्मचारियों और केन्द्रीय जांच ब्यूरो की एक टीम ने दिनांक 27 अप्रैल 1987 को लुधियाना के मोहल्ला खुड़ में संयुक्त रूप से छापा मारकर, एक घर से अजनाला के खूंखार आतंकवादी बलबीर सिंह को बन्दी बनाया।

इस आतंकवादी ने 12 फरवरी 1987 को लुधियाना में कुख्यात बैंक डकैती में भाग लिया था, व खालिस्थान कमांडो फोर्स के स्वघोषित जनरल लाभ सिंह का निकट सहयोगी था।

घर से भारी मात्रा में बरामद हुए शस्त्र व गोला-बारूद में एक 9 एम० एम० मशीन कारबाइन, एक 9.64 एम० एम० चीनी एस० एल० आर०, एक सब-मशीन गन, एक

.455 रिवाल्वर, 9 एम० एम० के 240 रौंद, 9.64 चीनो एस० एल० आर० के 165 रौंद, एस० एम० जी० के 61 रौंद, .303 के 55 और थॉमसन के 28 रौंद बरामद हुए। घर से बरामद अन्य वस्तुओं के साथ 1,77,750 रु० नकद तथा एक विदेशी बुलेट प्रूफ जाकेट भी बरामद हुई थी।

के०रि०पु० बल अम्बुश में दो मारे गए

दिनांक 28 मार्च 1987 को सुबह अमृतसर के कटबुदाबाद में के०रि०पु० बल की 49 बटालियन और स्थानीय पुलिस ने एक साथ अम्बुश लगा कर दो आतंकवादियों को मार दिया।

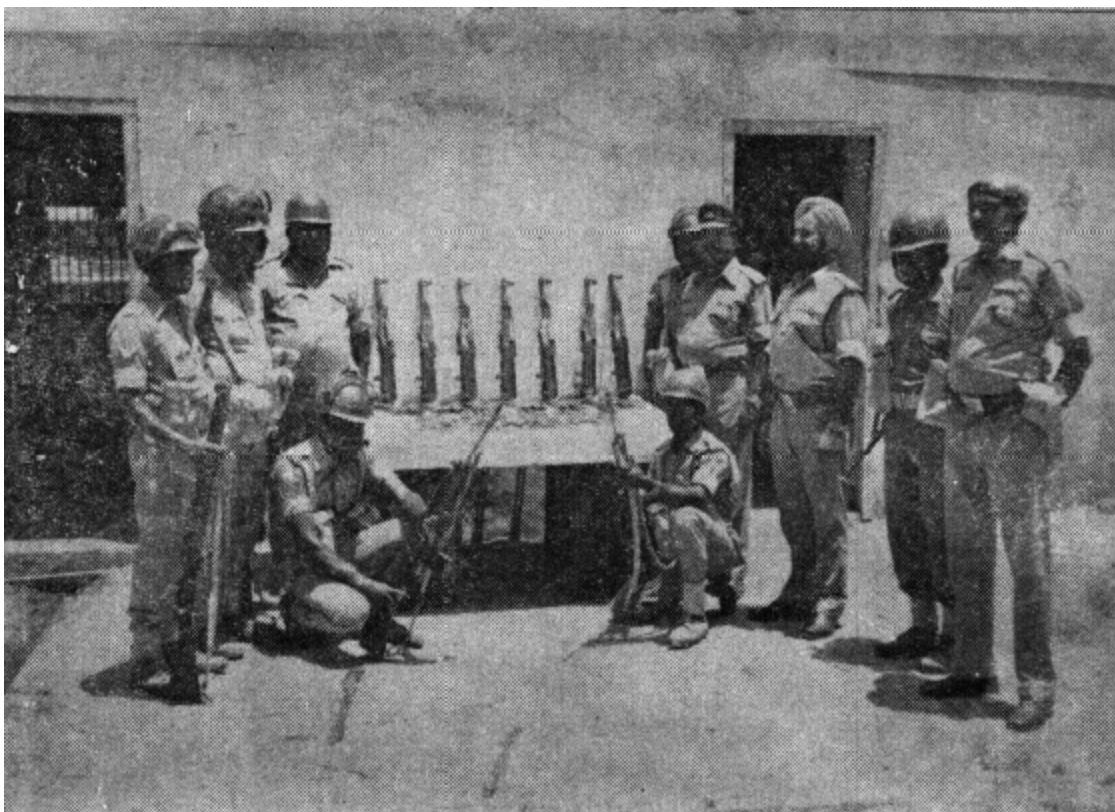
संयुक्त गश्ती पार्टी को जब 4 अज्ञात व्यक्तियों का पता लगा, तो उन्होंने उस क्षेत्र में अम्बुश लगाया। अम्बुश पार्टी द्वारा चेतावनी देने पर उन चार अज्ञात व्यक्तियों ने फायर किया और बचकर भाग निकलने की कोशिश की।

जब संयुक्त अम्बुश पार्टी ने जवाब में गोली चलाई तो दो आतंकवादी मारे गए एवं दो अंधेरे का फायदा उठाते हुए भाग निकले।

मृत व्यक्तियों के पास से एक .32 रिवाल्वर, एक 12 बोर एस. बी. बन्दूक और कुछ गोलियाँ प्राप्त हुई।

बैंक लूटने के बाद आतंकवादी पकड़े गए

दिनांक 1 अप्रैल, 1987 को गुरुदासपुर में लगभग एक घंटे की मुठभेड़ में के० रि० पु० बल के कार्मिकों ने तीन सशस्त्र आतंकवादियों—हरबंस सिंह, जसविन्द्र सिंह और कमलजीत सिंह को पकड़ लिया।



65 बटालियन, के० रि० पु० बल० के कमांडेंट, श्री पी० एस० सायरस अपने उन जवानों के साथ जिन्होंने 11 जून 1987 को 7 एस०एम०जी० और 15 मैगजीन सहित 1170 राउन्ड्स एक ट्रक से बरामद किए। इसी सेक्शन ने 13 जून को तीन आतंकवादियों को मार गिराया।

आतंकवादियों ने पनेयार सूगर मिल के पास बैंक लूट लिया था। बैंक और सूगर मिल के कर्मचारियों द्वारा पीछा करने पर वे भाग निकले।

सूचना प्राप्त होने पर, एस० एस० पी० गुरदासपुर, के० रि० पु० बल के दो सिपाहियों के साथ घटनास्थल पर गए। उसी समय 12 और 27 बटालियन, के० रि० पु० बल के कर्मिक भी पहुंच गए।

काफी गोली-बारी के बाद, सशस्त्र आतंकवादियों को अपने गोला बारूद, दो 12 बोर पिस्तौल, एक .32 रिवाल्वर और नौ .30 सजीव गोलियों सहित समर्पित करने के लिए बाध्य किया गया।

छापामारी में हथियार बरामद

दिनांक 1 अप्रैल, 1987 को के० रि० पु० बल के 16 बटालियन की “सी” कम्पनी ने सिविल पुलिस के साथ मिलकर रोपड़ में चरौन गांव में अजायब सिंह के घर छापा मारा।

छापामारी के दौरान एक .30 अमरीकी कारबाइन 2 मंगजीन सहित, एक .30 स्प्रिंग फील्ड रायफल 5 गोलियों सहित, एक .455 रिवाल्वर 15 गोलियां, सहित 170

सजीव राउन्डस .30 के ओर अमरीकी कारबाइन के 346 गोलेयाँ प्राप्त हुई।

अजायब सिंह को गोलाबारूद सहित स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

19 बटालियन ने आतंकवादी मारे

दिनांक 10 मई 1987 की सुबह के समय अमृतसर के पट्टी क्षेत्र में 19 बटालियन, के० रि० पु० बल के कार्मिकों ने मुठभेड़ में 3 आतंकवादियों को मार गिराया।

निरीक्षक ओम प्रकाश की अध्यक्षता में “डी” कम्पनी, 19 बटालियन, के० रि० पु० बल के जवान तथा स्थानीय पुलिस नबीपुर नदी के पुल के पास नाकाबन्दी पर तैनात थे कि उसी समय कुछ आतंकवादियों के गिरोह ने नदी की दूसरी तरफ से गोलियाँ चलाई। के० रि० पु० बल ने आक्रमण के प्रतिशोध में 3 आतंकवादियों को मार गिराया और कुछ आदमी अंधेरे की आड़ में भाग गए।

मृत व्यक्तियों के पास से एक .303 राइफल, एक डी. बी. बी. एल. गन, एक 12 बोर पिस्तौल, .303 की 140 गोलियाँ 14 सजीव 12 बोर के कारतूस और कुछ खाली खोखे बरामद हुए।

नई खोजें

(प्रस्तोता—कांस्टेबल साहबसिंह, ग्रुप केन्द्र-II, अजमेर)

- पश्चिम जर्मनी ने एक ऐसी कार का आविष्कार किया है जो 16 पहियों पर चलती है और 10 मीटर लम्बी है। इसमें एक छोटा तालाब, 10 टेलीफोन तथा हेलीकाप्टर की भी व्यवस्था है।
- ब्रिटेन ने एक ऐसी मोटर कार बनाई है, जो बैटरी से चलती है। यह 5 पैसे से कम कीमत में 20 मील जाती है। इसका मूल्य केवल 3.99 पौण्ड है।
- बम्बई के एक इंजीनियर ने एक ऐसे कागज का आविष्कार किया है जो जलाने पर नहीं जलता है। इसके प्रयोग से, महत्वपूर्ण दस्तावेजों को जलने से बचाया जा सकता है।
- जापान ने एक ऐसी रेलगाड़ी बनायी है, जिसमें न तो पहिये होते हैं और न तो बिछी पटरियों को कभी छूती हैं।

हिन्दी प्रयोग के लिए पुरस्कार

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने 1986 में अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन किया।

इस प्रतियोगिता में श्री अशोक कुमार कथूरिया, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक, ग्रुप-केन्द्र-1, अजमेर को उनके कार्यालय में हिन्दी में किए गए उत्कृष्ट कामकाज के लिए “अधिकारी पुरस्कार” से दूसरी बार सम्मानित किया गया।



अशोक कुमार कथूरिया

इससे पूर्व, इन्हें 1985 में आयोजित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट कामकाज के लिए सम्मानित किया गया।

दिनांक 27 मार्च, 1987 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में उन्हें 51 रु० का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।



हवलदार साहब, क्या आप यह कुछ समय के लिए मुझे देंगे।
मेरी पत्नी का मिज़ाज कुछ गर्म है।

प्राथमिक उपचार प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल के जवानों का सुन्दर प्रदर्शन

दिल्ली का प्रतिनिधित्व करते हुए, के० रि० पु० बल ने कटक में दिनांक 15 जून से 19 जून, 1987 तक आयोजित 8वीं अखिल भारतीय एम्बुलेंस प्राथमिक उपचार प्रतियोगिता में भाग लिया।

पुलिस एम्बुलेंस सैक्शन में के० रि० पु० बल के हवलदार हीरा लाल, लांस नायक जगतसिंह तथा कांस्टेबल लेखराज, कैलाशचन्द और राजेन्दर कुमार 693 अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान पर रहे। उड़ीसा एक अंक से आगे रहा। उत्तर प्रदेश 660 अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहा। टीम के कप्तान हवलदार हीरा लाल ने 75 अंकों में से 64 अंक प्राप्त कर व्यक्तिगत कांस्य पदक के लिए जीत पक्की की।

किशोर एम्बुलेंस वर्ग में के० रि० पु० बल के तीन जवानों ने दिल्ली का प्रतिनिधित्व

किया। 800 अंकों में से 682 अंक प्राप्त कर, टीम चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती। सिपाही आर० सी० तिवारी ने 72 अंकों के साथ व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीता। लांस नायक प्रहलाद सिंह ने कांस्य पदक जीता। सिपाही वी० एस० ससने तीसरा सदस्य था जिसने पदक जीतने में टीम की मदद की।



के० रि० पु० बल की प्राथमिक उपचार (फस्ट एड्) की टीम



2 मई 1987 को अजमेर में हुई अन्तररेंज हाकी फाइनल्स का एक दृश्य। इसमें हैदराबाद रेंज ने मद्रास को हराया और चैम्पियनशिप ट्राफी जीती।

इस प्रतियोगिता में देश के कोने कोने की टीमों ने भाग लिया तथा इसका आयोजन उड़ीसा की सेंट जान एम्बुलेंस ब्रिगेड द्वारा किया गया था।

शूटिंग में पटना विजई

जून 1981 में नीमच में हुई अन्तर-रेंज शूटिंग प्रतियोगिताओं में पटना रेंज 2712 अंकों से विजयी रहा। दिल्ली रेंज (2691) और नीमच रेंज (2678) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थानों पर रहे।

राइफल प्रतियोगिताओं में पटना रेंज 1619 अंक प्राप्त कर पहले स्थान पर रहा। मद्रास रेंज 1475 और अजमेर रेंज 1379 अंकों से अगले दो स्थान पर रहे।

दिली रज पिस्तौल प्रतियोगिताओं में आगे रहा। उसके कुल 1341 अंक जुड़े। नीमच रेंज 35 अंकों से पिछड़ कर दूसरे स्थान पर रहा और हैदराबाद रेंज कुल 1133 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा।

श्रीमती इन्द्रा सिंह ने पुरस्कार वितरण किये।

श्री ढिल्लन विदेश गये

इस वर्ष मई/जून के दौरान श्री तजिन्द्र सिंह ढिल्लन, सहायक कमांडेंट, के०रि०पु०बल, एक महीने की लम्बी शूटिंग ट्रेनिंग के लिए अमेरिका गए।

वे प्रासेद्ध अमारेकी कोच, डोवेड बी लैमन द्वारा प्राशाक्षेत किए गए।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के ंरि०पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

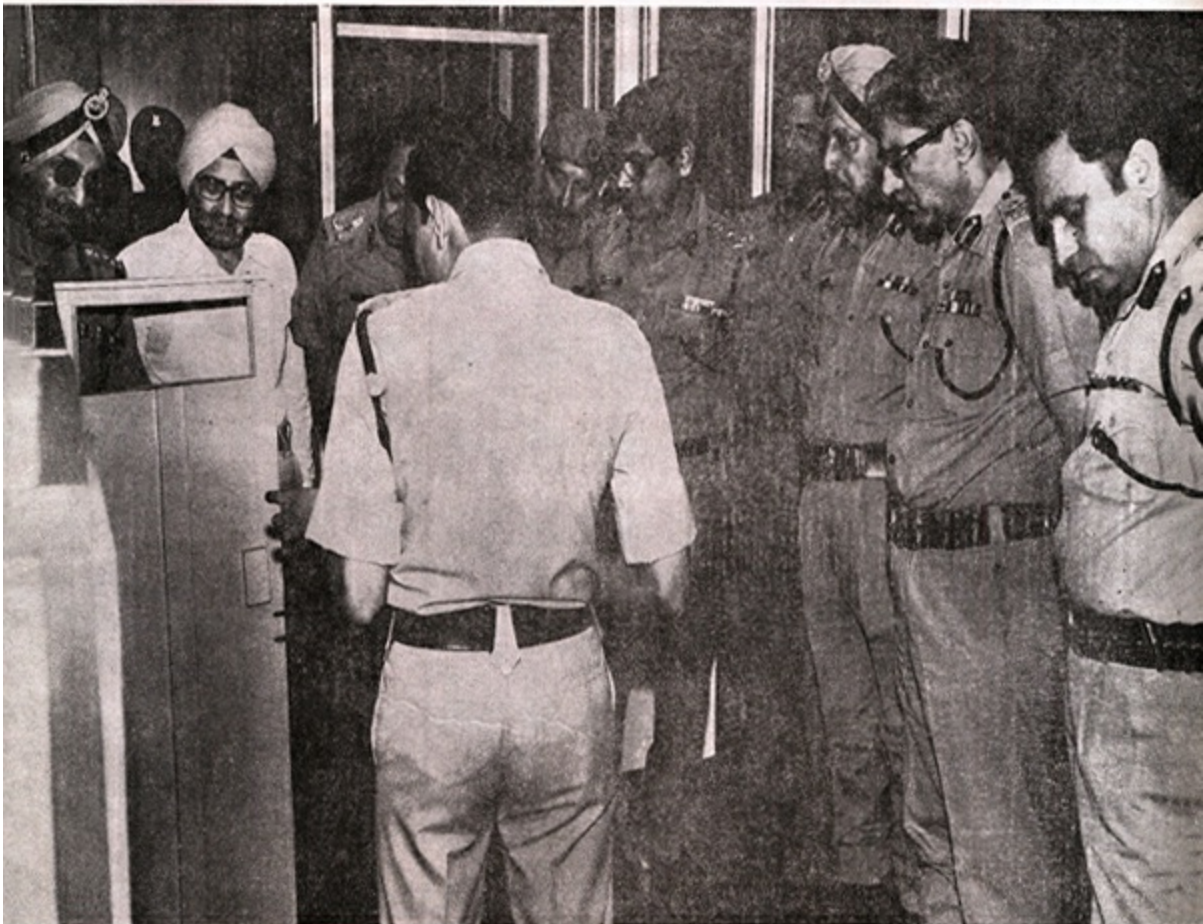
खंड 1

अंक, 3

मूल्य : 1.60 रुपये

31 अगस्त, 1987

9 भाद्रपद, शक संवत् 1909



कंप्यूटर पर आधारित आटोमैटिक मैसेज स्विचिंग सिस्टम 'आटोमैक्स' का निरीक्षण करते के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय और महानिदेशालय के अन्य उच्च अधिकारी ।

के०रि०पु० बल के लिए बढ़िया संचार व्यवस्था

आधुनिकीकरण की ओर एक और कदम बढ़ाते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कम्प्यूटर पर आधारित आटोमैटिक मैसेज स्विचिंग सिस्टम की स्थापना की है, जिसे आटोमैक्स के नाम से जाना जाता है।

के०रि०पु० बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय ने 3 अगस्त, 1987 को महानिदेशालय में इस सिस्टम का शुभारंभ किया।

इस यंत्र की स्थापना होने से, संदेश भेजने में अब किसी प्रकार का विलम्ब तथा मानवीय त्रुटियों की सम्भावना खत्म हो गई है। यह यंत्र देश के सभी कोनों से समाचार प्राप्त करने, संचित करने तथा भारत भर में गंतव्य स्थान को वरीयतानुसार स्वतः भेजने में समर्थ है।

इस अवसर पर ब्रिगेडियर जोगिंदर सिंह उप निदेशक (संचार), के०रि०पु० बल ने बताया कि इस प्रकार के आटोमैक्स सिस्टम अब दिल्ली, कलकत्ता, हैदराबाद शिलांग और चंडीगढ़ स्थित सभी सैक्टर मुख्यालयों में स्थापित किए जायेंगे।

आवरण छाया :

डी० एन० तिवारी

साम्प्रदायिकता के खिलाफ जेहाद

जुलाई माह में के० रि० पु० बल महानिदेशालय से जारी किये गए एक परिपत्र आदेश में के० रि० पु० बल के जवानों को समाज में फैले साम्प्रदायिकता के जहर से दूर रखने के लिए निर्देश दिए गए हैं। इस के लिए जवानों में न केवल अपनी ड्यूटी के ही वक्त निष्पक्ष, धर्मनिरपेक्ष, सदाचारी तथा सांप्रदायिकता की भावना से दूर रहने की प्रेरणा का संचार करना है, अपितु अपने वास्तविक जीवन में भी उन्हें, इन गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करना है।

बटालियनों के कमांडेन्ट अपने अधीन अधिकारियों व कर्मचारियों की मार्फत जवानों को लगातार समझाएंगे कि पंजाब में हमारी लड़ाई आतंकवादियों के खिलाफ है न कि किसी संप्रदाय विशेष के। संपूर्ण संप्रदाय को आतंकवादियों से जोड़कर देखना न केवल व्यवहारिक रूप से ही गलत है, अपितु इससे प्रतिहिंसा की भावना को भी बल मिलता है।

भूल सुधार

सी० आर० पी० एफ० समाचार 30 जून, 1987 अंक में पृष्ठ 4 पर छपी 'भारत का अभिमान' नामक कविता के रचयिता श्री वी० एस० वर्मा हैं। कविता में भूलवश श्री एम० डी० वर्मा का नाम छप गया है जिसके लिए हमें खेद है।

-सम्पादक

हमें अपने अन्तर में छिपी सांप्रदायिक भावना को भी न केवल पहचानना है, अपितु उसे भी जड़ से समाप्त करना है।

अगर हम अपने हृदयों में सांप्रदायिकता को जरा सा भी स्थान देते हैं, अपने मस्तिष्क को इस दिशा में अग्रसर करते हैं, तो हम आतंकवादियों के ही मार्ग का अनुसरण करते हैं, और यही आतंकवादी चाहते हैं।

हमारा बल सांप्रदायिक सद्भाव व राष्ट्रीय एकता की एक शानदार मिसाल है जिसे हमें हर कीमत पर अक्षुण्ण रखना है।

सांप्रदायिक सद्भाव की भावना को बनाए रखने के लिए नाकाबंदियों आदि पर जांच के समय सिखों व गैर सिखों के प्रति व्यवहार में किसी प्रकार की असमानता नहीं होनी चाहिए। न ही जांच के दौरान संप्रदाय विशेष के लोगों पर अतिरिक्त समय लगायेंगे। किसी के भी प्रति, विशेषकर सिख लोगों के प्रति रुखे व्यवहार से बचना चाहिए, अपितु उनके प्रति अतिरिक्त उदारता दिखानी चाहिए, और यह काम बिना अपने कार्य में असावधानी बरते भी काफी अच्छी तरह से किया जा सकता है।

अनावश्यक बातों से कार्य के दौरान व बाद में भी बचना चाहिए।

अगर आतंकवादियों के हाथों हमारे आदमियों को किसी प्रकार का कोई भी नुकसान पहुंचता है, तो निर्दोष नागरिकों के प्रति किसी भी प्रकार की बदले की या तिरष्कारपूर्ण कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए।

इस आदेश में जवानों को निर्देश दिया गया है कि अपने कार्य क्षेत्र में किसी प्रकार का आतिथ्य स्वीकार न करें, और साथ ही किसी से अत्याधिक प्रगाढ़ व पारिवारिक संबंध बनाने से बचें।

लम्बी ड्यूटी या आतंकवादियों की किसी गतिविधि के कारण उत्पन्न तनाव से हमें अपना मानसिक संतुलन नहीं खोना है। और न ही इसके परिणामस्वरूप मासूम नागरिकों के विरुद्ध किसी प्रकार की कोई कार्रवाई करनी है।

धार्मिक भावनाओं, परंपराओं व स्थानों के प्रति हमें सहिष्णु रहना है। धार्मिक स्थानों पर न तो कभी धूम्रपान करना है, न यहाँ जूतों सहित प्रवेश करना है।

के०रि०पु० बल फोटोग्राफी प्रतियोगिता

के० रि० पु० बल के कर्मिकों और उनके परिवार से जुड़े लोगों के बीच फोटोग्राफी को प्रोत्साहन देने के लिए हमेशा की तरह इस वर्ष भी के०रि०पु० बल द्वारा एक फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए ग्लोजी पेपर पर लिए गए 6"x9" प्राकार के फोटोग्राफ 15 अक्टूबर, 1987 तक जन संपर्क अधिकारी के०रि०पु० बल महानिदेशा लय, ब्लॉक I सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 के पते पर भेजे जा सकते हैं।

फोटोग्राफ किसी भी विषय पर भेजे जा सकते हैं, लेकिन के०रि०पु० बल तथा उसकी भूमिका से जुड़े विषयों के फोटोग्राफों को प्राथमिकता दी जाएगी।

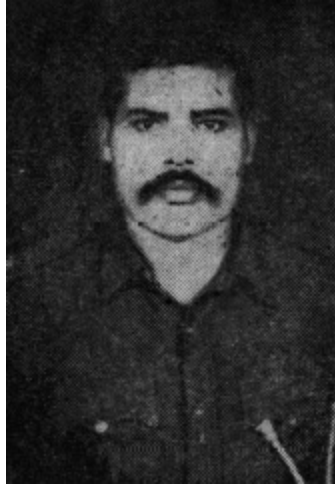
सर्वश्रेष्ठ छायाचित्रों को 300, 200 तथा 100 रुपए के पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा।

गौरव गाथा

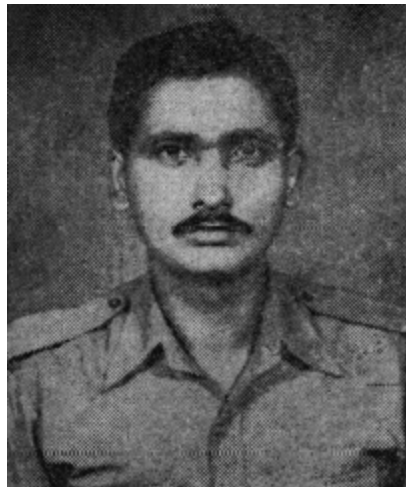
**राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित के०रि०पु० बल
कार्मिक**



उपाधीक्षक एच.एस. रावत



कां० समसुद्दीन



कां० रहीसुद्दीन

के० रि० पु० बल को 23वीं बटालियन के उपाधीक्षक एच० एस० रावत, कांस्टेबल रहीसुद्दीन, कांस्टेबल समसुद्दीन तथा कांस्टेबल बच्चालाल भारती को आतंकवादियों के विरुद्ध संघर्ष में दिखाई गई अनुकरणीय सूझबूझ कर्तव्यनिष्ठा व दिलेरी के लिए शौर्यवीरता के राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

23 जनवरी, 1987 को के० रि० पु० बल की 23वीं बटालियन के उपाधीक्षक एच० एस० रावत को फतेह बोरा गाँव के क्षेत्र में आतंकवादियों की छानबीन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। एच० एस० रावत ने अपनी दो प्लाटूनों के साथ पूरे गाँव का घेरा डाल दिया। तथा तीसरी प्लाटून का नेतृत्व स्वयं संभाले हुए गाँव के अन्त में बसे 3-4 घरों से तलाशी की कार्रवाई में जुट गए। तलाशी के दौरान उन्हें बताया गया कि गांव के दूसरे छोर पर कुछ आतंकवादी गोला बारूद के साथ छिपे हुए हैं। श्री रावत तत्काल अपने सहयोगियों के साथ निर्दिष्ट घर की तरफ कूच कर गए। घर के आंगन में एक औरत के दिखाई देने पर उन्होंने उससे पूछा कि क्या घर में कोई मर्द है। इस पर उस औरत ने इनकार कर दिया। इसी दौरान घर के अन्दर से अनेक दिशाओं में फायर किए जाने लगे। श्री रावत तथा उनके सहयोगियों ने तत्काल पोजीशन ले ली तथा जवाब में फायर कर दिया साथ ही उन्होंने अपने सहयोगियों को घर को घेरते हुए पोजीशन लेकर फायर करने का आदेश दिया।

कांस्टेबल समसुद्दीन उस कमरे तक पहुंचने में सफल हो गया जहाँ से फायरिंग की जा रही थी। अपनी रायफल के बट से उसने उस कमरे की कच्ची दीवार में एक छेद कर दिया। लेकिन इस सारी कार्रवाई के दौरान उसका सीना, बाहें व टांगें मकान के अन्दर से चलाई जा रही गोलियों से बुरी तरह जखमी हो गईं, लेकिन समसुद्दीन इतना घायल होने के बावजूद लगातार अन्दर फायरिंग करता रहा, जिसके परिणामस्वरूप मकान के अन्दर से फायरिंग होना बन्द हो गई।

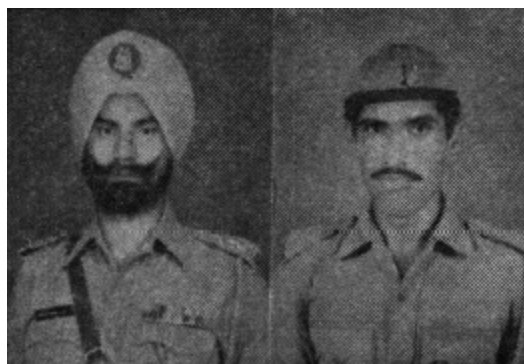
इसी दौरान घर से बाहर पोजीशन लिए हुए कांस्टेबल रहीसुद्दीन तथा कांस्टेबल बच्चा लाल भारती भी बुरी तरह से घायल हो चुके थे। रहीसुद्दीन के सिर व बाएं हाथ पर तथा बच्चालाल के सिर तथा कंधे पर चोटें आई थीं, लगातार खून बहने के बावजूद ये जवान मोर्चा सम्भाले हुए थे। इन दोनों जवानों ने देखा कि एक आतंकवादी दूसरी तरफ चारदीवारी की आड़ लेता हुआ फायरिंग कर रहा है। ये दोनों बिना एक क्षण गंवाए चारदीवारी के अन्दर कूद गए। पुलिस वालों को देखकर आतंकवादी उन पर गोली चलाने की कोशिश कर ही रहा था कि कां० रहीसुद्दीन और भारती ने, ने उस पर फायर कर दिया, परिणामतः वह आतंकवादी मारा गया।

अब फायरिंग कमरे के अन्दर से केवल एक ही दिशा में हो रही थी। श्री रावत जो अब तक पूरी कार्रवाई का निर्देशन व संचालन कर रहे थे, अपने कुछ साथियों के साथ कमरे के अन्दर कूद पड़े। उनके कमरे में घुसते ही आतंकवादी ने उन पर फायर किया, लेकिन श्री रावत बच निकले। श्री रावत ने तत्काल आतंकवादी पर अपनी पिस्तौल से फायर किया और इस प्रकार वह आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारा गया।

इसके बाद पुलिस पार्टी ने व्यापक छानबीन की तथा घटनास्थल से भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया। इस मुठभेड़ में तीन आतंकवादी मारे गए जिनकी बाद में संतोख सिंह उर्फ सुक्खा, बोहर सिंह उर्फ बोहरा तथा बलदेवसिंह के रूप में शिनाख्त कर ली गई।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित के० रि० पु० बल के कार्मिक

आतंकवादियों से हुई एक मुठभेड़ में दिखाई गई दिलेरी, सूझबूझ व ऊँची प्रति समर्पण की भावना के लिए के० रि० पु० बल की 12वीं बटालियन के सब-इन्स्पेक्टर मोहनसिंह, नायक पार० बी० गायकवाड़ तथा कांस्टेबल सिराजुल हक को शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।



स०उ०नि० मोहन सिंह का० सिराजुलहक

13 अप्रैल, 1986 को लगभग 6.15 बजे के० रि० पु० बल की 12वीं बटालियन की एक टुकड़ी सब-इन्स्पेक्टर मोहन सिंह के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस के साथ कलानौर पुलिस स्टेशन से सटे इलाके में गश्त पर थी।

जब यह पेट्रोल पार्टी सहारी गांव के पास पहुंची तो उन्हें सामने से आती हुई एक जीप दिखाई दी। पेट्रोल पार्टी ने अपने वाहन रोक कर सामने से आती जीप की तलाशी लेने के लिए पोजीशन ले ली। सामने से आती जीप गश्ती दल से थोड़े फासले रुकी और उसमें से दो युवक नीचे उतर कर गश्ती दल पर फायरिंग करने लगे। जवाब में पुलिस बल द्वारा भी गोली चलाई गई। लगभग आधे घंटे की फायरिंग के बाद के० रि० पु० बल के जवान आतंकवादियों पर काबू पाने में सफल हो गए।

इस मुठभेड़ में के० रि० पु० बल के सब-इन्स्पेक्टर मोहनसिंह, नायक आर० बी० गायकवाड़ तथा कांस्टेबल सिराजुल हक ने तत्काल कार्रवाई व अनुकरणीय साहस व सूझबूझ का परिचय दिया। इस मुठभेड़ के परिणामस्वरूप दो आतंकवादियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा तथा दो ने पुलिस पार्टी के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। गिरफ्तार व मृत आतंकवादियों से भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया गया।

पुरुषार्थ परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने में है।

-महात्मा गाँधी

जहां मिथ्याभिमान है वहीं पाप है।

-महात्मा गाँधी

मनुष्य ठीक उसी मात्रा में महान बनता है, जिस मात्रा में वह मानव मात्र के लिए श्रम करता है।

-अज्ञात

“परिश्रम से कमाया धन और उसका सदुपयोग बहुत बड़ी नियामत है।”
साहसी व्यक्ति विश्वासी होता है।

-सिसरो

मनोरंजन

नाव में यात्रा करते समय एक पंडितजी ने नाविक से कहा, “तुम्हें वेद का ज्ञान है। नाविक ने कहा, “नहीं”।

“तो फिर तुम्हारी एक चौथाई जिंदगी बेकार है। अच्छा बतायो गीता का ज्ञान है ?”
“नहीं”।

“तो फिर तुम्हारी आधी जिंदगी बेकार है।”

थोड़ी देर में तेज हवा से नाव डगम गाने लगी, तो नाविक ने पंडित जी से पूछा,
“आपको तैरने का ज्ञान है,” तो पंडित जी ने कहा, “नहीं”।

“तो आपकी पूरी जिंदगी बेकार है”। नाविक ने मुस्करा कर कहा।

जज-आप यह दावा कैसे कर सकती हैं कि रेल के दरवाजे से कटी आपकी अंगुली 50 हजार की है।

औरत-साहब ! मैं उसी अंगुली के इशारे पर अपने लखपति पति को नचाया करती थी।

जज-तुमने नकली सिक्के क्यों बनाए ?

अपराधी-हजूर, मैंने तो असली ही बनाए थे, लेकिन आप लोग उन्हें नकली कह रहे हैं।

अजनबी-भाई साहब, जब बस क्वाट प्लेस पहुँचने को हो तो मुझे बता दीजिए।

सहयात्री-जरूर, जिस स्टाप पर मैं उतरूँ तुम उससे दो स्टाप पहले उतर जाना।
ज्योतिषि- तुम्हारा भाग्य तो बहुत अच्छा है, पर कुछ दिनों में मुसीबत आ सकती है।

युवक-जी हाँ, दो एक दिनों में मेरी बीवी आ रही है।

एक साहब एक जनरल स्टोर में गए और एक सिगरेट का पैकेट खरीदा। जब वह एक सिगरेट निकाल कर जलाने लगे तो दुकान का नौकर बोला, “आप यहाँ सिगरेट नहीं पी सकते”, इस पर वह साहब बोले, “कमाल है आप सिगरेट बेचते हैं, पर पीने से मना करते हैं।”

“जी बेचने को तो हम नहाने का साबुन भी बेचते हैं, पर इसका मतलब यह नहीं कि आप यहीं नहाने लग जायें।”

देवेन्द्र की स्टेशनरी की दुकान है। एक दिन उसकी दुकान एक हकला ग्राहक आया और बोला, “क्या आपके पास पें...पें...पें पेंसिल होगी?”

“जी हाँ, होगी, लेकिन इतनी लम्बी नहीं, देवेन्द्र ने जवाब दिया।

उठो धरा के

वीर सिपाही

-कमला थापा

उठो धरा के वीर सिपाही,
विजय तुम्हें बुला रही है।
कर दो तन मन से सेवा
आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी,
है उम्मीद तुमसे वीर सपूतो,
कर दो बंद भ्रष्टाचार को,
मिल जुल कर आगे बढ़कर
उठो धरा के वीर सिपाही,
विजय तुम्हें बुला रही है ॥ 1 ॥

नहीं सुविधा के तुम को अवसर
रहते हैं फिर भी काम पर तत्पर,

भारत मां के गौरवशाली,
हैं तुम पर गर्वित हम भारत वासी,
उठो धरा के वीर सिपाही,
विजय तुम्हें बुला रही है । 2।

नहीं जात पात का भेद-भाव,
रहते हैं हम फिर भी प्रेम भाव,
यही सी. आर. पी. का रूप है,
सच्ची सेवा सच्चे प्रेम का स्वरूप है,
उठो धरा के वीर सिपाही,
विजय तुम्हें बुला रही है । 3।

पंजाब से

आतंकवादी गिरफ्तार

5 जुलाई '87 को लगभग 3.30 बजे ए/24 के एक सेक्शन ने स्थानीय पुलिस के साथ मन्ना नाम के आतंकवादी को थोड़ी देर की फायरिंग के बाद गिरफ्तार किया। एक 12 बोर की बंदूक एक जीवित तथा खाली कारतूस आतंकवादी से बरामद किए गए।

आतंकवादी से पिस्तौल बरामद

9 जुलाई '87, को 'बी' कम्पनी, 24 बटालियन के० रि० पु० बल के एक सेक्शन तथा स्थानीय पुलिस द्वारा लगाए गए एक नाके के दौरान चुचावल साकी गाँव के पुल के पास से कश्मीर सिंह नाम के आतंकवादी को गिरफ्तार कर उससे एक 12 बोर की पिस्तौल दो कारतूसों के साथ बरामद की गई।

कुख्यात आतंकवादी कब्जे में

12 जुलाई '87 को लगभग 9.30 बजे के० रि० पु० बल की एक टुकड़ी ने स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर एक हथियार बंद गिरोह को चुनौती दी। जवाब में गिरोह ने सुरक्षा बल पर फायर किया। थोड़ी देर की फायरिंग के बाद दो कुख्यात

आतंकवादियों कुलदीप सिंह तथा गुरनाम सिंह उर्फ गामा को गिरफ्तार कर लिया गया। इनके पास से एक 12 बोर की पिस्तौल, चार 12 बोर के जीवित कारतूस, पाँच .303 के जीवित राउंड, पाठ 9 एम. एम. जीवित राउंड, दो .315 के जीवित राउंड, चार 9 एम. एम. के खाली केस तथा तीन 12 बोर के खाली केस बरामद किए गए।

दो नामी उग्रवादी पकड़े

21 जुलाई '87 को रात को लगभग 9 बजे 24 बटालियन की एक टुकड़ी ने स्थानीय पुलिस के साथ दो नामी आतंकवादियों गुरमीतसिंह तथा बलविंदर सिंह उर्फ काला को एक भरी हुई .303 पिस्तौल, .303 के 6 जीवित राउंड 12 बोर के चार जीवित राउंड, 9 एम. एम. के सात जीवित राउंड तथा .315 के चार जीवित राउंड के साथ गिरफ्तार किया।

दो आतंकवादी मारे गए

4 जुलाई '87 को मीरपुर जट्टां ग्राम क्षेत्र से आतंकवादी गतिविधियों का समाचार मिलने पर के० रि० पु० की 32 बटालियन की एक कम्पनी के दो सेक्शनों ने इन्स्पेक्टर एस. बी. खत्री तथा एस. एच. ओ. नवन शहर के नेतृत्व में जट्टां क्षेत्र में मजूर पुल से ऊपर मोर्चा बांधा। प्रातः 3.30 बजे के करीब मीरपुर जट्टा गांव की तरफ से तीन व्यक्ति साइकिल पर आते दिखाई दिए, जब उन्हें रुकने के लिए कहा गया तो वे साइकिल छोड़कर खेतों की तरफ भाग खड़े हुए तथा पुलिस बल पर फायर करने लगे। जवाब में जब पुलिस बल की तरफ से फायर किए गए तो दो आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारे गए व एक अंधेरे व खेतों का लाभ उठा कर भाग निकला। मृत आतंकवादियों से दो .32 बोर के रिवाल्वर, छः .32 के राउंडस, 5 खाली केस तथा एक साइकिल बरामद की गई।

कुख्यात आतंकवादी का सफाया

16 जुलाई '87 को प्रातः 7.30 बजे राममंडी क्षेत्र में कुछ कुख्यात आतंकवादियों के होने का समाचार पाकर के० रि० पु० बल की 2(वीं) बटालियन की 'बी' कम्पनी का एक दस्ता उप-अधीक्षक पी० एस० चरक के नेतृत्व में गढ़शंकर के एस० एस० पी० गोयल के साथ दो कारों में सवार होकर जालंधर की ओर चल पड़ा।

जालंधर के बाहरी छोर पर राम मंडी के नजदीक एक रेलवे क्रासिंग के पास इस दल ने दो आतंकवादियों को घेर लिया। इनमें एक आतंकवादी भूरी पगड़ी में तथा दूसरा खाकी पगड़ी में था, भूरी पगड़ी वाला आतंकवादी एक कुख्यात आतंकवादी था तथा उसके सिर पर 50,000 रुपए का इनाम भी था। जब इन आतंकवादियों ने दो कारों से पुलिस दल को अपने हथियारों के साथ निकलते देखा तो दोनों ही विपरीत दिशा की ओर भागने लगे। खाकी पगड़ी वाला आतंकवादी रेलवे लाइन के साथ-साथ भागने लगा तो भूरी पगड़ी वाला रेलवे लाइन को पार कर रेलवे कालोनी की ओर भागने लगा। मेघराज, लांस नायक बावा सिंह व लांस नायक हुकुमसिंह आतंकवादी

के पीछे भागे। दल के बाकी लोग दूसरे आतंकवादियों का पीछा करने लगे।

भूरी पगड़ी वाले आतंकवादी ने अपने पीछे आते मेघराज व उनके साथियों पर तीन बार फायर किया, लेकिन मेघराज व उनके साथियों को किसी प्रकार की चोट नहीं लगी। भारी भीड़-भाड़ वाले इलाके को देखते हुए मेघराज ने आतंकवादी पर गोली नहीं चलाई। अपनी जान की परवाह न करते हुए वे लगातार आतंकवादी का पीछा करते रहे, जैसे ही आतंकवादी एक छोटी गली की ओर मुड़ा मेघराज ने मौका देखकर 10 गज की दूरी से अपनी स्टेनगन से उस पर फायर कर दिया। आतंकवादी की टांगों व पीठ पर गोलियाँ लगीं, इसके बावजूद वह भागता रहा और आगे चलकर एक घर के पिछवाड़े का सहारा लेकर फरार होने का प्रयास करने लगा। इस मौके पर बावा सिंह इमारत के एक कोने में उसका रास्ता रोकने के लिए पोजिशन लेकर खड़े हो गए। इसी बीच आतंकवादी धीरे-धीरे अपने पीछे आते मेघराज व हुकुमसिंह पर गोली चलाने के लिए घूमा, लेकिन उसके घूमते ही मेघराज ने अपनी स्टेनगन से उस पर फायर कर दिया, जिससे छाती पर गोलियाँ लगने से आतंकवादी की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई।

श्री पी० एस० चरक तथा श्री गोयल के घटनास्थल पर पहुंचने के बाद पूरे इलाके की तलाशी ली गई। मृत आतंकवादी से .38 रिवाल्वर, 3 खाली व 2 जीवित राउंड्स बरामद हुए, मृत आतंकवादी 'बी' श्रेणी का कुख्यात आतंकवादी रतनसिंह था।

दो आतंकवादी पकड़े

दिनांक 21 जुलाई '87 को प्रातः 4 बजे के करीब के०रि०पु० बल और पंजाब पुलिस के एक संयुक्त दस्ते का सामना अमृतसर जिले के पलगौरा गाँव के नजदीक चार आतंकवादियों से हुआ। नाका पार्टी द्वारा ललकारे जाने पर दूसरी ओर से गोलीबारी की जाने लगी। संयुक्त दस्ते ने साहस व दृढ़ता का परिचय देते हुए जवाबी फायर किए, तो दो आतंकवादियों ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए आत्मसमर्पण कर दिया व दो अंधेरे का फायदा उठाते हुए भाग निकले।

पकड़े गए आतंकवादियों—बलजीतसिंह व काबुलसिंह से देसी पिस्तौलें व गोला बारूद बरामद किया गया। बच कर भागे हुए आतंकवादियों में से गुरनाम सिंह नाम के आतंकवादी ने 24 जुलाई को एक .32 रिवाल्वर सहित आत्मसमर्पण कर दिया।

आतंकवादियों से मुठभेड़

4 अगस्त, 1987 की सुबह अजनाला में के०रि०पु० बल की 24वीं बटालियन की 'बी' कम्पनी तथा स्थानीय पुलिस द्वारा लगाई एक नाकाबंदी में अनेक हत्याओं और अन्य वारदातों के लिए जिम्मेदार कुख्यात आतंकवादी लखबीर सिंह मारा गया।

लखबीर सिंह एक अन्य व्यक्ति के साथ स्कूटर पर जा रहा था, जब उन्हें सुरक्षा कर्मियों द्वारा ललकारा गया तो उन्होंने सुरक्षाकर्मियों पर फायर कर दिया। थोड़ी सी मुठभेड़ के बाद ही लखबीर सिंह घटना स्थल पर ही मारा गया और दूसरा व्यक्ति

अंधरे का लाभ उठा कर भागने में सफल हो गया।

मृत आतंकवादी से एक .38 रिवाल्वर तथा छः .38 राउण्ड बरामद किए गए।

दो आतंकवादी गिरफ्तार

अजनाला में स्थित 24वीं बटालियन के० रि० पु० बल तथा स्थानीय पुलिस की एक टुकड़ी द्वारा 4 अगस्त 1987 को करमसिंह तथा सोहन सिंह नामक दो आतंकवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया। एक 12 बोर की पिस्तौल तथा 12 बोर के 6 कारतूस उनसे बरामद किए गए।

हथियारों सहित उग्रवादी गिरफ्तार

के० रि० पु० बल की 24वीं बटालियन की 'डी' कम्पनी तथा स्थानीय पुलिस की एक टुकड़ी ने अजनाला में 18 अगस्त 1987 को दो आतंकवादियों—अजीतसिंह जाट तथा गोपाल मसीह को गिरफ्तार कर एक .303 की पिस्तौल, .303 के 5 राउण्ड, .315 राउण्ड तथा 12 बोर के तीन कारतूस बरामद किए।

आतंकवादी गिरफ्तार

दिनांक 26 अगस्त 1987 को 24वीं बटालियन की 'डी' कम्पनी तथा स्थानीय पुलिस द्वारा अजनाला में सोपियाँ पुल पर लगाए गए नाके के दौरान जरनैलसिंह तथा जोगिंदरसिंह नामक दो आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। उनसे एक पाकिस्तान निर्मित ए बी बी एल बंदूक 5 जीवित राउण्ड सहित तथा एक 12 बोर की पिस्तौल 3 जीवित कारतूसों के साथ बरामद की गई।

चार आतंकवादी गिरफ्तार

के० रि० पु० बल की 28वीं बटालियन की एक टुकड़ी ने 16, 17 जुलाई 1987 की मध्यरात्रि को होशियारपुर जिले के उधमसिंह पार्क से चार संदिग्ध आतंकवादियों को एक छापामार कार्रवाई के दौरान गिरफ्तार कर लिया। बाद में चारों आतंकवादियों की जसवन्त सिंह चौहान, सुरेन्द्र सिंह मेलावल, रविंदर सिंह लाडी तथा बिट्टू के रूप में शिनाख्त हो गई। चारों आतंकवादी अपनी किसी योजना को मूर्त रूप देने के लिए योजना बना रहे थे।

गिरफ्तार आतंकवादियों से एक स्टेनगन, दो पिस्टल, एक रिवाल्वर तथा भारी मात्रा में कारतूसों के अलावा 25,000 रु० नकद भी बरामद किए गए।

हिंसक भीड़ पर काबू

के० रि० पु० बल की 66वीं बटालियन की 'इ' कम्पनी के सब-इन्स्पेक्टर हरदेव पांडेय तथा लॉस नायक ललित प्रकाश ने उस समय कार्य के प्रति अपने समर्पण व ऊँची सूझबूझ का परिचय दिया जब घायल होने के बावजूद वे हिंसा पर उतारू उग्र

भीड़ पर काबू पाने में जुटे रहे।

घटना 29 जुलाई, 1987 की है, जब मेरठ में निषेधाज्ञा लागू होने के बावजूद कुछ लोगों की भीड़ जगन्नाथ मन्दिर के बाहर जुटने लगी। ये लोग जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकालना चाहते थे। सुरक्षा बलों द्वारा उन्हें रथयात्रा निकालने से रोका गया तो भीड़ उग्र हो उठी तथा सुरक्षा बलों पर पत्थर आदि बरसाने लगी। इस पथराव में सब-इंस्पेक्टर हरदेव पाण्डेय तथा लांस नायक ललित प्रकाश घायल हो गए। लेकिन घायल होने के बावजूद वे अपने दस्ते का नेतृत्व सम्भाले रहे तथा भीड़ को तितर-बितर करने में सफल रहे।

मेरठ रेंज के पुलिस महानिरीक्षक ने हरदेव पाण्डेय तथा ललित प्रकाश के इस साहस पूर्ण कार्य के लिए उन्हें बधाई देते हुए 500-500 रुपये के चेक भेंट किए।

डकैतों से मुकाबला

21 अगस्त '87 को जब 70 बटालियन, के०रि०पु० बल की 'सी' कम्पनी को एक टुकड़ी सब इंस्पेक्टर बाबूसिंह के नेतृत्व में अगरतला जिले के मन्ताला क्षेत्र में गश्त पर थी, तो उन्हें गोरीपारा गांव के नजदीक से कोलाहल सुनाई दिया। गश्ती दल गांव की ओर बढ़ा तो रास्ते में उसका मुकाबला डकैतों के एक गिरोह से हुआ जो गाँव के 5 मवेशियों को हांक कर ले जा रहे थे। के० रि० पु० बल के जवानों को देखते ही अंधेरे का फायदा उठाते हुए मवेशियों को छोड़कर डकैत भाग खड़े हुए। के०रि०पु० के जवानों के इस कार्य की स्थानीय पुलिस व नागरिकों ने तारीफ की।

भर्ती के लिए शैक्षिक योग्यता बढ़ी

के०रि०पु० बल में कांस्टेबल रैंक की भर्ती के लिए अब शैक्षिक योग्यता 8वीं कक्षा से बढ़ा कर कक्षा 10 तक कर दी गई है।

खेल के मैदान से

खजान सिंह का आस्ट्रेलिया में प्रशिक्षण

श्री खजानसिंह उप अधीक्षक के०रि०पु० बल का केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकारी खर्चे पर आस्ट्रेलिया में तैराकी प्रशिक्षण के लिए चयन किया गया है। केन्द्रीय मानव विकास एवं संसाधन मंत्रालय के युवा मामलों एवं खेल से संबंधित विभाग ने आगामी

ओलंपिक खेलों को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया कि खजान सिंह अगले ओलंपिक तक आस्ट्रेलियाई कोच एरिक अरनोल्ड की देखरेख में तैराकी का अभ्यास करेंगे।

श्री खजानसिंह 27 जुलाई '87 को आस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान कर गए, जहां वह अक्टूबर '88 तक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

श्री खजान सिंह ने दसवें एशियाई खेलों में भाग लेने से पूर्व भी श्री एरिक अरनोल्ड की देखरेख में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। दसवें एशियाई खेलों में श्री खजानसिंह को 200 मीटर की बटरफ्लाई तैराकी में रजत पदक मिला था।

इन्टर रेंज वालीबाल टूर्नामेंट

हैदराबाद में 17 अगस्त 1987 को आयोजित के० रि० पु० बल के इन्टर-रेंज वालीबाल प्रतियोगिता के फाइनल में अजमेर रेंज ने 15-3, 15-3 और 15-0 से हैदराबाद रेंज को हराया।

विजेता टीम के हैड कांस्टेबल जयपाल सिंह और कांस्टेबल पन्नू ने क्रमशः 10 और 9 अंक अपने टीम के लिए हासिल किए।

हैदराबाद रेंज के उप-महानिरीक्षक रागला ने पुरस्कार वितरित किए।

21वीं इन्टर रेंज जिमनास्टिक प्रतियोगिता

अगस्त माह में नीमच में आयोजित 21वीं इन्टर रेंज जिमनास्टिक प्रतियोगिता में हैदराबाद रेंज ने 386.50 अंक प्राप्त कर चैंपियनशिप पर अपना कब्जा जमा लिया। 367.85 अंक प्राप्त कर कलकत्ता दूसरे स्थान पर व 355.45 अंक प्राप्त करके गुवाहाटी रेंज तीसरे स्थान पर रहे।

कलकत्ता रेंज के नायक देबंगशु दास प्रतियोगिता के सर्वोत्तम जिमनास्ट रहे। गुवाहाटी के इन्स्पेक्टर बलराम शील व हैदराबाद के सब इन्स्पेक्टर के० राजेन्द्रन क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

श्रीमती इन्द्रासिंह ने पुरस्कार वितरित किये।

पाठकों से

सी० आर० पी० एफ० समाचार के लिए पाठकों से रचनाएं आमंत्रित की जाती हैं। प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक भी दिया जाएगा। रचनाएं इस पते पर भेजें— जन संपर्क अधिकारी, महानिदेशालय के० रि० पु० बल, सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली—110003.

वाटरपोलो लीग खिताब पर के० रि० पु० बल का कब्जा

21 अगस्त, 1987 को खेले गए रोमांचक फाइनल में के० रि० पु० बल ने बी० एस० एफ० को 11-7 से हरा कर, प्रतीक गुप्ता स्मृति वाटरपोलो लीग खिताब पर फिर कब्जा जमा लिया।

के० एलायसिस ने सात गोल करके के० रि० पु० बल की विजय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पहले क्वार्टर में 3-3 से बराबर रहने के बाद के० रि० पु० बल ने दूसरे क्वार्टर में 5-3 से लीड बनाई। तीसरे क्वार्टर में बी० एस० एफ० 7-7 से बराबरी पर आई लेकिन अंतिम क्वार्टर में बेहतर दमखम वाली के० रि० पु० बल की टीम जीत गई।

के० रि० पु० बल के लिए एलायसिस के अलावा एस० राधाकृष्णन (2), एस० लोचनन, दलीप सिंह, टी. जे. जेकब और के. सोमशेखरन ने एक एक गोल बनाए। के० एलायसिस को सबसे ज्यादा 28 गोल करने के लिए विशेष पुरस्कार दिया गया।

के० रि० पु० बल के शूटर का अमरीका में प्रशिक्षण

शूटिंग टीम के मैनेजर श्री टी०एस० ढिल्लन को मई माह में एक माह के प्रशिक्षण/पाठ्यक्रम के लिए अमरीका भेजा गया। श्री ढिल्लन एक माह के पाठ्यक्रम/प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा कर भारत लौट आए और रायफल व पिस्तौल की 50 मीटर तक की शूटिंग में उन्होंने विशेष योग्यता प्राप्त की।

भारत में प्रशिक्षण प्राप्त कोच बनने वाले श्री ढिल्लन पहले व्यक्ति हैं।



के० रि० पु० बल की वाटरपोलो विजेता टीम

के०रि०पु० बल ने दो उग्रवादी पकड़े

36 बटालियन के०रि०पु० बल की एक कम्पनी कानून व व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से स्थानीय पुलिस की सहायतार्थ बिहार के जहानाबाद इलाके में तैनात थी। 21 जुलाई को स्थानीय पुलिस से शाहपुर गाँव में एक उग्रवादी संगठन मजदूर किसान संग्राम समिति की बैठक का समाचार प्राप्त होने के बाद उस बैठक में शामिल होने वाले आतंकवादियों को छापामार कार्रवाई के द्वारा गिरफ्तार करने की योजना बनी।

दल शाहपुर गाँव में सायं लगभग 4.25 बजे पहुंचा, तो गाँव के पश्चिम छोर पर कुछ लोगों का जमघट दिखाई दिया। दल ने लोगों को चारों तरफ से घेर लिया। पुलिस को देखते ही भीड़ छिन्न-भिन्न होने लगी। भागते हुए कुछ आतंकवादियों ने पीछा करते हुए पुलिस पर दो गोलियां चलाई। पुलिस की तरफ से भी आत्मरक्षा में गोलियां चलाई गईं। आतंकवादी पास में बहते नाले व गन्ने के खेतों का सहारा लेकर भागने का प्रयास कर रहे थे। इसी बीच एक आतंकवादी गन्ने के खेतों की ओर भागता दिखाई दिया, ललकारे जाने पर वह पानी से भरे नाले में कूद गया। उसके पीछे कांस्टेबल राजेंद्रपाल नाले में कूद पड़ा और आगे बढ़कर उस आतंकवादी को पकड़ लिया। बाद में स्थानीय पुलिस द्वारा इस आतंकवादी की शिनाख्त लालजी शाह के रूप में की गई।

इसी कार्रवाई के दौरान हैड कांस्टेबल बलसिंह तथा लांस नायक जन्नत हुसैन खान ने देखा कि एक आतंकवादी एक घर से निकलकर सड़क की ओर भागने का प्रयास कर रहा है। दोनों ने उसे ललकारा और थोड़े से संघर्ष के बाद उस पर काबू पा लिया। बाद में स्थानीय पुलिस द्वारा उसकी शिनाख्त पारीकशाह मुंशी उर्फ सुदमाजी के रूप में कर ली गई। जो कि एक खतरनाक आतंकवादी तथा जहानाबाद जिले का स्वयं-भू क्षेत्रिय कमांडर बना हुआ था। वह अपने इलाके का आतंक था तथा पुलिस को उसकी कई हत्याओं, डकैतियों व अपहरण के मामलों में तलाश थी। दोनों गिरफ्तार आतंकवादियों से हथियार व गोला बारूद बरामद किए गए।

इस पूरी कार्रवाई में 2 से 3 मिनट लगे। इसके बाद पूरे गांव की पड़ताल की गई, इस पड़ताल में गंगाराम पासवान के घर से एक पिस्तौल व एक .315 का जीवित राउण्ड मिला। गंगाराम पासवान घर में उपस्थित नहीं था।

केन्द्रीय कल्याण जोखिम निधि से संबंधित निर्णय

के०रि०पु० बल के किसी कर्मचारी की मृत्यु के बाद जोखिम निधि का भुगतान उसकी विधवा को किया जाएगा। पत्नी की अनुपस्थिति में उसके बच्चे यह लाभ पाने के हकदार होंगे।

आवेवाहेत कामेक को मृत्यु के बाद इस निधि का भुगतान उसके माता या पिता को किया जाएगा।

यह निर्णय मई, 1987 में के०रि०पु० बल महानिदेशालय में हुई केन्द्रीय कल्याण जोखिम (प्रीमिया) निधि की कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिया गया।

जोखिम निधि लाभ

अगस्त '87 के दौरान मारे गए के०रि० पु० बल के 15 कर्मचारियों के निकट संबंधियों को 2 लाख 55 हजार रुपए अदा किए गए तथा बिमारी आदि के कारण नौकरी के लिए अयोग्य पाए गए 11 कर्मचारियों को 1 लाख 65 हजार रुपए क्षतिपूर्ति के रूप में अदा किए गए।

हैदराबाद में हिन्दी सम्मेलन का आयोजन

13 जुलाई '87 को पुलिस महानिरीक्षक कार्यालय, हैदराबाद में श्री सी० सुब्रमण्यम की अध्यक्षता में हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन से पूर्व 6 जुलाई से 11 जुलाई तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया, जिसके अन्तर्गत हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता, हिन्दी टाइपराइटिंग प्रतियोगिता, तथा हिन्दी नोटिंग, ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस सम्मेलन में दक्षिणी सैक्टर के नीमच, नागपुर, पल्लीपुरम तथा आवड़ी आदि क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

महानिदेशालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने तथा अधिकारियों में हिन्दी में काम करने के संकोच को दूर करने के उद्देश्य से महानिदेशालय, के०रि०पु० बल में 29 जून '87 से 6 जुलाई '87 तक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। महानिदेशालय में केवल अधिकारियों की यह पहली कार्यशाला थी, जिसके अन्तर्गत अनुभाग अधिकारी, उप सहायक निदेशक स्तर के अधिकारी सम्मिलित हुए। कार्यशाला का उद्घाटन उप निदेशक (प्रशासन) ने किया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर उपनिदेशक (प्रशासन) महोदय ने सरल हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया तथा अधिकारियों से अपेक्षा की कि वे इस कार्यशाला से ज्ञान अर्जित कर अपने अपने अनुभागों में कार्मिकों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा दें और हिन्दी के पक्ष में समुचित वातावरण बनाने में अपना सहयोग दें।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल तथा अनिल गुप्ता।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

मूल्य : 1.60 रुपये

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

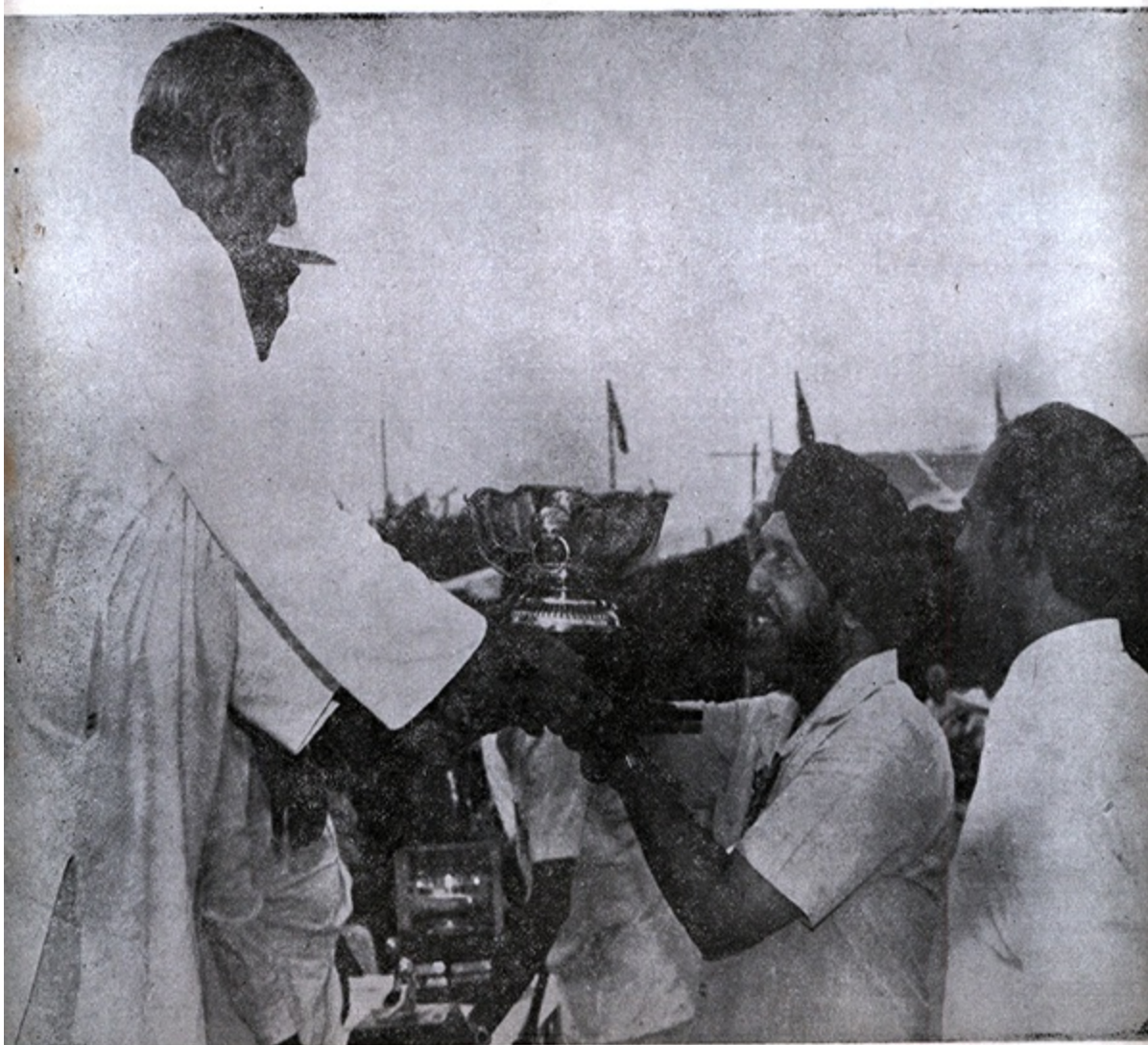
सीआरपीएफ समाचार

खंड 1

अंक 4

30 सितंबर, 1987

30 आश्विन, शक संवत् 1909



श्री बी. जे. एस. स्याल, महानिरीक्षक (मुख्यालय) के० रि० प्र० बल, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री देवीलाल से

पुलिस तैराकी प्रतियोगिता

विजय का सेहरा के० रि० पु० बल के सर पर



के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों से सलामी लेते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री देवीलाल।

तैराकी में भारत के गौरव के० रि० पु० बल के 23-वर्षीय उपाधीक्षक खजान सिंह, जो इस समय आस्ट्रेलिया में प्रशिक्षण ले रहे हैं, की अनुपस्थिति में 36वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के तरणताल में सम्पन्न हुई। पांच दिन की इस प्रतियोगिता में दस राज्यों की पुलिस तथा तीन अर्द्धसैनिक बलों ने भाग लिया, लेकिन एक भी रिकार्ड नहीं टूटा।

260 अंकों के साथ के० रि० पु० बल के तैराक चैपियनशिप पर कब्जा जमाने में सफल रहे। के० रि० पु० बल का परम्परागत प्रतिद्वंद्वी सीमा सुरक्षा बल 188 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहा। भारत तिब्बत सीमा पुलिस को केवल 50 अंक प्राप्त हुए और वह तीसरे स्थान पर रहे।

12 व्यक्तिगत मुकाबलों में अधिकांश पदक के० रि० पु० बल के आर. के. रोजन, अजीत सांगवान, मोहिंदर कुमार तथा एस. राधाकृष्णन और सीमा सुरक्षा बल के

सुरेन्द्र टोकस ने हासिल किए।

प्रतियोगिता के पहले दिन 200 मीटर फ्रीस्टाइल प्रतियोगिता में 2 मिनट 14.12 सैकंड का समय ले कर सीमा सुरक्षा बल के सुरेन्द्र टोकस ने स्वर्ण पदक पर कब्जा जमा लिया। 2 मिनट 15.78 सैकंड का समय ले कर के० रि० पु० बल के एस. राधाकृष्णन दूसरे स्थान पर रहे, के० रि० पु० बल के इंस्पेक्टर और सुरेन्द्र के बड़े भाई मोहिंद्र टोकस 2 मिनट 16.12 सैकंड का समय ले कर तीसरे स्थान पर रहे।

20 मिनट बाद हुई 200 मीटर बटरफ्लाय प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल के 23-वर्षीय उपनिरीक्षक आर. के. रोजन 2 मिनट 20.10 सैकंड का समय ले कर स्वर्ण पदक पाने में सफल रहे। इस प्रतियोगिता में सुरेन्द्र टोकस को रजत तथा के० रि० पु० बल के टी. जे. जेकब को कांस्य पदक मिला। दोनों ने क्रमशः 2 मिनट 23.30 सैकंड तथा 2 मिनट 27.60 सैकंड का समय लिया।

400 मीटर फ्रीस्टाइल में 4 मिनट 44.65 सैकंड का समय लेकर सुरेन्द्र टोकस ने यहां भी स्वर्ण पदक जीता। मोहिंद्र कुमार 1.55 सैकंड के अंतर से द्वितीय रहे तथा आर. के. रोजन 4 मिनट 50.50 सैकंड का समय लेकर तीसरे स्थान पर रहे।



के० सोमशेखरन: तेज तैराक

100 मीटर बटरफ्लाय में आर. के. रोजन ने शुरू से ही बहुत बनाए रखी। उसने 1 मिनट 02.95 सैकंड का समय लिया, जबकि सुरेन्द्र टोकस 1 मिनट 04.22 सैकंड का समय लेकर द्वितीय रहे तथा टी. जे. जेकब 1.39 सैकंड का अधिक समय लेकर

कांस्य पदक ही पा सके।

सियोल एशियाई खेलों में भाग लेने वाले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 25-वर्षीय इंस्पेक्टर एस. राधाकृष्णन को अपनी प्रिय प्रतियोगिता बेस्ट स्टोक की दो प्रतियोगिताओं को जीतने में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं हुई। 100 मीटर प्रतियोगिता में उसने 1 मिनट 14 सैकंड का समय लिया, जबकि 200 मीटर प्रतियोगिता में उसे केवल 2 मिनट 42.10 सैकंड ही लगे। सीमा सुरक्षा बल के राजेश शर्मा दोनों ही प्रतियोगिताओं में रजत पदक प्राप्त करने में सफल रहे। जबकी 100 मीटर प्रतियोगिता में कांस्य पदक सीमा सुरक्षा बल के एन. के. सेन और 200 मीटर में टी. जे जेकब को प्राप्त हुआ।

के० रि० पु० बल के 21-वर्षीय हैड कांस्टेबल अजीत सांगवान को बैक स्टोक प्रतियोगिताएं जीतने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। उसने 100 मीटर की प्रतियोगिता 1 मिनट 09.11 सैकंड में तथा 200 मीटर की 2 मिनट 30 सेकंड में पूरी कर स्वर्ण पदक प्राप्त किए। 100 मीटर में सीमा सुरक्षा बल के ही बिजेन्द्र टोकस रजत पदक प्राप्त करने में सफल रहे। के० रि० पु० बल के पी. पद्मनाभन को दोनों ही प्रतियोगिताओं में कांस्य पदक प्राप्त हुए।

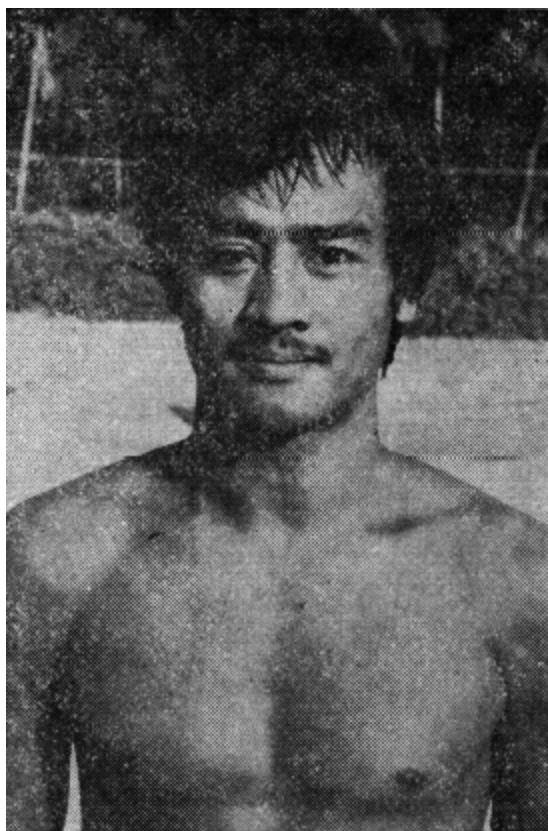
थका देने वाली 1,500 मीटर की फ्रीस्टाइल प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल के मोहिंदर कुमार द्वारा आसानी से जीत ली गई। सीमा सुरक्षा बल के प्रेमसिंह व सुरेन्द्र टोकस क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे।

प्रतियोगिता के अन्तिम दिन के० रि० पू० बल के के० सोमशेखरन 100 मीटर फ्रीस्टाइल प्रतियोगिता में 58.75 सेकेन्ड लेकर प्रतियोगिता के सबसे तेज तैराक रहे। इस प्रतियोगिता में सुरेन्द्र टोकस और अजीत सांगवान क्रमशः द्वितीय और तृतीय रहे।

पूरी प्रतियोगिता में 4X100 मीटर फ्रीस्टाइल रिले प्रतियोगिता काफी रोमांचक रही। के० रि० पू० बल के पी० पद्मनाभन, आर० के० रोजन, बिज्जनपाल तथा के० सोमशेखरन इस प्रतियोगिता के विजेता रहे। सीमा सुरक्षा बल को इस प्रतियोगिता में दूसरा व भारत तिब्बत सीमा पुलिस को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। अगली दो रिले प्रतियोगिताओं में भी के० रि० पु० बल ही विजयी रही।



के० रि० पु० बल को विजेता टीम ।



पावेत्रा शर्मा—सर्वश्रेष्ठ डाइवर

काफी लम्बे समय के अन्तराल के बाद प्रतियोगिता में भाग लेने आये के० रि० पू० बल के कोच ढाका सिंह स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने में सफल रहे। उन्होंने कुल 337.75 अंक प्राप्त किए। सीमा सुरक्षा बल के होशियार सिंह और दिल्ली के कुन्दन सिंह क्रमशः 316.25 तथा 296.05 अंक प्राप्त करके रजत व कांस्य पदक प्राप्त करने में सफल रहे।

सीमा सुरक्षा बल का 19-वर्षीय सब-इंस्पेक्टर सुरेन्द्र टोकस पूरी प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक रहा। उसके व्यक्तिगत अंक 61 रहे।

राज्यों की पुलिस में उत्तर प्रदेश पुलिस सर्वश्रेष्ठ रही उसने 29 अंक प्राप्त किए।

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन हरियाणा के उद्योग मन्त्री श्री संपत सिंह ने किया जब कि हरियाणा के मुख्य मन्त्री देवीलाल ने विजेताओं को पुरुस्कार वितरित किए।

छाया—जे० एन० तिवारी

84वीं बटालियन

जन्म से ही गौरव गाथा प्रारम्भ

घोर अव्यवस्था, राष्ट्रव्यापी हिंसा तथा बिगड़ती कानून व व्यवस्था की स्थिति से भरे वर्ष 1985 में के० रि० पू० बल ग्रुप सेंटर झड़ौदाकलां दिल्ली में 84वीं बटालियन की स्थापना की गई। अपने प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद 84वीं बटालियन के जवान 12 अप्रैल, 1986 को कर्म क्षेत्र में कूद पड़े और साम्प्रदायिक दंगों की आग से झुलसते मेरठ और मुरादाबाद में शांति की स्थापना कर जम्मू और कश्मीर की ओर मुड़ गए जहां राजनीतिक अस्थिरता तथा सांप्रदायिकता की फेन फैलाती भावना ने कानून व व्यवस्था के लिए मुश्किलें खड़ी कर दी थीं। दंगों से झुलसते श्रीनगर, होमामा, बारामूला, किश्तवार, भद्रवाह, पूछ, राजौरी, अखनूर तथा रियासी में के० रि० पू० बल की टुकड़ियाँ सांप्रदायिकता के फेन को कुचलने के लिए भेजी गई। यह एक कठिन कार्य था, लेकिन 84वीं बटालियन के जवानों ने अपने अपूर्व साहस व लगन से इन इलाकों में जल्द ही स्थिति को सामान्य कर दिखाया।

28 अगस्त, 1986 को इस यूनिट की तीन कंपनियों ने प्रशासन को जम्मू में माता वैष्णो देवी के मंदिर के प्रबन्ध को पुजारियों के हाथ से अपने नियंत्रण में लेने में मदद दी। तभी से इस यूनिट की एक कम्पनी वैष्णो देवी मन्दिर में तैनात है। जम्मू कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन ने 84 बटालियन की सेवाओं और उस के जवानों की लगन

व कतेव्यपरायणता को भूरी-भूरी प्रशंसा को है।

नागरिक प्रशासन की कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए मदद, करने के अलावा 84वीं बटालियन के जवानों ने और भी कई मानवीय कार्य किए हैं। इस यूनिट के 143 कर्मिकों ने रेडक्रास सोसायटी की सहायता से 3 दिसम्बर, 1986 और 23 मई, 1987 को ग्रुप केन्द्र बनतलाब द्वारा लगाए गए रक्तदान शिविरों में रक्तदान किया। इन में से एक कैम्प का उद्घाटन जम्मू कश्मीर के मुख्य मंत्री फारुक अब्दुल्ला ने किया था। उन्होंने के० रि० पु० बल के जवानों की इस कार्य के लिए काफी प्रशंसा की।

मार्च, 1987 में निष्पक्ष चुनाव कराने में 84वीं बटालियन के जवानों ने भरपूर सहयोग दिया। इन चुनावों में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने में 84वीं बटालियन के जवानों ने अथक प्रयास किया।



वैष्णो माता मंदिर में प्रदान की गई सेवाओं के बदले 84 बटालियन की ओर से उपाधीक्षक के. एन. राव, जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला से ट्राफी प्राप्त करते हुए।

तीन अबोध बच्चों की जान बचाई

ग्रुप केन्द्र, के० रि० पु० बल, गाँधीनगर (गुजरात) के पारिवारिक क्वार्टर में 25 नवम्बर 1985 को अचानक आग लग गई। शोर गुल सुनने पर क्वार्टरों

को एक निवासी श्रीमती कुलदीप कौर अपने दो लड़कों के साथ घटनास्थल की ओर भागी। मकान से आग की लपटें निकल रही थी। यह जान कर की मकान के अन्दर दो वर्ष से कम आयु के तीन बच्चे बन्द हैं, जितेन्द्रपाल सिंह ने अपनी जान की परवाह न करते हुए बड़ी हिम्मत व बहादुरी के साथ मकान का ताला तोड़ कर न केवल तीन अबोध बच्चों की ही जान बचाई, अपितु काफी सतर्कता के साथ गैस या सिलेंडर भी बाहर ले लाया। इस सब के बीच उसके हाथ बूरी तरह जल गए।

जितेन्द्रपाल सिंह की बहादुरी व सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए अपर पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केंद्र के० रि० पु० बल गांधीनगर ने उसे एक प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया।

कैन्टीन में बैठे दो जवान अपने विवाह के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे। पहला बोला, “यार मैं तो संगीत प्रेमी लड़की से शादी करूंगा, यह बताओ तुम कैसी लड़की से शादी करोगे संगीत प्रेमी, साहित्य प्रेमी या प्रकृति प्रेमी.....?”

दूसरा बोला, “यार मैं तो पति प्रेमी लड़की से ही शादी करूंगा।”

राजधानी एक्सप्रेस में स्थान के लिए रेलवे वारंट की स्वीकृति

रेल मंत्रालय ने यह निर्णय लिया है कि रेलवे वारंट के बदले टिकट खरीदने वाले पुलिस कर्मिकों को राजधानी एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए भी टिकट दिए जायें। यह भी निर्णय लिया गया है कि यदि पुलिस वारंट उच्च दर्जे के लिए जारी किया गया हो, लेकिन आरक्षण उपलब्ध न हो, तो निम्न दर्जे के टिकट के लिये भी वारंट बदला जाये बशर्ते निम्न दर्जे में आरक्षण उपलब्ध हो और पार्टी द्वारा मांग की गई हो। इस प्रकार के मामलों में बुकिंग क्लर्क द्वारा वारंट पर किराया और निम्न दर्जे का टिकट जारी करने के सम्बन्ध में उचित पृष्ठांकन किया जाना चाहिए।

दक्षिण एशियाई खेलों के लिए बल के तैराक

इस वर्ष नवंबर में कलकत्ता में होने वाले तीसरे दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों में तैराकी में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए के० रि० पु० बल के अन्तर्राष्ट्रीय तैराक एस. राधाकृष्णन तथा आर० के० रोजन का चयन किया गया है।

एस० राधाकृष्णन ब्रेस्टस्टोक मुकाबलों में हिस्सा लेंगे जबकि आर० के० रोजन दो बटरफ्लाई मुकाबलों में हिस्सा लेंगे।

इन दोनों का चयन 20 और 21 सितंबर को त्रिवेंद्रम में हुई ट्रायल प्रतियोगिता के

बाद किया गया।

के०रि०पु०बल कर्मिकों द्वारा वृक्षारोपण

गुरदासपुर (पंजाब) स्थित के०रि०पु० बल की 27 बटालियन के कर्मिकों द्वारा 20 स्त्री कार्यक्रम के अंतर्गत 3 सितम्बर, 1987 से 9 सितम्बर, 1987 तक 'वृक्ष लगाओ सप्ताह' मनाया गया। इस सप्ताह का शुभारंभ पुलिस महानिरीक्षक श्री प्रताप सिंह ने 3 सितम्बर को यूनिट क्वाटर गार्ड के सामने एक पौधा लगा कर किया। इस सप्ताह के दौरान कर्मिकों द्वारा बटालियन हैडक्वार्टर गुरदासपुर में 500 से अधिक वृक्ष लगाए गए।

मनोरंजन

एक बार एक व्यक्ति का बटुवा खो गया कुछ दिन बाद एक देहाती उस का बटुआ ले कर आया और उसे सौंप दिया। अपना बटुसा देखने के बाद पहला व्यक्ति बोला, “आप मेरा खोया बटुआ ढूँढ लाए, पर इसमें दस रुपए का एक नोट था, इसकी बजाए अब इसमें से एक एक रुपए के 10 नोट निकले ऐसा क्यों?”

“जी मैंने रास्ते में नोट भुनवा लिया। सोचा, शायद आप मुझे कुछ बख्शीश देना चाहें और आपके पास एक रुपये का नोट न हो।” देहाती ने भोलेपन से उत्तर दिया।

एक सिनेमा हाल में दो महिलाएं आपस में बातचीत कर रही थी, उनके पास बैठे एक युवक को इससे परेशानी हो रही थी और वह फिल्म के बोल नहीं सुन पा रहा था। विवश हो कर उसे उन महिलाओं से कहना पड़ा, “माफ कीजिए मैं ठीक से सुन नहीं पा रहा हूँ।”

इतना सुनते ही उन महिलाओं में से एक गुस्से से बोली “आप को सुनने की जरूरत भी क्या है, हम आप को नहीं सुना रही हैं, यह हमारी निजी बातचीत है।” बेचारा युवक अपना सा मुंह लेकर रह गया।

घोड़ा और भैंस घास चर रहे थे। घोड़ा बता रहा था, मैं मालिक को गति देता हूँ सो वह मुझे खूब चाहते हैं। भैंस बता रही थी, मैं उनको ताकत देती हूँ, सो वह मुझे खूब चाहते हैं।

घास सुन रही थी बोली, “तुम लोग मुझे चरकर मालिक को यह देते हो, क्या वह मुझे भी चाहते हैं।”

सुन कर घोड़ा ओर घास दोनों एक दूसरे को देखकर मुसकराने लगे।

एक साहब 100 वर्ष के हुए तो मुहल्ले वालों ने बड़े धूम धाम से उनका 100वां जन्म दिन मनाया। इस मौके पर भाषण देते हुए वह साहब बोले, “मेरी शादी आज से

75 वर्ष पूर्व हुई थी। उस दिन मैंने और मेरी पत्नी ने यह वचन लिया था कि जब भी हम दोनों में झगड़ा होगा, गलत साबित होने वाले को फौरन घर से बाहर निकल कर घंटा भर घूमना होगा। मेरी लम्बी उम्र का बस यही राज है कि इन 75 वर्षों में मैं बराबर खुली हवा में घूमता रहा हूँ।”

डूबती हुई स्त्री किसी तरह तैर कर किनारे आई और पति से बोली, “मैं तो तैर कर आ गई, लेकिन मेरी सोने की जंजीर डूब गयी।”

“हल्की और बेकार चीजें ही पानी में तेरा करती हैं।” पति ने मुंह सिकोड़ते हुए जवाब दिया।

जज : तुमने जीप क्यों चुरायी ?

चोर : हुजूर, माल ले कर भागने में दिक्कत होती थी, इसलिए।

बूझो तो जाने

1. सुन्दर गुठली मेवा एक जान, खा कर भी थूके उसे जबान।
2. पशु पक्षी नर न नार, सिर के बिन है बदन, कान मुँह कंधों पे, उँघा रहता दिन रैन।
3. दोनों आँखें टांगों से बंधी हैं, वह पंछी एक डाल के, युवा कभी न चाहे, पर वृद्धों के चिपके गाल से।
4. मिट्टी में जन्म, अग्नि से यौवन, पर बोलता रहता है, मार खा कर बड़ा हुआ, अब जवानों से पिटता रहता है।

1. सुपारी, 2. टेलीफोन, 3. चश्मा, 4. क्वार्टर गार्ड का घंटा।

-प्राज्ञाराम गुप्ता

सहायक कमांडेंट 61 बटालियन

पंजाब से

तीन आतंकवादी गिरफ्तार

22 जुलाई, 1987 को रात्रि लगभग 11 बजे 45वीं बटालियन की 'ए' कम्पनी की

एक टुकड़ी द्वारा पंजाब में गांव समरेला के नजदीक स्कूटर पर सवार तीन युवकों को रुकने का संकेत किया गया। लेकिन वे युवक रुकने के स्थान पर नाका पार्टी पर गोलियां चलाने लगे। नाका पार्टी द्वारा भी जवाब में फायर किया गया और थोड़ी देर की मुठभेड़ के बाद तीनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार आतंकवादियों से एक सब-मशीनगन, 45 बोर के 27 जीवित कारतूस, 6 खाली केस, एक पेट्रोल बम्ब, 45 बोर का एक रिवाल्वर, 17 जीवित कारतूस, तथा एक बिना पंजीकरण का स्कूटर बरामद किया गया।

कुख्यात आतंकवादी मारा गया

22 अगस्त, 1987 को दोपहर 1 बजे के लगभग के० रि० पु० बल की 29वीं बटालियन की एक छानबीन पार्टी जब मालमोहरी से झंदेर गांव जा रही थी, तो उसने एक व्यक्ति को देख कर उसे रुकने के लिए कहा परन्तु उस व्यक्ति ने जवाब में फायर कर दिया। के० रि० पु० बल की टुकड़ी की ओर से जवाबी फायर में वह व्यक्ति मारा गया। उसके पास से 6 कारतूस सहित एक .455 बोर का रिवाल्वर और 600 रुपए नकद प्राप्त हुए। शव की शिनाख्त होने पर पता चला कि वह तरणतारन का 'बी' श्रेणी का कुख्यात आतंकवादी अमरजीत सिंह चप्पा था, जिस पर 25,000 रुपए का ईनाम था।

कुख्यात आतंकवादी का अन्त

27 अगस्त, 1987 को रात्रि लगभग 12.30 बजे, के० रि० पु० बल की 12वीं बटालियन की एक टुकड़ी पर अमृतसर के थाना ब्यास के चपियनवाली में प्राइमरी स्कूल के पास आतंकवादियों द्वारा गोली चलाई गई। जवाबी गोली चलने पर एक आतंकवादी गुरमीतसिंह उर्फ अजीतसिंह चहेरू उर्फ चहेरूसिंह मित्तल मारा गया। घटनास्थल से दो मैगजीन सहित एक 9 एम. एम. स्टेनगन और विभिन्न प्रकार के खाली कारतूस पाए गए। उक्त आतंकवादी के श्री बूटासिंह, (गृह मंत्री) के सम्बन्धियों की हत्या के मामले से सम्बन्धित होने का संदेह था।

आतंकवादियों से मुठभेड़

28 अगस्त, 1987 को 12 बटालियन की "एफ" कम्पनी के जवानों ने स्थानीय पुलिस के साथ अमृतसर जिले के जवोबल गांव में घात लगाई। रात्रि लगभग 10 बजे घात की ओर आते व्यक्तियों को पार्टी ने रुकने का संकेत किया तो उन लोगों ने गोली चलानी शुरू कर दी। घात पार्टी ने जवाबी गोली चलाई जिसके परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति मर गया। मुठभेड़ के स्थान से तबदील किया हुआ 12 बोर एक, 12 बोर के दगे हुये कारतूस 4, 12 बोर के सजीव कारतूस 5, 38 खाली कारतूस खोखा 6, ए एक्स-47

चीनी एसोल्ट राइफल एक, .47 खाली कारतूस 7 तथा .47 सजीव कारतूस बरामद किए गए।

गोला-बारूद बरामद

2 सितम्बर, 1987 को रात्रि लगभग 12.30 बजे के० रि० पु० बल की 53 बटालियन की 'बी' कम्पनी के जवानों ने स्थानीय पुलिस के साथ पटियाला में नाभा पटियाला सड़क के रोनी पुल पर घात लगाई तथा एक ट्रक में सवार 7 व्यक्तियों को गिरफ्तार करके उनसे 1 थॉमसन मशीनगन, 1 मैगजीन, 14 कारतूस, 3 एच. ई. नं० 36 ग्रेनेड, 1 पिस्तौल .315 बोर, 2 सजीव कारतूस, एक 12 बोर का पिस्तौल, दो 12 बोर के कारतूस, एक .450 बोर पिस्तौल तथा 6 सजीव राउन्ड बरामद किए।

तीन आतंकवादी गिरफ्तार

रोपड़ में 10 सितम्बर, 1987 को सुबह करीब 5.45 बजे के० रि० पु० बल की 13 बटालियन के जवानों ने स्थानीय पुलिस के साथ तहगरी गांव में छापा मार कर 3 संदिग्ध उग्रवादियों को गिरफ्तार कर लिया। इन उग्रवादियों से 2 स्टेनगन, 3 चीनी एसोल्ट राइफल, 1 पी. आफ 7.62 राइफल तथा 150 सजीव कारतूस बरामद किए गए।

आतंकवादी मारा गया

12 सितम्बर, 1987 को 29 बटालियन के जवानों ने स्थानीय पुलिस के साथ मल्लाह गांव के पास पुल पर एक विशेष नाका लगाया। नाका पार्टी ने मल्लाह गांव की तरफ से एक व्यक्ति को आते देख कर उसे रुकने को कहा तो उसने गोली चलानी शुरू कर दी। नाका पार्टी द्वारा जवाबी गोली चलाए जाने पर वह व्यक्ति घटनास्थल पर ही मारा गया। घटनास्थल से एक .315 बोर राइफल, 6 सजीव कारतूस, चार .315 के दगे हुए कारतूस तथा 27 रुपए नकद बरामद हुए। बाद में शिनाख्त होने पर पता चला कि वह होशियारपुर जिले के गांव थाना जोहल के निवासी बलबीर सिंह का पुत्र सरबजीत सिंह था। वह 'बी' प्लस वर्ग का आतंकवादी था और उस पर 50,000 रुपये का ईनाम था।

स्वर्ण मन्दिर के नजदीक आतंकवादी गिरफ्तार

17 सितम्बर, 1987 को लगभग 7.45 बजे, के० रि० पु० की 49 बटालियन की एक नाका पार्टी को 3 भागों में स्वर्ण मंदिर के पास नियुक्त किया गया। लखाद मंडी की नाका पार्टी ने स्वर्ण मंदिर से 3 साइकिल सवारों को आते देखा उनमें से एक की

पहचान आतंकवादों के रूप में कर ली गई, पार्टी ने उसे कब्जे में लेने का प्रयास किया तो उसने गोली चलाने के लिए अपना पिस्तौल निकाल लिया। बल के जवानों द्वारा गोली चला कर उसे वहीं मार दिया गया। दूसरा साइकिल सवार लखाद मंडी में दूसरी पार्टी द्वारा पकड़ लिया गया और तीसरा भाग निकलने में सफल हो गया। घटनास्थल को चारों तरफ से घेर लिया गया। तलाशी लेने पर क्षेत्र से एक 7.65 पिस्तौल, 12 सजीव कारतूस, 4 दगे हुए कारतूस, एक .455 रिवाल्वर, 4 दगे हुए कारतूस, 2 सजीव कारतूस बरामद किए गए।

दो आतंकवादी गिरफ्तार

23 सितम्बर, 1987 को करीब 3 बजे के० रि० पु० बल तथा स्थानीय पुलिस की एक टुकड़ी जब गश्त पर थी तो फरीदकोट जिले के कपूरा और चोगवन गांव के बीच आतंकवादियों द्वारा उस पर गोली चलाई गई। गोली का जवाब गोली से देते हुए चेतावनी के साथ बल के जवानों ने दो आतंकवादियों को गिरफ्तार कर लिया तथा उनसे एक .315 राइफल, ग्यारह .135 राउन्ड, छः .315 खाली कारतूस, एक 12 बोर डी०बी०बी०एल० गन, सोलह 12 बोर के कारतूस, पाठ 12 बोर के खाली कारतूस तथा एक बिना नम्बर प्लेट का स्कुटर बरामद किया।

आतंकवादी घायल

24 सितम्बर, 1987 को सुबह लगभग 8.30 बजे, के० रि० पु० बल की 65 बटालियन के जवानों एवं स्थानीय पुलिस की एक संयुक्त गश्त पार्टी की घूदीका गांव में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में एक बी. श्रेणी का आतंकवादी घायल हो गया और उसे हिरासत में ले लिया गया। उसके साथी भाग निकलने में सफल हो गये। घटनास्थल से 4 सजीव कारतूस तथा एक .38 का रिवाल्वर और दो खाली खोखे बरामद किए गए। घायल आतंकवादी को बाद में सिविल अस्पताल मोगा में ले जाया गया।

मुक्तक

हम कौन थे, क्या हो गए हैं,
और क्या होंगे अभी,
आओं विचारें आज मिलकर
वह समस्यायें सभी।

जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं नर निरा पशु है
और मृतक समान है।

-मैथिलिशरण गुप्त

संमाचार

के० रि० पु० बल के जवान श्रीलंका में

श्रीलंका में शांति व सद्भावना कायम करने के लिए श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्द्धने और भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के बीच हुए समझौते के कार्यान्वयन के लिए भारतीय शांति रक्षक सेना श्रीलंका पहुंच गई है।

श्रीलंका के कई संवेदनशील इलाकों में नाजुक स्थिति को देखते हुए के० रि० पु० बल की एक युनिट की भी श्रीलंका भेजने की जरूरत महसूस की गई। और के० रि० पु० बल की 58 बटालियन की 6 कंपनियां 22 सितम्बर, 1987 को दिल्ली के पालम हवाई

अड्डे से मद्रास के लिए रवाना हुई। मद्रास से ये कंपनियां जल व वायु विमानों द्वारा श्रीलंका के त्रिकोनाली और जाफना क्षेत्र में पहुंच गई। 25 सितंबर 1987 तक इन कंपनियों को श्रीलंका के कई इलाकों में तैनात कर दिया गया। श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के साथ के० रि० पु० बल के जवानों ने तमिल उग्रवादियों के खिलाफ एक जेहाद छेड़ दिया है।

यह कदम शांति समझौते के बाद लिबरेशन टाइगर्स आफ तमिल ईलम के उग्रवादियों द्वारा अपनाई जा रही हिंसात्मक कार्रवाइयों के बाद उठाया गया।

जी.एन.एल.एफ. के कार्यालय पर छापा

29 अगस्त, 1987 को सुबह 10.45 बजे से 11.30 बजे तक के० रि० पु० बल की 54 बटालियन की 'बी' कम्पनी द्वारा दार्जिलिंग में गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट कार्यालय में छापा मारकर एक .9 एम.एम. का ब्राउनिंग पिस्टल (सन्देह किया जाता

हैं

कि यह थाना मिरिक से लूटा गया था), एक .303 कारतूस, इंप्रोवाइज्ड पिस्टल, 12 कार्टरिज 12 बोर, दस 9 एम. एम. कारतूस एक .32 बोर कारतूस, दो इंप्रोवाइज्ड राउन्ड्स, 5 बंदूक की लकड़ी के बट तथा 4 धनुष बरामद किये गये।

बिहार में उग्रवादियों से मुठभेड़

22 सितम्बर, 1987 को रात्रि करीब 2.15 बजे स्थानीय पुलिस तथा के.रि.पु.बल के जवान बिहार के कुरथा थाना क्षेत्र से लगभग एक किलोमीटर दूर गोली की आवाज सुनकर उस स्थान पर पहुंचे। घटना स्थल पर विधायक रामजतन सिन्हा और विधायक सरदार कृष्ण सिंह के नेतृत्व में दो अलग-अलग पार्टियों के बीच चलता झगड़ा गोली बारी की हद तक पहुंच चुका था। जवानों को देखते ही उन लोगों ने पुलिस पर गोली चला दी। जवाब में पुलिस बल ने भी गोली चलाई। इस गोलीबारी में के.रि.पु.बल का सिपाही घनश्याम पाठक घायल हो गया, जिसने बाद में दम तोड़ दिया। इस मुठभेड़ में चार उग्रवादी मारे गये तथा विधायक सरदार कृष्ण सिंह को कुछ अन्य लोगों के साथ हिरासत में ले लिया गया। घटना स्थल से एक .315 राइफल, तीन सजीव राउन्ड .315, सात डी० बी० बी० एल० गन, 13 सजीव राउन्ड डी० बी० बी० एल. तथा 2 खाली कारतूस बरामद किये गये।

उपाधीक्षक हताहत

15 जुलाई, 1987 को रात्रि लगभग 9.30 बजे त्रिपुरा नेशनल वालंटियर्स के एक समूह ने गाँव शिवबारी के बाजार में चढ़ाई कर 5 गैर अदिवासियों की हत्या कर दी तथा 6 अन्यो को भारी चोटें पहुंचायीं। टी०एन०वी० उग्रवादियों द्वारा 14 दुकानों तथा सैन्य कुटीरों को भी जला दिया गया। क्षेत्र के एस० डी० पी० ओ० द्वारा मैनु कैम्प से मांग किये जाने पर के.रि.पु.बल की 69 बटालियन की पांच टुकड़ियों को श्री सवाई सिंह, पुलिस उपाधीक्षक के नियंत्रण में सिविल पुलिस के एक उपनिरीक्षक के साथ बाजार में तैनात कर दिया गया। बाद में उन्हें उग्रवादियों का पीछा करने का निर्देश दिया गया।

16 जुलाई, 1987 की रात को लगभग 3.30 बजे सवाई सिंह बल के जवानों के साथ शिवबारी छोड़कर डी० ई० डी० रिजर्व फॉरेस्ट की ओर चल पड़े। पार्टी के साथ एक सिविल गाईड भी था। इसान राजपारा से 500 गज की दूरी पर 'S' आकार के एक मोड़ पर सुबह लगभग 6 बजे टी० एन० वी० उग्रवादियों के एक दल ने के० रि० पु० बल की पार्टी पर घात लगाया।

इस मुठभेड़ में के० रि० पु० बल के श्री सवाई सिंह पुलिस उपाधीक्षक, सिपाही राम किशन और सिपाही ओम प्रकाश सहित सिविल पुलिस के उप निरीक्षक और

सिावेल गाइड की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। के०रि०पु०बल के सिपाही सााबेर हुसैन को सीने में गोलियां लगीं और उसे प्राइमरी हैल्थ सैन्टर मनू में ले जाया गया, जहाँ उसे खतरे से बाहर बताया गया।

उग्रवादी मैगजीन के साथ एक 9 एम० एम० का पिस्तौल और 10 कारतूस, 3 मैगजीन के साथ एक एस०आई०आर० और 60 कारतूस, 2 एल० एम० जी० मैगजीन तथा सिविल पुलिस के उपनिरीक्षक का रिवाल्वर लेकर भाग गये।

इस पूरी मुठभेड़ में लगभग 15-20 मिनट तक दोनों ओर से गोलियां चलती रहीं। के०रि०पु० बल के जुवानों ने एस. एल. आर. से 151 राउन्ड, एल. एम. जी. से 70 राउन्ड, स्टेनगन से पाँच राउन्ड, 6 एच.ई. बम्ब, और 2 हैंड ग्रेनेड फायर किये।

बाद में उस पूरे क्षेत्र की तलाशी ली गई। और कुछ संदिग्ध व्यक्तियों को गिरफ्तार भी किया गया। श्री सवाई सिंह, ओम प्रकाश तथा रामकिशन के शव उनकी बटालियन के प्रतिनिधियों को सौंप दिए गए। बाद में 17 जुलाई, 1987 को पूरे पुलिस सम्मान के साथ बटालियन मुख्यालय में उनका दाह संस्कार कर दिया गया। इस मौके पर महानिदेशक पुलिस (त्रिपुरा), उप पुलिस महानिरीक्षक के० रि० पु० बल अगरतला तथा अन्य अधिकारी व नागरिक उपस्थित थे। मृतकों के निकट संबंधियों को सूचना भेज दी गई।

20 जुलाई, 1987 को एक विशेष संदेशवाहक के हाथों श्री सवाई सिंह, राम किशन व ओम प्रकाश के अस्थिकलश उनके निकट सम्बन्धियों के पास भेज दिए गए तथा उन्हें तत्काल राहत सहायता के रूप में 2,000, 2,000 रु० के बैंक ड्राफ्ट भी दिए गये।

रजि० नं० 47167/87

हम से सीखो

सब धर्मों के लोगों का, संगठन एक है हमारा बल ।
न जाति पांति न भेद भाव, है धर्मनिरपेक्ष हमारा बल ।
हम वीर सिपाही भारत के टुकड़े अब और न होने देंगे,
जो सम्मान भारत को मिला, उसे नहीं अब खोने देंगे।
हर देशद्रोही का काल बन कर चमकेगा हमारा बल ।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, ने सींचा है लहू से बल ।
आज दृढ़ निश्चय से भारत की सेवा में लगा है बल ।
भारत की एकता और गौरव को कायम रखेगा बल ।
सिख ईसाई मिल कर रहते, यह अपनापन हमसे सीखो।

क्या प्रेम है हिंदू मुस्लिम में आज सभी ये हमसे सीखो।

हम चाहे मरें और चाहें मिटें, पर अमर रहेगा हमारा बल।

-तेजवीर सिंह ढाका, स० उ० नि०

85 वीं वाहिनी

आल इंडिया पुलिस क्रास कंट्री मीट

12 सितंबर, 1987 को कुरुक्षेत्र में हुई 36वीं आल इंडिया पुलिस क्रास कंट्री मीट में के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों के कड़े मुकाबले के बावजूद बी. एस. एफ. के खिलाड़ी टाफी पर कब्जा जमाने में सफल रहे। अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी विद्याधर के नेतृत्व में सीमा सुरक्षा बल ने 40 अंक प्राप्त कर टाफी पर कब्जा जमा लिया।

विद्याधर ने शुरू से ही अपनी लीड बनाए रखी लेकिन अन्तिम 200 मीटर में उसने आश्चर्यजनक गति का परिचय देते हुए 38 मिनट, 40 सैकेंड में दौड़ पूरी की। दूसरे नम्बर पर उन्हीं की टीम के अशोक कुमार ने 8 सैकेंड बाद दौड़ पूरी की। उत्तर प्रदेश पुलिस के बहादुर प्रसाद 39 मिनट, 21 सैकेंड में दौड़ पूरी कर तीसरे स्थान पर रहे। के० रि० पु० बल की टीम दूसरे स्थान पर रही।

के. रि० पु० बल के शमसुद्दीन ने 39 मिनट, 30 सैकेंड में दौड़ पूरी की। भूतपूर्व ओलंपियन हरिचन्द के भाई जीतराम 39 मिनट, 39 सैकेंड में दौड़ पूरी कर छठे स्थान पर रहे।

मोटर साइकिलों पर शांति संदेश

अपनी मोटरसाइकिलों पर सवार वे चारों पूरे देश का भ्रमण कर रहे हैं, उनका एक ही उद्देश्य है पूरे देश में शांति, एकता, भाईचारे और सद्भावना का संदेश फैलाना। अदम्य उत्साह व साहस के धनी ये चार युवक हैं के० रि० पु० बल की चौथी बटालियन के उपनिरीक्षक जसपाल सिंह, राजस्थान के सुनील दीक्षित, राजस्थान के ही हेमंत कुमार वोहरा तथा के० रि० पु० बल (माउंट आबू) की इंटरनल सिक्योरिटी एकेडमी के ए० के० सोमैया।

यह दल माउन्ट आबू से 13 अगस्त को रवाना हुआ। आबू, ओरवा, पोरबंदर, राजकोट, अहमदाबाद, सूरत, बंबई, गोवा, बंगलौर, मैसूर, तेल्लीचेरी, कोचीन, त्रिवेंद्रम, कन्याकुमारी, रामेश्वरम, मदुरई, तिरुची, पांडिचेरी तथा मद्रास आदि शहरों और राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु के इलाकों से होता हुआ वापस माउन्ट आबू पहुंचा। इस दल ने लगभग 400 किलोमीटर का सफर रोज तय किया।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथोनेयल तथा आनिल गुप्ता।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खण्ड—1

अंक—5

मूल्य—1.60 रुपये

30 नवम्बर, 1987

9 अग्रहायण, शक संवत् 1909



महाराष्ट्र पुलिस की फुटबाल टीम से परिचय प्राप्त करते हुए महानिदेशक श्री एस. डी. पाण्डेय । पश्चिमी क्षेत्र पुलिस खेलों की आयोजन समिति के सचिव श्री डी आर यादव जिसमे पीछे रिवाई ले रहे हैं ।

पश्चिमी क्षेत्र पुलिस खेलकूद प्रतियोगिता

महाराष्ट्र के खिलाड़ी श्रेष्ठ साबित

अजमेर में आयोजित 8 दिवसीय 37वीं अखिल भारतीय पश्चिम क्षेत्र पुलिस खेलकूद प्रतियोगिता 17 नवम्बर को एक रंगारंग समारोह के साथ समाप्त हो गई। इस अवसर पर के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय उपस्थित थे। इस आठ दिवसीय प्रतियोगिता में पश्चिमी क्षेत्र के पांच राज्यों की पुलिस व दो अर्द्ध सैनिक बलों ने भाग लिया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र-I पर आयोजित समापन समारोह में दर्शकों से खचाखच भरे स्टेडियम में केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, नीमच के प्रशिक्षणार्थियों ने जूडो कराटे का सुन्दर प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सतीश दत्त पांडेय ने खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश के पश्चिम क्षेत्र से आए पुलिस कर्मियों के बीच आकर व उनके खेल प्रदर्शनों को देखकर उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई है। श्री पांडेय ने कही कि इस तरह के खेल आयोजनों से जहां एक दूसरे के प्रति आपसी प्रेमभाव व भाईचारे की भावना का विकास होता है, वहीं एक दूसरे के साथ खेल भावनाओं के साथ खेल कर, खेलों का वास्तविक आनन्द भी लिया जा सकता है।

इससे पूर्व उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री सी० एस० द्विवेदी ने प्रतियोगिता की विस्तृत जानकारी एवं खिलाड़ियों व आयोजकों को बधाई दी।

प्रतियोगिता के अन्तिम दिन खेले गए फुटबाल मुकाबले में महाराष्ट्र ने भारत तिब्बत सीमा पुलिस को 3-0 से परास्त कर 12 अंकों के साथ चैम्पियनशिप जीत ली।

इस स्पर्धा में तीसरा स्थान एस. एस. बी. (6 अंक) को, चौथा स्थान राजस्थान (6 अंक) को, पांचवा स्थान मध्य प्रदेश (4 अंक) को, छठा स्थान गोवा (4 अंक) को, तथा सातवां स्थान गुजरात (1 अंक) को प्राप्त हुआ।



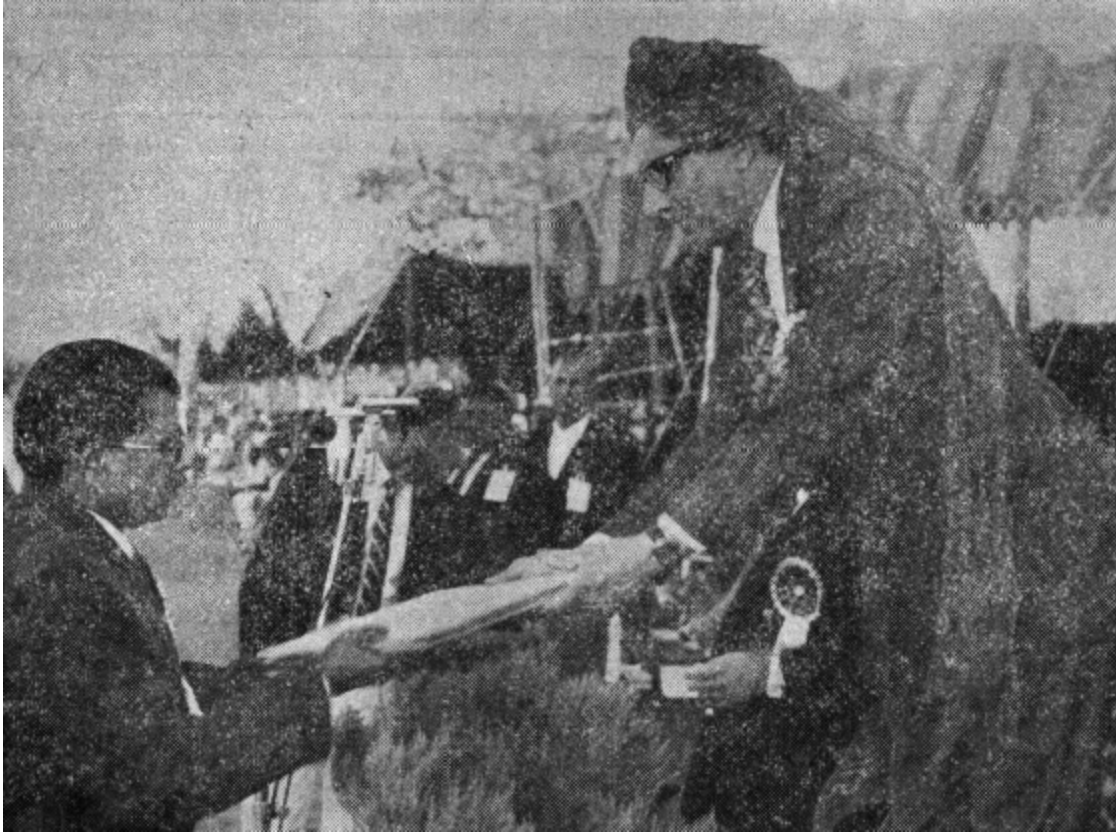
पश्चिमी क्षेत्र पुलिस खेलों की आयोजन समिति के सदस्य

लीग के अंतिम मुकाबले में महाराष्ट्र के । खिलाड़ियों ने खेल के प्रारम्भ से ही विपक्षी टीम पर धावे बोलने शुरू कर दिए।

भा० ति० सी० पु० को पहला स्थान प्राप्त करने के लिए यह मैच जीतना आवश्यक था, परन्तु आपसी तालमेल की कमजोरी व महाराष्ट्र के मजबूत क्षेत्र रक्षण के आगे उसके खिलाड़ी गोल बना पाने में असफल रहे।

वालीबाल मैच में भा० ति० सी० पुलिस, मध्य प्रदेश पुलिस को 15-3; 15-7 और 15-7 से पराजित कर 12 अंकों के साथ आसानी से विजेता का खिताब पा गई। राजस्थान पुलिस 8 अंकों के साथ उप विजेता रही। जबकि मध्य प्रदेश पुलिस 8 अंक पाने के बावजूद तीसरे स्थान पर रही।

जूडो में भा० ति० सी० पुलिस के बालाराम 55 किग्रा० वर्ग में प्रथम रहे. जबकि 85 किग्रा० से ऊपर वाले वर्ग में भा० ति० सी० पुलिस के ही मनोहरदास प्रथम रहे । ओपन वेट में मध्य प्रदेश के श्रीभगवान विजेता रहे।



श्री एस. डी. पाण्डेय महाराष्ट्र टीम के मैनेजर को खिताब जीतने पर पुरस्कार प्रदान करते हुए।

68 किग्रा० से कम वाले वर्ग में भा० ति० सी० पुलिस के सतबीरसिंह, 85 किग्रा. से नीचे वाले वर्ग में मध्य प्रदेश के सियाराम, 50 किग्रा० वाले वर्ग में मध्य प्रदेश के महादेव, 61 किग्रा० से. नीचे वाले वर्ग में भा० ति० सी० पुलिस के बाबूराम तथा 76 किग्रा० वर्ग में मध्य प्रदेश के भरत यादव प्रथम रहे।

समारोह के अंत में के० रि० पु० बल के दोनों बैंडों ने शानदार प्रदर्शन किया।

छाया : डी० एन० तिवारी

नीमच में शहीद दिवस

21 अक्टूबर, 1987 को के० रि० पु० बल नीमच कैंप परिसर में स्थित त्रेगंजा पार्क के शहीद स्मारक पर पूरे श्रद्धाभाव एवं पुलिस परम्परा के अनुसार शहीद दिवस मनाया गया। यह पार्क इलाके के श्रेष्ठ पार्कों में से एक है। इस पार्क का शिलान्यास तत्कालीन कमांडेंट श्री ई० ए० गंजा, आई. पी. एस., द्वारा 1943 में किया गया था। पार्क के बीचोंबीच शहीद स्मारक बना हुआ है और इसके नीचे के० रि० पु० बल के उन जवानों व अधिकारियों के नाम खुदे हैं जिन्होंने देश के लिए हंसते हुए प्राण न्यौछावर कर दिये।

21 अक्टूबर, 1959 को लद्दाख के हाटास्प्रेंग क्षेत्र में देश की रक्षा के लिये सीमा पर तैनात के० रि० पु० बल के कुछ जवानों ने चीनी हमले का जोरदार ढंग से मुकाबला करते हुए हँसते हँसते अपने प्राण गवां दिए पर देश पर आंच न आने दी। उसी दिन के इस गौरवपूर्ण बलिदान की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सभी प्रान्तों के पुलिस मुख्यालयों पर उन वीरों की स्मृति में 21 अक्टूबर का दिन शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इस मौके पर नीमच में स्थित वरिष्ठ अधिकारियों ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित किए। ग्रुप केन्द्र की एक विशेष टुकड़ी द्वारा सलामी दी गई, शहीदों के सम्मान में ध्वज आधा झकाया गया तथा सभी जवानों व अधिकारियों ने दो मिनट का मौन रख कर शहीदों की भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

दीपावली उपहार

इटानगर स्थित 8वीं बटालियन की 'एफ' कम्पनी की एक प्लाटून इटानगर स्थित अरुणाचल प्रदेश के राजभवन पर सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात थी। दीपावली उत्सव की पूर्व संध्या पर अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री आर० डी० प्रधान एवं उनकी पत्नी ने ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा कर्मियों को दीपावली की शुभकामनाएँ भेजते हुए 500 रुपए मिठाई के लिए भी भेंट किए।

कभी-कभी मौन रह जाना सबसे तीखी आलोचना होती है।

—अज्ञात

गरीबी लज्जा नहीं है, परन्तु गरीबी से लज्जित होना लज्जा की बात है।

—एक कहावत

पंजाब से

बल के दो कार्मिक उग्रवादियों के शिकार

के० रि० पु० बल की 30 वीं बटालियन की 'ई' कम्पनी के कांस्टेबल रामल भेंगरा एवं बी० डी० बाँटे उस समय मारे गए जब उन की जीप पर कपूरथला जिले के धुनमंड व कबीरपुर इलाकों के बीच उग्रवादियों द्वारा घात लगा कर आक्रमण किया

गया। घटना 31 अक्टूबर, 1987 को घटी।

कबीरपुर से लगभग 3 किलोमीटर दूर दुई बाध के नजदीक उग्रवादियों के आक्रमण के बाद कां० विक्रमन नायर द्वारा चलाई जा रही जीप के दोनों ओर से उग्रवादियों द्वारा भयंकर फायरिंग की गई। जीप में बैठे दो कांस्टेबल जीप से नीचे कूद पड़े।

डाइवर द्वारा उग्रवादियों द्वारा घात लगाए स्थान से लगभग 500 गज के फासले पर जीप खड़ी करते ही नायक उपेन्द्रनाथ ने पोजिशन ले कर उग्रवादियों की ओर फायर कर दिया। जबकि इसी दौरान डाइवर ने कबीरपुर स्थित के० रि० पु० बल पोस्ट को इस घटना के बारे में सूचित कर दिया।

पोस्ट के प्लाटून कमांडर तत्काल बल के दो सेक्शनों के साथ घटनास्थल की ओर कूच कर गए, जहां उन्होंने कांस्टेबल भेंगरा तथा बाँटे को मृत पाया, उनके हथियार व बारूद भी उग्रवादी अपने साथ ले गये थे। मृतकों के पास से गुरमुखी में लिखा एक पत्र पाया गया, जिस में हत्याओं की जिम्मेदारी खालिस्तान कमांडो फोर्स ने ली थी।

छः आतंकवादी पकड़े

26 सितम्बर, 1987 को के० रि० पु० बल की 16 बटालियन और स्थानीय पुलिस की गश्ती पार्टियों ने साथ मिलकर गांव धनेसर (जिला जालंधर) में छः संदिग्ध आतंकवादियों को पकड़ लिया। उन आतंकवादियों से एक .315 पिस्तौल, पंद्रह .315 गोलियाँ, एक 12 बोर की पिस्तौल, बारह 12 बोर के कारतूस, तथा एक .315 राईफल जिस पर शहीद जरनैल सिंह हलवाला रेजीमेंट छपा था, बरामद की गई। वे उस वक्त पकड़े गए जब वे कन्धयाना गांव में डकैती डालने की योजना बना रहे थे।

पाँच आतंकवादी मरे

11 जुलाई, 1987 को 2.45 बजे जब के० रि० पु० बल की 85 बटालियन की 'ए' कम्पनी के जवान स्थानीय पुलिस के साथ कटोरा गांव के पास गश्त कर रहे थे, तो आतंकवादियों ने उन पर गोलीबारी की। बल के कार्मिकों ने जवाब में गोली चलाई, जिससे पाँच आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारे गए। घटनास्थल पर तलाशी के दौरान एक स्टेनगन मैगजीन सहित तीन पिस्तौलें जिनमें .455 बोर की प्रत्येक में गोली थी, 12 बोर और .38 बोर और कुछ सजीव कारतूस बरामद किए।

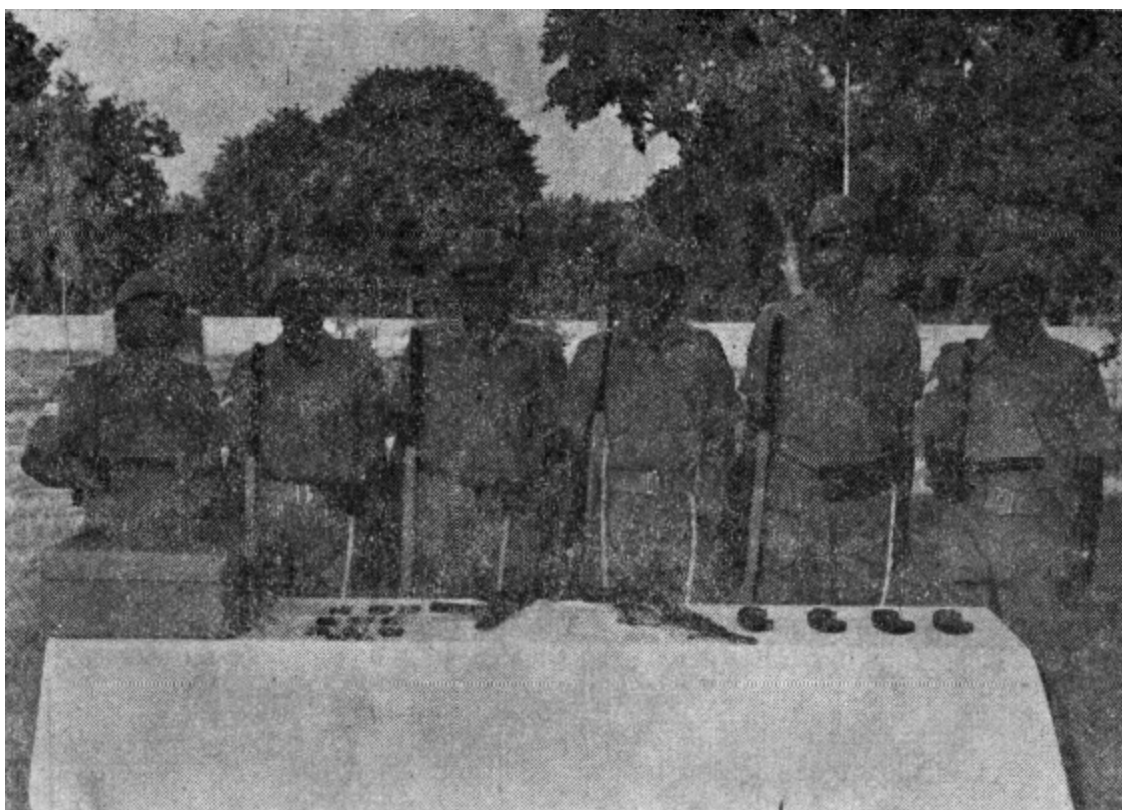
एक आतंकवादी पकड़ा

20 सितम्बर, 1987 को के० रि० पु० बल की चार बटालियन की 'ई' कम्पनी ने स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर सिंधीवाला गाँव में छापा मारा और बलदेव सिंह नामक आतंकवादी को पकड़ कर उससे एक 12 बोर गन, दो 12 बोर कारतूस तथा

17 गोलेयां बरामद की।

13वीं बटालियन के जवानों ने डकैती रोकी

20 अक्टूबर, 1987 को प्रातः लगभग 10.45 बजे चंडीगढ़ के सेक्टर 22-डी में स्थित मैसर्स निकामल बाबूराम ज्वैलर्स की दुकान में पांच आतंकवादियों ने प्रवेश किया। बंदूक की नोक पर सभी के हाथ उठवा कर वे अपने साथ लाए सूटकेस में दुकान के मूल्यवान हीरे जवाहरात तथा सोना चांदी भरने लगे।



आतंकवादियों द्वारा छोड़े गए सामान के साथ 13वीं बटालियन के जवान।

उस समय के० रि० पु० बल की 13 बटालियन की 'एफ' कम्पनी का एक सेक्शन है कां० तारबू लांमा के नेतृत्व में सेक्टर 22-डी में पेट्रोल ड्यूटी पर था। यह सेक्शन सुरक्षा की दृष्टि से विभिन्न स्थानों को कवर करने के लिए 100 से 200 गज के इलाके में फैला हुआ था। इसी सेक्शन का कांस्टेबल धर्मपाल जब इस दुकान के पास से गुजरा तो इसे कुछ असामान्य सी आवाजें सुनाई दीं। उसने शीशों से दुकान के भीतर देखने का प्रयास किया, लेकिन किसी ने अन्दर से पर्दे गिरा कर दरवाजा बंद कर दिया था। कांस्टेबल को इस पर संदेह हुआ और उसने सेक्शन के दूसरे सदस्यों को संकेत देने के बाद उन्हें दूसरी तरफ से दुकान के नज़दीक आने का सिगनल दिया।

और उसने दुकान की दूसरी तरफ से अन्दर प्रवेश करने की कोशिश की। के० रि० पु० बल के जवानों को देखते ही आतंकवादी वह सूटकेस जिसमें उन्होंने दुकान के कीमती जेवरात इकट्ठे किए हुए थे तथा एक बैग छोड़ कर पिछले दरवाजे से भाग खड़े हुए। इस समय तक बाजार में काफी भीड़भाड़ हो चुकी थी। दीपावली के कारण ठसाठस भरी दुकानों व भीड़ भरे बाजार के बीच में बल के जवान न तो उग्रवादियों पर गोली ही चला सकते थे और न ही सही ढंग से उनका पीछा ही किया जा सकता था। इसी बात का लाभ उठा कर उग्रवादी भाग निकलने में कामयाब हो गये। इस सबके बावजूद कांस्टेबल धर्मपाल ने भागते उग्रवादियों पर एक राउन्ड फायर किया, पलट कर आतंकवादियों ने दो फायर किए और भीड़ भरे बाजार का फायदा उठाते हुए आंखों से ओझल हो गए। आतंकवादियों द्वारा छोड़ी गई अटैची व बैग की तलाशी लेने पर उसमें से दुकान से इकट्ठा किए गए लगभग 70 लाख के गहने, एक चीनी मार्का 47 असाल्ट राइफल चार मैगजीन सहित, 24 सजीव कारतूस, एक .38 विदेश निर्मित स्टेनगन मैगजीन सहित तथा 3 राउन्ड बरामद किये गए। चंडीगढ़ क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक बल के इन जवानों के इस कारनामे से बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने तत्काल एक प्रेस सम्मेलन बुला कर कां० धर्मपाल को 1,000 रुपये, तथा 200 रुपये सेक्शन में शामिल प्रत्येक जवान को तत्काल भेंट किये। दल में कां० नारबू थामिंग, लां० नां० जयकरन, नां० बंसीलाल, कांस्टेबल राजकुमार तथा कांस्टेबल दलालसिंह शामिल थे। सभी को - 'ए' क्लास सर्टिफिकेट भी दिया गया।

दो मुठभेड़ों में तीन आतंकवादी मरे

2 अक्टूबर, 1987 को 1750 बजे 24 बटालियन के०रि०पु० बल की एक पार्टी अजनाला के पुलिस उपअधीक्षक के साथ मिलकर राजा साँसी में रामलीला की व्यवस्था के लिए जा रही थी। रास्ते में उन्हें सूचना मिली कि गांव तुला नंगल में तिपहिया स्कूटर पर सवार आतंकवादियों द्वारा घात के दौरान तीन पुलिस वाले मारे गए। टुकड़ी यह सुनकर सावधान हो गई। उन्होंने तुला नांगल और ख्याला में नाकाबंदी कर दी। लगभग 1800 बजे 5 सशस्त्र आदमी लाहोर कनाल कोहली में के०रि०पु० बल के जवानों को दिखाई दिए। वे आदमी पुलिस बल को देखते ही सावधान हो गए और उन्होंने आटोमैटिक हथियारों से गोली चलानी शुरू कर दी। जवाब में पुलिस कर्मियों ने भी गोली चलाई। लगभग 15 मिनट तक गोलीबारी होती रही। इस मुठभेड़ में सुखदेव सिंह पंडरी पुत्र अंग्रेज सिंह जाट गाँव चमारियन मारा गया। वह 'ए' वर्ग का आतंकवादी था जिसको पकड़ने के लिए 50,000 रुपये का इनाम था। उसके पास से ए० के०-47 राइफल और खाली मैगजीन तथा 10 सजीव गोलियों से भरे मैगजीन प्राप्त हुए।

बल की अतिरिक्त टुकड़ी और पंजाब पुलिस ने क्षेत्र की छानबीन की। बाद में इसी गिरोह से फिर मुठभेड़ हुई और दो आतंकवादी मारे गए। मारे गए आतंकवादियों से एक चीनी क्रशर गन, 15 सजीव गोलियाँ मैगजीन के साथ, 4 फायरड खोखे, एक

सिंगल बैरल गन, 4 सजीव गोलियाँ, एक खाली खोखा, तथा एक पी० सी० ओ० 1219 नं० का स्कूटर भी बरामद हुआ।

छः आतंकवादी गिरफ्तार

के० रि० पु० बल की 24 बटालियन और स्थानीय पुलिस ने मिलकर 1 अक्टूबर, 1987 को जरनैल सिंह डेरा पुलिस स्टेशन रामदारा में छापामारी की और 6 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। पकड़े गए आतंकवादियों से एक .32 बोर पिस्तौल, एक .303 पिस्तौल, चार .303 सजीव गोलियाँ, दो 12 बोर पिस्तौल, एक 12 बोर की सिंगल बैरल गन, एक 12 बोर डी०बी०बी०एल० गन, चार .32 बोर एम्युनिशन, पन्द्रह 12 बोर के सजीव कारतूस, तीन 12 बोर के खाली खोके बरामद किए गए।

गोला बारूद बरामद

2 अक्टूबर, 1987 को 2100 बजे के० रि० पु० बल की 48 बटालियन की 'ए' कम्पनी ने बहेला और कड़गिल के बीच कनाल ब्रिज के पास घात लगाई। जब पार्टी मुगल चौक गाँव में जा रही थी तो एक आतंकवादी ने गोली चलाई। आपस में गोलीबारी के बाद आतंकवादी अंधेरे की आड़ में कड़गिल से भाग निकला। इलाके की छानबीन के बाद एक .303 देशी पिस्तौल, एक 12 बोर की पिस्तौल, नौ .303 गोलियाँ, दो 12 बोर के कारतूस, एक एस०बी०बी०एल 12 बोर की गन तथा पाँच 12 बोर के खाली कारतूस बरामद किए गए।

श्री पी० जी० हलर्नकर

बल के नए अपर महानिदेशक

2 सितंबर, 1987 को श्री पी. जी. हलर्नकर ने के. रि. पु. बल के अपर महानिदेशक पद का कार्यभार संभाल लिया।

श्री हलर्नकर भारतीय पुलिस सेवा के कर्नाटक कैडर से हैं, जिसके साथ वह 1956 से जुड़े हैं।

श्री हलर्नकर इससे पूर्व महानिदेशक पुलिस तथा कमांडेन्ट जनरल होम गार्ड्स;

महानिदेशक, रेलवे पुलिस; निदेशक, आग्ने शमन दल तथा कर्नाटक सोवेल डिफेंस के निदेशक रह चुके हैं।

1983-86 में बंगलौर के पुलिस कमिश्नर रहते हुए सार्क सम्मेलन के दौरान सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी इनके ही कंधों पर थी। इनकी अद्वितीय सेवाओं के लिए इन्हें राष्ट्रपति के पुलिस पदक व पुलिस मैडल से सम्मानित किया जा चुका है। बंगलौर में आयोजित सार्क सम्मेलन के दौरान, जिसमें सात राष्ट्राध्यक्ष भाग ले रहे थे, सुरक्षा व्यवस्था करना एक कठिन चुनौती थी, जिसे राज्य की पुलिस ने श्री हलर्नकर के नेतृत्व में सफलतापूर्वक पूरा किया। इन चार वर्षों का कार्यकाल श्री हलर्नकर के लिए यों भी चुनौतीपूर्ण रहा। इसी दौरान यहां पर साम्प्रदायिक दंगे भड़के तथा स्थिति विस्फोटक हो उठी, लेकिन श्री हलर्नकर सूझबूझ का परिचय देते हुए बहुत ही कम समय में स्थिति को सामान्य बनाने व फिर से शांति व्यवस्था कायम करने में सफल रहे।



श्री हलर्नकर कर्नाटक विश्वविद्यालय से स्नातक हैं, तथा उन्होंने अपनी विधि डिग्री बम्बई विश्वविद्यालय से ली है। बागवानी तथा अध्ययन उनके प्रिय शौक हैं।

उनके परिवार में पत्नी व दो बच्चे हैं। उनकी पत्नी फिजियोथैरेपिस्ट हैं तथा स्पास्टिक्स की विशेषज्ञ हैं। वह बंगलौर में स्पास्टिक्स सोसायटी द्वारा चलाए जा रहे 'सेन्टर फार स्पेशल एजुकेशन' की प्रिंसिपल रही हैं। वर्तमान में वह स्पास्टिक सोसायटी आफ इंडिया के मैनेजमेंट डिवीजन की अध्यक्ष हैं। यह सोसायटी राजधानी के हौजखास क्षेत्र में स्पास्टिक बच्चों के एक केन्द्र को चला रही हैं।

शूटिंग में ढिल्लन चमके

हाल ही में दिल्ली के तुगलकाबाद रेंज में हुई दिल्ली स्टेट शूटिंग चैम्पियनशिप में के० रि० पु० बल के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी सहायक कमांडेंट तेजिंदर सिंह ढिल्लन व्यक्तिगत खिताब पर तीन स्वर्ण व एक रजत पदक जीत कर लगातार तीसरे वर्ष कब्जा जमाने में सफल रहे।

उन्हें स्वर्ण पदक .22 राइफल ओपन साइट व्यक्तिगत प्रतियोगिता में मिला, जिसमें उन्होंने 200 में से 176 अंक प्राप्त किए। उन्हीं के साथ के बच्चालाल सिंह उन से पाँच अंक कम प्राप्त कर के रजत पदक पाने में सफल रहे। जबकि शकुन भुगरा को कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

स्टैंडर्ड पिस्टल ओपन प्रतियोगिता में भी ढिल्लन 300 में से 265 अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक पाने में सफल रहे। यहां रजत पदक पर दिल्ली प्रशासन के एक चिकित्सा अधिकारी ने कब्जा जमाया। उन्हें 252 अंक प्राप्त हुए। बल के लक्ष्मण ने 9 अंक कम प्राप्त करके कांस्य पदक प्राप्त किया।

बल की टीम के तेजिंदर सिंह ढिल्लन, बच्चालाल सिंह तथा जी. के. थंकाचन ने .22 राइफल ओपन प्रतियोगिता में टीम के लिए स्वर्ण पदक पर आसानी से कब्जा जमा लिया। उन्होंने 600 में से 517 अंक प्राप्त किए। दिल्ली पुलिस 429 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही। सेंट स्टीफन कालिज की टीम 6 अंक कम प्राप्त करके तीसरे स्थान पर रही।

सेंटर फायर पिस्टल टीम प्रतियोगिता में बल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। यह प्रतियोगिता डा० राजपाल सिंह, सरबजीत सिंह तथा बालेश देवी की डाक्टरों की टीम ने जीती। उन्होंने 600 में से 518 अंक प्राप्त किए। बल के लिए तेजिंदर सिंह ढिल्लन, टेरा राम तथा लक्ष्मण सरकार ने 509 अंक प्राप्त किए। जबकि प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए बनाए गए विशेष सुरक्षा दस्ते ने 29 अंक कम प्राप्त करके तीसरा स्थान प्राप्त किया।

इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न स्कूलों, कालिजों, सुरक्षा, सैनिक व अर्द्ध सैनिक बलों तथा अन्य विभागों से जुड़े 250 लोगों ने भाग लिया।

दिल्ली क्षेत्र के जी. ओ. सी.-इन कमांड मेजर जनरल वी. बधवार ने पुरस्कार वितरित किए।

संजय गांधी स्मृति हाकी टूर्नामेंट

के० रि० पु० बल की विजय

1 अक्टूबर 1987 को दिल्ली के शिवाजी स्टेडियम में हुए 8वें आखिल भारतीय संजय गांधी मैमोरियल हाकी टूर्नामेंट में के० रि० पु० बल की टीम ने टाई ब्रेकर के दौरान इन्डियन एयर लाइन्स को 5-3 से हरा कर खिताब पर कब्जा जमा लिया।

फाइनल मैच के रोमांचक मुकाबले में के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों ने शुरू से ही आक्रमक रुख अपनाए रखा; लेकिन इन्डियन एयर लाइन के खिलाड़ियों ने उनके हर मुकाबले को विफल कर दिया।

खेल के 14वें मिनट में के० रि० पु० बल के देवेन्द्रपाल सिंह द्वारा किये गए एक गोल को इन्डियन एयर लाइन्स के गोल कीपर सुबैय्या ने बहुत ही खूबसूरत ढंग से रोक लिया।

इसके बाद एयर लाइन्स की अग्रिम पंक्ति ने के० रि० पु० बल पर दबाव बनाए रखा। लेकिन बल के गोलकीपर रामाओरन ने बहुत ही खूबसूरत अंदाज से उनके तमाम प्रयासों को विफल कर दिया। मैच का पहला गोल खेल के 33वें मिनट में हुआ जब एयर लाइंस के गुरचरण सिंह ने बल के गोल कीपर रामा ओरन को छकाते हुए गोल कर दिया।

इस गोल के बाद जहां एयर लाइंस के खिलाड़ियों का हौसला बहुत बढ़ गया, वहीं के० रि० पु० बल के खिलाड़ी भी मैच को बराबरी पर लाने के लिये कड़ा संघर्ष करने लगे। उनका यह संघर्ष खेल के 69वें मिनट में रंग लाया जब उन्होंने एक पेनल्टी स्ट्रोक के द्वारा अपना स्कोर बराबर कर लिया।

खेल अन्त तक अनिर्णायक ही रहा। के० रि० पु० बल की तरफ से डी० एम० शर्मा; सुबोध भेंगदा, अश्विनी कुमार तथा किशोर कुमार ने अपने जौहर दिखाये, जबकि एयर लाइंस की ओर से सुजीत कुमार तथा विनीत कुमार का खेल सर्वोत्तम रहा।

पैनल्टी स्ट्रोक के दौरान बल के गोल कीपर रामा ओरन के स्थान पर राजेन्द्र शर्मा द्वारा बचाए गये तीन गोलों के दौरान उनका प्रदर्शन बेहतरीन रहा।

कांस्टेबल रामा ओरन; ला० ना० सुबोध बेंगरा तथा लुगुन जोसफ, नायक अश्विनी कुमार तथा हैड कांस्टेबल देवेन्द्रपाल सिंह के उत्तमः प्रदर्शन के लिये उन्हें महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय द्वारा उच्च पदों पर पदोन्नत कर दिया गया। के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय फाइनल मैच के दौरान मौजूद थे।

इससे पहले सेमी फाइनल में के० रि० पु० बल ने उत्तर पूर्वी रेलवे को 4-3 से हराया था; जबकि एयर लाइंस, इलेक्ट्रिकल एवं मैकनिकल इंजीनियर्स को 2-1 से हरा कर फाइनल में आ पाई थी।



इण्डियन एयर लाइन्स के गोल पर बल के खिलाड़ियों का धावा

एक परिचय लुगुन जोसफ

हाल ही में राजधानी में संपन्न हुई अखिल भारतीय संजय गांधी स्मृति हाकी प्रतियोगिता में के०रि०पु० बल के लेफ्ट बैक 25 वर्षीय लुगुन जोसफ खासे चर्चित रहे।

उन्होंने प्रतिद्वन्दी टीम के आक्रमणों को जिस ढंग से रोककर उन्हें करारा जवाब दिया, उसे खेल प्रेमी लम्बे समय तक याद रखेंगे।

इण्डियन एयर लाइन्स के खिलाफ के०रि०पु० बल की जीत का काफी कुछ श्रेय लुगुन के उस एक गोल को भी जाता है, जिससे दोनों टीमों का स्कोर बराबर हो गया था। पेनल्टी कार्नर का फायदा उठाते हुए लुगुन ने एयर लाइन्स पर एक गोल दाग कर के०रि०पु० बल को उसके बराबर ला खड़ा किया था। बाद में मैच का निर्णय पेनल्टी कार्नरों के आधार पर ही किया गया।

पहले के सेमी फाइनल मैच में उत्तरी पूर्वी रेलवे के खिलाफ खेलते समय लुगुन के द्वारा किए गए एक गोल के कारण ही के०रि०पु० बल की टीम फाइनल में पहुंच सकी।



बिहार के गुमला जिले के एक गांव में जन्में 5'5" लम्बे लुगुन ने 11 वर्ष की उम्र से ही हाकी खेलना शुरू कर दिया था। लुगुन ने अपने सेंट वियान्स हाई स्कूल का कई प्रतियोगिताओं में प्रतिनिधित्व किया। लुगुन ने 1980 और 1984 में जयपाल स्मृति स्वर्ण कप प्रतियोगिता में जमशेदपुर XI का भी प्रतिनिधित्व किया।

1982 में के.रि.पु. बल में कांस्टेबल के रूप में भर्ती होने के बाद जब लुगुन आर. टी. सी. अवाड़ी मद्रास में अपनी ट्रेनिंग पूरी कर रहे थे, तो के.रि.पु. बल के कोच श्री एस. एस. मान की निगाह उन पर पड़ी और प्रतियोगी परीक्षाओं के बाद उनका चयन के.रि.पु. बल की टीम के लिए कर लिया गया। तभी से लुगुन लगातार के.रि.पु. बल की टीम में बने हुए हैं। इसी वर्ष उन्होंने पुणे में हुई राष्ट्रीय हाकी चैम्पियनशिप में मध्य भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

भारतीय हाकी के गिरते हुए स्तर के बारे में लुगुन का कहना है कि इसके लिए हमें नई प्रतिभाओं को आगे लाकर कुछ वर्षों तक कैंपों में प्रशिक्षण देना चाहिये। उन्हें एस्ट्रो टर्फ के ऊपर खेलने का प्रशिक्षण देना चाहिये ताकि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

रजि० नं० 47167/87

समाचार

बल के कार्मिक ने मैराथन जीते

40वीं बटालियन के कांस्टेबल लक्ष्मण टोकरे ने 8 नवम्बर, 1987 को कोटा में जे. के. स्पोर्ट्स कौंसिल मैराथन जीतकर नकद पुरस्कार राशि प्राप्त की।

लक्ष्मण टोकरे ने 42 किलोमीटर की कष्टदायक दौड़ को 2 घंटे 30 मिनट और 35 सेकेंड में पूरा कर 5,000 रुपए की पुरस्कार राशि पर कब्जा कर लिया।

इस दौड़ में लगभग 150 धावकों ने भाग लिया। दौड़ का आयोजन जे० के० स्पोर्ट्स कौंसिल तथा राजस्थान एथलेटिक्स एसोसिएशन ने किया था।

दो आतंकवादी मारे गए

1 अक्टूबर, 1987 को प्रातः 8.30 बजे गांव छीप सिंधवाला जिला फिरोजपुर के अधीन पुलिस स्टेशन सादिक का नम्बरदार अजायबसिंह कुछ अज्ञात आतंकवादियों द्वारा मारा गया। सूचना प्राप्त होने पर 45 बटालियन और स्थानीय पुलिस की एक टुकड़ी घटनास्थल पर पहुंची और पूछताछ शुरू कर दी। पूछताछ के दौरान पता चला कि आतंकवादी सरसों के खेतों में छिपे हैं। पार्टी शीघ्र वहाँ गई और आतंकवादियों को बाहर निकलने के लिए ललकारा। बाहर आने के बजाए उन्होंने गोली चलानी शुरू कर दी। आधे घंटे तक दोनों ओर से गोलीबारी होती रही। परिणामस्वरूप एक आतंकवादी मारा गया। घटनास्थल से एक .455 सर्विस रिवाल्वर, एक .22 पिस्तौल बारह .22 खाली खोके, .22 सजीव गोलियां, एक थैला जिसमें 21 सजीव गोलियां और 23 खाली खोके थे तथा एक ए० के० 47 असाल्ट रायफल बरामद की गई।

2 अक्टूबर, 1987 को 21.30 बजे के०रि०पु०बल की 40 बटालियन ने पंजाब पुलिस के साथ मिलकर लिंक रोड गाँव लाडोवाली के बीच और पुलिस स्टेशन सदर चुगटी में नाकाबन्दी की। पार्टी ने 2200 बजे होशियारपुर सड़क पर आते दो स्कूटरों पर सवार 4 सिख युवकों को रुकने को कहा, रुकने के बजाए उन्होंने गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। बल के कार्मिकों द्वारा जवाब में गोली चलाने पर एक सिख युवक घटना स्थल पर मारा गया और बाकी युवक भाग निकले। घटना स्थल से एक .32 रिवाल्वर सजीव एम्यूनीशन सहित/खाली खोके, एक स्कूटर नं० पी०सी०ए० 6955, एक 12 बोर गन तथा 5,200 रुपए नकद बरामद किए गए।

बल कार्मिकों ने प्रतियोगिताएं जीती

केरल स्थित केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों उपक्रमों, निगमों राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुअनंतपुरम के संयुक्त तत्वाधान में 14 सितम्बर, 1987 से 20 सितम्बर, 1987 तक राज्य स्तर पर हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह के

सिलासिले में 18 सितम्बर को केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें के०रि०पु० बल के कर्मिकों ने भी भाग लिया। हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में हिन्दी अनुवादक बालकृष्ण सोनी द्वितीय रहे। नोटिंग/ड्राफ्टिंग में उ०नि० (लिपिक) एम० के० एन० पिल्ले को तीसरा स्थान मिला। वह वक्तता भाषण प्रतियोगिता में भी तृतीय रहे और निबंध लेखन प्रतियोगिता में लांस नायक एम. पी. सिन्हा को तीसरा स्थान मिला।

मुख्य सम्पादक : एच०एस० सेठी।

सम्पादक : एम०पी० नथैनियल तथा अनिल गुप्ता।

मुद्रक : सी०आर०पी०एफ० प्रेस, झड़ौदा कलाँ, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु०बल, ब्लॉक-1, सी०जी०ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच०एस० सेठी।

सीआरपीएफ समाचार

वार्षिकोत्सव अंक

खण्ड-1

अंक-6

मूल्य-5.50 रुपये

31 दिसम्बर, 1987

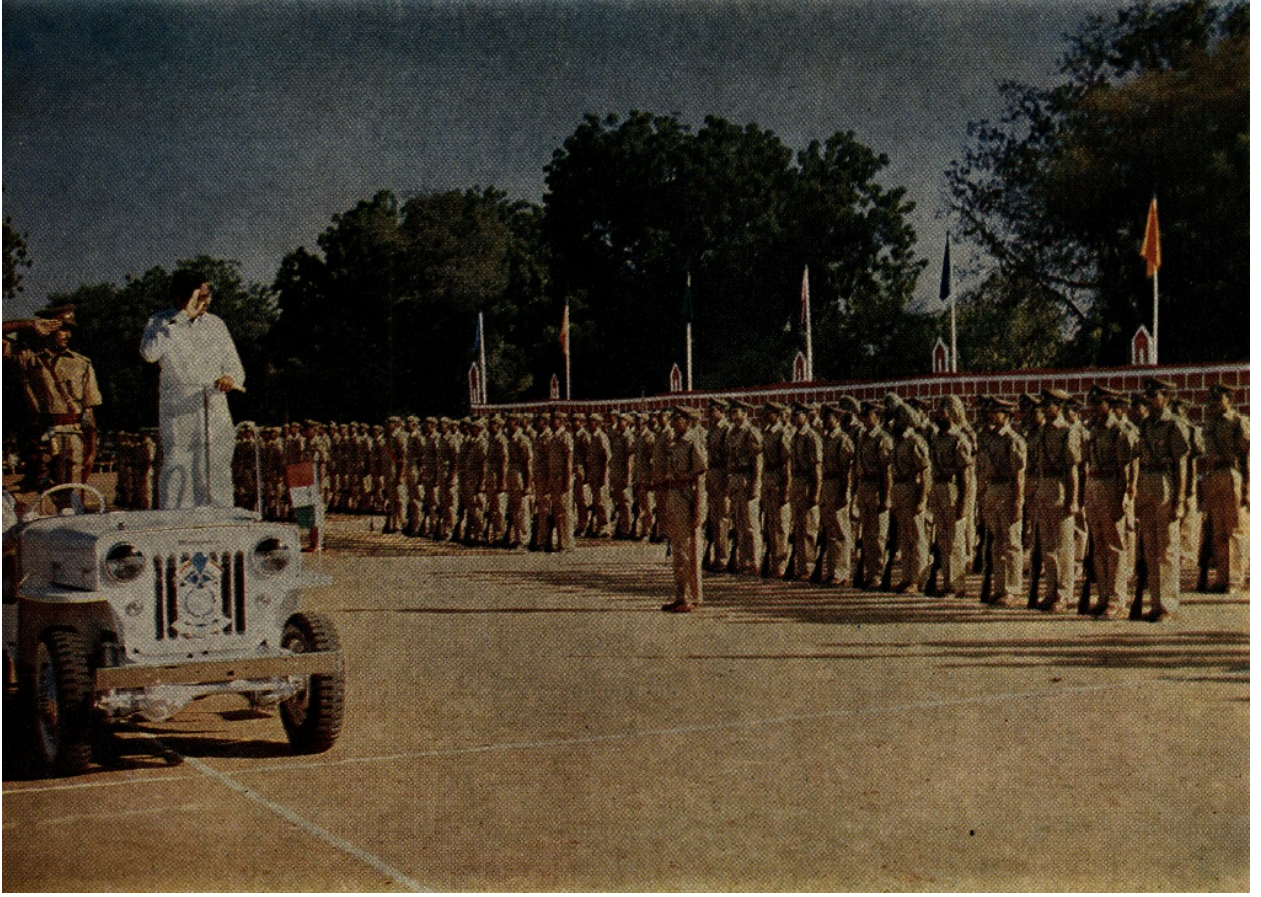
पौष 10, शक संवत् 1909



राजपत्रित अधिकारियों
की दीक्षांत परेड

अंतर रेंज खेल

सिगनल ग्रुप केन्द्र का
उद्घाटन



गांधी नगर में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की परेड का निरीक्षण करते हुए आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री पी. चिदंबरम ।

सी. आर. पी. एफ. समाचार

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल
की
मासिक पत्रिका

खंड I

अंक 6

31 दिसम्बर, 1987

10 पौष, 1909

मुख्य सम्पादक :

एच० एस० सेठी

सम्पादक :

एम० पी० नथैनियल, अनिल गुप्त

मुख पृष्ठ : सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थी के लिए श्री एन. के. भारद्वाज को स्वोर्ड आफ आनर प्रदान करते हुए श्री चिदंबरम

छाया : एस. के. खन्ना

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लाक 1, सी. जी. श्रो. कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, 110003.

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस ,

नई दिल्ली-110072

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

सम्पादकीय

अपनी 48वीं वर्षगांठ के साथ ही के० रि० पु० बल ने एक और मील का पत्थर पार कर लिया है। के० रि० पु० बल की यात्रा किसी भी मायने में बहुत आसान नहीं रही है। उसने अपने खून पसीने को बहाकर इस यात्रा को जारी रखा है। उसने देश के एक भाग में अलगाववादी व दूसरे भाग में आतंकवादी शक्तियों से एक साथ मुकाबला किया है। इस बीतते साल में हम देखते हैं कि बल के जवान हमारी समुद्री सीमाओं के पार, भारतीय सेना के साथ पड़ोसी देश श्रीलंका में शांति स्थापित करने के चुनौती भरे कार्य को भी पूरा करने में जुटे हैं। विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त हुई खबरों के आधार पर इस अंक में बल द्वारा हर क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों का वर्णन संक्षिप्त रूप से करने का प्रयास किया गया है।

आतंकवाद आज एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गया है। आतंकवादी एक देश में सुनते हैं कि दुनिया के दूसरे हिस्सों में उनके साथी क्या कर रहे हैं। उसी प्रकार एक देश में आतंकवादियों के खिलाफ इस्तेमाल किये जा रहे उपायों से दूसरे देश अपने यहाँ आतंकवादियों से लड़ने के लिए सबक लेते हैं। इस अंक में हम दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा आयरलैंड के अपने अनुभवों के आधार पर 'रिडर्स डाइजेस्ट' में लिखे एक लेख 'आतंक और आंसू' को पुनः मुद्रित कर रहे हैं। आशा है हमारे जवान इससे सबक लेंगे।

पत्रिका में गाँधीनगर में हुई सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 18वें बैच की पासिंग आऊट परेड को भी शामिल किया गया है। इस मौके पर आंतरिक सुरक्षा

राज्य मंत्री श्री पी. चिदम्बरम के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी बल के योगदान की प्रशंसा की थी। पहले 'क्रेपलर' और अब 'सी०आर०पी०एफ० समाचार' का मुख्य सम्पादक होने के नाते मेरे लिए यह गौरव का विषय है कि हमें बल के प्रथम महानिदेशक श्री वी०जी० कानेटकर से एक लेख प्राप्त हुआ। और कुछ नहीं तो यह लेख (जिसे हम इस अंक में शामिल कर रहे हैं) यह तो प्रमाणित करता ही है कि यह पत्रिका अपने पाठकों तक के० रि० पु० बल से संबंधित पूरी जानकारी पहुंचाने की एक महत्वपूर्ण भूमिका को पूरा करती है।

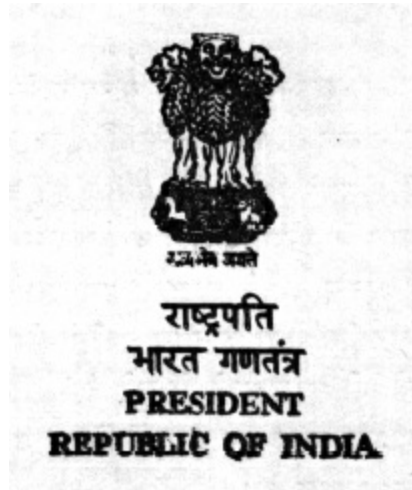
साथ ही मुझे यह भी कहना पड़ रहा है कि पत्रिका के लिए हमें अभी पर्याप्त सामग्री प्राप्त नहीं हो रही है। एक लाख लोगों के बल में जहाँ हर तरफ विषयों के अंबार लगे हैं, हमें विषयों की कमी का कोई कारण दिखाई नहीं देता। चाहिए तो बस पहल करने वाला।

इसी अंक में रांची में दूर संचार ग्रुप केंद्र के उद्घाटन व खेल के क्षेत्र में बल की उपलब्धियों को शामिल करने का भी प्रयास किया गया है।

—एच० एस० सेठी

विषय सूची

गांधीनगर में दीक्षांत परेड
रांची में दूरसंचार ग्रुप एवं प्रशिक्षण केन्द्र
अन्तर रेंज दौड़ कूद प्रतियोगिताएं
भूतपूर्व महानिदेशक का पत्र
आतंक और आंसू



संदेश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिरियों और जवानों को बल के 48वें वार्षिकोत्सव पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भारत का अपनी तरह का सबसे पुराना सुरक्षा बल है, जिसका उपयोग हर तरह से हर जगह पर दिया जा रहा है। मुख्यतः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के जिम्मे इस समय तीन तरह के कार्य हैं – आतंकवाद से निबटना अलगाववादी शक्तियों और राज्यों में शांति व व्यवस्था बनाए रखने में मदद करना। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ये तीनों ही कार्य बड़ी जिम्मेदारी के साथ कर रहा है।

बल के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

आर वेङ्कटरामन
[आर वेङ्कटरामन]

नई दिल्ली।
25 नवम्बर, 1987.

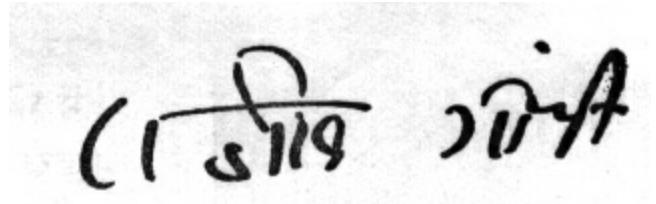


प्रधान मंत्री

सन्देश

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के जवानों ने देश के अन्दर कानून और व्यवस्था बनाये रखने और कठिन परिस्थितियों में नागरिक अधिकारियों की सहायता करने की स्वस्थ और प्रशंसनीय परम्परा बनाये रखी है। अपने कार्य में उन्होंने सदैव निष्ठा और उच्च मनोबल का परिचय दिया है।

बल के 48वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं इसके समस्त अधिकारियों और जवानों के सुखद भविष्य की कामना करता हूँ और उन्हें अपनी शुभकामनायें भेजता हूँ।



नई दिल्ली,
29 नवम्बर, 1987

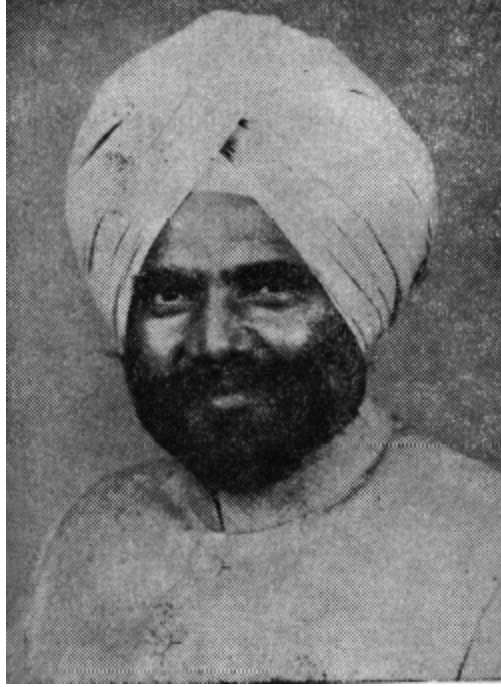
संदेश

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय रिज़र्व बल दिनांक 28 दिसम्बर, 1987 को अपनी 48वीं वर्ष गांठ मना रहा है। यह बल देश के अन्दर शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा आतंकवाद पर काबू पाने के लिए अपनी अमूल्य सेवा प्रदान करता रहा है। यह इस बल के अधिकारियों एवं जवानों के साहस, योग्यता, कार्य-कुशलता तथा कर्तव्य-परायणता का योगदान ही है कि उन्हें श्रीलंका में भारतीय शांतिरक्षक सेना की सहायतार्थ चुना गया।

यह भी प्रसन्नता की बात है कि पिछले वर्ष गठित की गई बल की महिला बटालियन ने देश में कानून और व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुझे आशा है कि बल के अधिकारी तथा जवान उसी उत्साह तथा कर्तव्यपरायणता से राष्ट्र की सेवा करते रहेंगे।

मैं इस खुशी के अवसर पर बल के सभी अधिकारियों तथा जवानों व उनके परिवारों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।



ह०
(बूटासिंह)
गृह मन्त्री

संदेश

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भावना की एक अनूठी मिसाल है। इस की हर टुकड़ी में विभिन्न प्रान्तों के, विभिन्न बोलियां बोलने वाले, विभिन्न मतों को मानने वाले लोग हैं। देश के कोने-कोने में ये लोग शान्ति के दूत बन कर जाते हैं और अलगाववादी, विघटनकारी, साम्प्रदायिक और अराजक शक्तियों का दमन कर शांति व्यवस्था बनाए रखते हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपने आप में एक छोटा भारत है।

राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा और व्यवस्था को कायम रखने में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मूल्यवान सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में भी बल कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपनी गौरवशाली परम्पराओं को कायम रखते हुए हर परीक्षा में खरा उतरेगा।

बल की 48वीं वर्षगांठ पर मैं बल के जवानों व अधिकारियों को शुभकामनाएं देता हूँ।

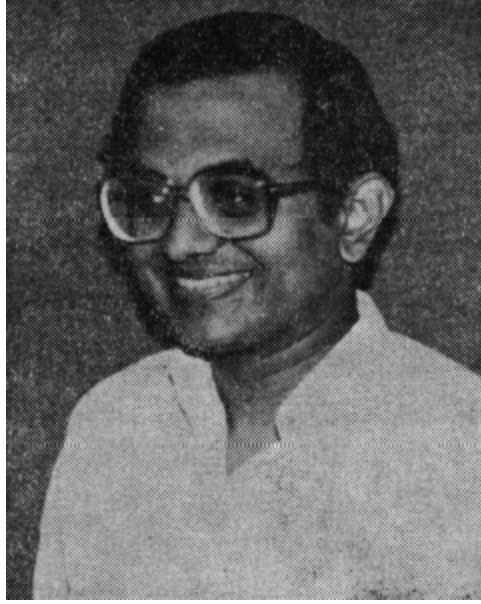


ह०
(चिंतामणि पाणिगृही)
गृह राज्य मंत्री (राज्य)

MESSAGE

I am happy to know that the Central Reserve Police Force is celebrating its 48th Anniversary on 28th December, 1987. The Force is facing one of its biggest challenges in recent years in combating terrorism and forces of disunity which threaten the integrity of our country. The increasing demand for the services of this Force from the different States in our country shows their faith in the efficiency, loyalty and courage of its officers and men.

I extend my greetings and best wishes to the Jawans and Officers as well as their families on the occasion of the 48th Anniversary.



Sd-(P. Chidambaram)

Minister of State, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions

संदेश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों और अधिकारियों को बल के 48वें वार्षिकोत्सव पर हार्दिक बधाई ।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को देश के अंदर शांति व व्यवस्था बनाए रखने की जो जिम्मेदारी दी गई है, उसे बल पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ पूरा कर रहा है। कर्तव्यपरायणता एवं अनुशासन में पगे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान हर समय कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं।

बल के जवानों और अधिकारियों की समस्याओं से हम अवगत हैं और उनके निराकरण का भी यथासंभव प्रयास कर रहे हैं ।



ह०

(सी० जी० सोमैया)

गृह सचिव, भारत सरकार

संदेश

देश में आंतरिक सुरक्षा और कानून व्यवस्था की वर्तमान स्थिति के हम इतने निकट हैं कि उसकी भयावहता का पूरा भान हमें नहीं हो पाता न ही इस बात का कि इस स्थिति को काबू से बाहर न होने देने के असम्भव से प्रयत्न में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का क्या योगदान है। मुझे इसमें लेशमात्र संदेह नहीं है कि भविष्य में जब इस समय का इतिहास लिखा जायेगा तभी इस सतत गतिशील, सतत सजग फोर्स द्वारा की गई राष्ट्र की निष्ठावान सेवा के प्रति पूरा न्याय हो पायेगा। देश का ये सबसे पुराना, सबसे सयाना फोर्स हर जिम्मेदारी के लिए उसका कार्यस्थल देश में हो या विदेश में हमेशा “हाँ” के नजरिये से तैयार रहता है। इस जमाने में भी इसकी ईमानदारी का ऊँचा स्तर अक्षुण्ण बना हुआ है। इसका हर सेक्शन राष्ट्रीय एकता का नमूना है और राज्यों के प्रशासन वहाँ की पुलिस के साथ मिलकर काम करने का इसका अपना निराला ढंग है। ऐसी नायाब परम्पराओं वाला यह फोर्स निश्चय ही सबके प्यारा और मान का पात्र है। इसको सैल्यूट कर मैं अपने को गौरवान्वित समझता हूँ और इसे अपनी शुभ कामनाएं देकर मेरा अपना मनोबल ऊँचा होता है।



ह०
(एस० डी० पाण्डेय)
महानिदेशक के० रि० पु० बल

वर्ष के पदक विजेता

शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक— कमांडेंट एन०एन० मिश्रा 33 बटालियन, उप निरीक्षक नारायण सिंह 14 बटा०, है० कां० श्रवण सिंह 14 बटा०, कां० बच्चन लाल 14 बटा०, है० कां० नंदन सिंह (मरणोपरान्त) 7 बटा०, कां० कालीराम 22 बटा०, कां० जे० एस० पिल्लई 22 बटा०, उपाधीक्षक एच० एस० रावत 23 बटा०, कां० सम्सुद्दीन 23 बटा०, कां० रहीसुद्दीन 23 बटा०, कां० बच्चालाला भारती 23 बटा० ।

शौर्यवीरता के लिए पुलिस पदक—कां० बी०एल० नानाडिया (मरणोपरान्त) 7 बटा०, नायक शेरसिंह 7 बटा०, कां० जलदीप सिंह 7 बटा०, उ०नि० पतिराम 7 बटा०, है०कां० उधोदास (मरणोपरान्त) 40 बटा०, कां० बिरांची चौधरी 7 बटा०, कां० विष्णु कुमार 7 बटा०, है० कां० कन्हैया लाल (मरणोपरान्त) 22 बटा०, नायक रेशमसिंह (मरणोपरान्त) 22 बटा०, कां० मोहम्मद बशीर 22 बटा०, है०कां० सदानन्द 62 बटा०, है०कां० बिकर सिंह 47 बटा०, नायक जसवन्त सिंह बनतलाब गु० के०, कां० भगवान राम 10 बटा०, कां० दुर्गा बहादुर खत्री 16 बटा०, नि० (मि०) वी० गोपालन द्वारा

महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र।

विशिष्ट सेवाओं के लिए पदकों से सम्मानित अधिकारी



महानिरीक्षक सी० सुबहानियम



महानिरीक्षक सी० एस० द्विवेदी



उपमहानिरीक्षक आर० के० मेहता



उपनिदेशक ए० के० बन्योपाध्याय



सहायक कमांडेंट महानसिंह

गांधीनगर में

राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड

28 अक्टूबर, 1987 को के० रि० पु० बल ग्रुप केन्द्र गाँधीनगर में बल के जवानों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए केन्द्रीय आन्तरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री पी० चिदम्बरम ने देश में कानून व व्यवस्था बनाए रखने, शांति कायम करने तथा प्राकृतिक आपदाओं के शिकार लोगों की मदद करने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका की सराहना की। श्री चिदम्बरम के० रि० पु० बल के प्रशिक्षणार्थियों के 18वें बैच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की पासिंग आउट परेड की सलामी लेने यहाँ पहुँचे थे। इस अवसर पर 40 अधिकारियों ने अपना प्रशिक्षण पूरा कर पासिंग आउट परेड में भाग लिया। छः अधिकारियों को प्रशिक्षण के दौरान उनकी विभिन्न भूमिकाओं के लिए पुरस्कृत भी किया गया।

इस मौके पर बल के महानिदेशक, अपर महानिदेशक सहित बल के प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। प्रशिक्षण काल के दौरान सर्वोत्तम कार्य के लिए श्री एन० के० भारद्वाज को स्वोर्ड आफ आनर से सम्मानित किया गया। अन्य प्रशिक्षणार्थियों में श्री एस० के० मोहंती को बेस्ट आउट डोर, प्रताप सिंह को बेस्ट इनडोर, पी० के० शर्मा को बेस्ट शूटर, सबरजीत सिंह को बेस्ट स्पोर्ट्स मैन तथा विक्रम सहगल को बेस्ट

डिबेटर के पुरस्कार दिए गए।

इस अवसर पर बोलते हुए मंत्री महोदय ने गत वर्ष दंगों से जूझते गुजरात में शांति स्थापित करने का श्रेय के० रि० पु० बल को दिया। उन्होंने कहा कि श्रीलंका में शांति स्थापित करने के लिए भारतीय शांति रक्षक सेना की सहायतार्थ बल को बुलाया जाना उसकी सेवाओं के प्रति सरकार व जनता के विश्वास का ही प्रतीक है। मन्त्री महोदय ने बल के कर्मिकों की समस्याओं एवं उनके निराकरण के संबंध में किए जा रहे प्रयासों का भी जिक्र किया। उनका कहना था कि कोई भी समस्या अब लम्बे समय तक सुलझे बिना नहीं रह सकती। मन्त्री महोदय ने बल के कर्मिकों के कल्याण कार्यक्रमों की समीक्षा के बारे में भी जानकारी दी। मन्त्री महोदय द्वारा दिये गए मूल अंग्रेजी भाषण का अविकल हिंदी रूप निम्न है—

“के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री पान्डेय, अपर महानिदेशक, अधिकारीगण, जवान, उनके परिजन तथा 18वें बैच के प्रशिक्षणार्थी, मुझे इस समय इस ग्रुप केन्द्र में 18वें बैच के बल के उपाधीक्षकों की पासिंग आऊट परेड की सलामी लेते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

“के० रि० पु० बल सबसे पुराना केन्द्रीय पुलिस संगठन है। इसने सदैव देश की सेवा पूर्ण निष्ठा के साथ की है, तथा सदैव अपने उद्देश्य सेवा एवं विश्वास की कसौटी पर खरा उतरा है। गत वर्ष इन्हीं दिनों इसी राज्य गुजरात को कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा था। और उस समय यहाँ के नागरिकों की एक ही माँग थी कि के० रि० पु० बल असामाजिक तत्वों से उनकी रक्षा करे तथा शांति स्थापित करने के लिए कानून व व्यवस्था बनाए रखने में मदद करे। अब अगर पिछले 12 महीने से गुजरात के लोग शांति एवं स्थिरता के साथ रह रहे हैं तो उसका पूरा-पूरा श्रेय के० रि० पु० बल द्वारा व्यापक स्तर पर पूरे समर्पण के साथ किए गए शांति प्रयासों को जाता है।

“इस के० रि० पु० बल के जवान न केवल भारत के शीर्ष हिमालय पर अपने कर्तव्यों को अन्जाम दे रहे हैं, अपितु समस्याग्रस्त पड़ोसी राज्य श्रीलंका तक में शांति स्थापित करने के प्रयासों में लगे हैं, हमारा उद्देश्य शांति है। बल जहाँ भी गया है, जहाँ भी इसे बुलाया गया है, वहाँ-वहाँ से यह पूरी तरह शांति स्थापित करके ही हटा है। आज श्रीलंका में शांति स्थापित करने के लिए, इस समस्याग्रस्त टापू पर व्यवस्था कायम करने के लिए तथा मानवता के नाम पर के० रि० पु० बल को वहाँ भेजा गया है।

“पिछले वर्ष मुझे आपके बल तथा अन्य केन्द्रीय पुलिस संगठनों की समस्याओं को जानने के कई मौके मिले। आपके महानिदेशक, आपके अधिकारीगण उन विभागीय प्रयासों से अवगत हैं, जिनकी स्थापना हमने बल के जवानों एवं अधिकारियों के कल्याण एवं प्रगति के कार्यक्रमों की समीक्षा करने के लिए की है। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप इस वर्ष हम आपकी समस्याओं की दो बार समीक्षा कर चुके हैं। एक बार मार्च/अप्रैल में तथा दोबारा इसी माह अक्टूबर में। इस सम्बन्ध में कई निर्णय भी लिये गये हैं, जो मैं समझता हूँ कि बिल्कुल नीचे तक के रैंकों से ताल्लुक रखते हैं।



कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर श्री पी. चिदंबरम को बल की तरफ से एक भेंट प्रदान करते हुए श्री एस० डी० पांडेय।

“हम मेडिकल केडर की समस्यायें हल करने में सफल रहे हैं। हम आपका राशन भत्ता बढ़ाने में सफल रहे। अभी कल ही सरकार ने एकाउंट्स विभाग में बढ़ते काम को देखकर उसकी समस्याओं को कम करने के लिए कुछ नई नियुक्तियों की अनुमति दी है। और अब इन सब समस्याओं की तरफ अलग-अलग ढंग से विचार न करके एक सिलसिलेवार तरीके से उनकी तरफ ध्यान दिया जा रहा है। कोई भी समस्या बहुत लम्बे समय तक सरकार की नजरों से ओझल नहीं रह सकती। कोई समस्या लम्बे समय तक बिना सुलझे भी नहीं रह सकती। और मुझे विश्वास है कि आपकी समस्याओं को जानने व उनसे निबटने के लिए जो आधुनिक तकनीकी प्रयास हम कर रहे हैं वह जारी रहेंगे, उनमें सुधार होगा तथा उनके परिणाम भी वैसे ही होंगे जैसे हम चाहते हैं।

“मैं अपने केन्द्रीय पुलिस संगठन को जहाँ भी देखता हूँ मुझे उसपर गर्व होता है। हम इसे जहाँ भी पाते हैं, ग्रुपकेंद्रों में, कैंपों में यह एक छोटे भारत को प्रतिबिम्बित करता है। मुझे इस बात की भी खुशी और गर्व है कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवक और अब हमारी महिला बटालियन में युवतियाँ भी आकर बल में भर्ती हो रहे हैं। अभी हमने आगरा, उड़ीसा, पंजाब तथा दिल्ली तक विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये स्नातकों तथा स्नातकोत्तरों को देखा, जिन्हें यहाँ प्रशिक्षणकाल के दौरान उनकी भूमिकाओं के लिये पुरस्कारों तथा एवार्डों से सम्मानित किया गया।

“सेवा के उच्चतम मानदंड वह व्यक्ति छूता है, जो संकट के समय राज्य की सेवा

करता है। इसी दृष्टि से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा गत वर्ष यहाँ शांति स्थापित करने के प्रयास, देश की एकता एवं संप्रभुता की रक्षा के प्रयत्न, इसे सेवकों की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा करते हैं। इस दृष्टि से के० रि० पु० बल द्वारा देश के नागरिकों एवं देश की जो सेवा की जा रही है वह अविस्मरणीय है। और मुझे कोई सन्देह नहीं कि यह बल आगे भी देश की सेवा करता रहेगा।

“मैं 18वें बैच के स्नातक 40 अधिकारियों को बधाई देता हूँ। अब ये अधिकारी बल के बहुत जिम्मेदार पदों को सम्हालेंगे और मुझे यकीन है कि बल से सेवानिवृत्त होते समय उनके पीछे उनकी सेवाओं का एक गौरवशाली प्रतीक होगा। मैं उन्हें बधाई देता हूँ। मैं उनके मंगल भविष्य की कामना करता हूँ। तथा बल के तमाम अधिकारियों, जवानों तथा उनके परिवार वालों के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।”

इसी मौके पर बाद में संवाददाताओं से बातचीत करते हुए बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पाण्डेय ने बताया कि एशिया में अपनी तरह की अकेली के० रि० पु० बल की महिला बटालियन हर मोर्चे पर सफल रही है। उनका कहना था कि यह बटालियन बहुत अच्छा कार्य कर रही है लेकिन अभी के० रि० पु० बल का और महिला बटालियन बनाने का कोई इरादा नहीं है। महानिदेशक ने यह भी बताया कि अगले चार सालों में बल की बटालियनों की संख्या 82 से बढ़ाकर 92 कर दी जायेगी। इनमें से 3 बटालियनों के निर्माण का कार्य तो इसी वर्ष के लिये प्रस्तावित है।



कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते आंतरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री पी. चिदंबरम

समस्याओं पर विचार के लिए कार्यशाला

28 से 30 अक्टूबर, 1987 तक गाँधीनगर गुजरात में के० रि० पु० बल की प्रोजेक्टिंग, इस्टेबलिशमेंट, कल्याण (वेलफेयर), कम्युनिकेशन तथा वर्क्स विषयों पर विचार विमर्श के लिए चौथी कार्यशाला का आयोजन किया गया। बल के महानिदेशक श्री एस. डी. पाण्डेय की अध्यक्षता में कार्यशाला का प्रारम्भ हुआ। इस मौके पर केन्द्रीय मन्त्री श्री पी. चिदंबरम मुख्य अतिथि थे।

उन्होंने प्रतिनिधियों को याद दिलाया कि उन्हें बल की समस्याओं की ओर जल्दी और अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिए, न कि उन्हें लम्बी, थका देने वाली और ऊबाऊ प्रणाली के तहत देखना चाहिए। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मन्त्री महोदय ने प्रतिनिधियों को सामान्य समस्याओं पर विचारविमर्श करने के लिए कार्यशाला आयोजित करने पर बधाई दी।



गाँधीनगर ग्रुप केन्द्र अस्पताल में एक मरीज से भेंट करते श्री पी. चिदंबरम

मन्त्री महोदय ने बल की कम्पनियों की लगातार ट्रेनिंग पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बल की 10 बटालियनें और तैयार करने की कोशिशें की जा रही हैं। ताकि 10 बटालियनें हर समय प्रशिक्षण लेती रहें। उन्होंने आशा की कि चूंकि ये बटालियनें इसलिए बढ़ाई जा रही हैं ताकि बटालियनों को हर समय प्रशिक्षण मिलता रहे, तो कोशिश यह की जानी चाहिए कि प्रशिक्षणरत इन बटालियनों की कहीं नियुक्त करने का विचार न किया जाए। उनका कहना था कि इसी वित्तीय वर्ष में तीन बटालियनों की स्थापना की अनुमति मंत्रालय से ले ली जाएगी, बाकी 7 बटालियनों की स्थापना भी अगले वित्तीय वर्ष में कर ली जाएगी।

मंत्री महोदय ने बल को आतंरिक सुरक्षा पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि इस समय बल को कट्टरवादी साम्प्रदायिक ताकतों, असमाजिक तत्वों, अलगाववादी शक्तियों, आतंकवादियों तथा विघटनकारी शक्तियों से निपटना पड़ रहा है। अतः इनसे सावधान रहने की जरूरत है, इन तत्वों से निबटने के लिए बल में उपलब्ध प्रशिक्षण की सुविधाओं से राज्यों की पुलिसों को फायदा उठाना चाहिए।

उन्होंने पंजाब में आतंकवादियों से सख्ती से निपटने के लिए बल के जवानों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि जब भी पंजाब में आतंकवादियों के खिलाफ संघर्ष का इतिहास लिखा जाएगा, तो मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पिछले तीन सालों में पंजाब में बल द्वारा किए जा रहे कार्यों का स्वर्णाक्षरों में उल्लेख किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों के खिलाफ लगातार चल रहे युद्ध में उन्हें यकीन है कि अगले छः महीने या साल भर के अन्दर आतंकवादियों की रीढ़ की हड्डी टूट जाएगी।

मंत्री महोदय ने कहा कि केवल यूनिट स्तर के विषयों पर ही नहीं अपितु जवानों की समस्याओं व कल्याण कार्यक्रमों पर भी विचार विमर्श करना एक अच्छी बात है, हालांकि हमारे पास हर समस्या का एक आदर्श हल नहीं है, लेकिन फिर भी हर समस्या का हर संभव व अधिक से अधिक निराकरण करने का प्रयास होना चाहिए।

औपचारिक रूप से कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मन्त्री महोदय ने कार्यशाला की सफलता की कामना की।

बैंगकाक में बल के खिलाड़ी

14 से 23 नवम्बर तक बैंगकाक में हुई एशियन बास्केटबाल कानफेडरेशन चैंपियनशिप में के० रि० पू० बल के उपाधीक्षक के० एस० चीमा (कोच) तथा उप निरीक्षक जसमिंदर सिंह (खिलाड़ी) ने भाग लिया। प्रतियोगिता में भारत की ओर से भाग लेने के लिए इनका चयन भारतीय बास्केट बाल फेडरेशन द्वारा किया गया था।

इस प्रतियोगिता में भारतीय टीम का प्रदर्शन पहले के अनुपात में काफी अच्छा रहा तथा उसे छठा स्थान प्राप्त हुआ। भारतीय टीम के मैनेजर के रूप में पूर्वी क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री बी. के. साहा भी बैंगकाक गए।

विश्व जूडो में बल का खिलाड़ी

पश्चिम जर्मनी के ऐसन शहर में हुई विश्व जूडो प्रतियोगिता में भाग लेने गई भारतीय टीम में बल के है० का० राम निवास भी शामिल थे। 17 से 19 नवम्बर, 1987 तक हुई इस प्रतियोगिता में रामनिवास ने 3 बउट्स जीते जो कि विश्व प्रतियोगिता को देखते हुए एक अच्छी उपलब्धि है।

प्रेमी : प्रिय, तुम्हें तुम्हारी आँखें परेशान तो नहीं करतीं ?
 प्रेमिका : नहीं तो, क्या मतलब?
 प्रेमी : मुझे तो इन्होंने घायल कर दिया है।
 पहला व्यक्ति : वे मूर्ख हैं, जो दूसरों को अपनी बात नहीं समझा पाते।
 दूसरा व्यक्ति : माफ करना दोस्त मैं तुम्हारी बात नहीं समझा।
 एक सज्जन होटल में चावल खा रहे थे कि उनके दांत कड़कड़ा उठे।
 “क्यों साहब, कंकड़ हैं क्या ?” बैरे ने पूछा। “नहीं, कहीं कहीं चावल भी हैं।”
 उन्होंने जवाब दिया।
 पत्नी बड़े गुस्से से पति पर बिगड़ रही थी, “आपने कभी मुझे कुछ ला कर दिया।
 आप के सब रिश्तेदार भी ऐसे ही हैं।”
 पति शांत भाव से बोले, “नाराज क्यों होती हो प्रिय, मेरे रिश्तेदार तो हमेशा तुम्हें
 कुछ न कुछ देते ही रहते हैं, अब देखो, जो घड़ी तुमने पहनी है वह मेरे साले ने दी है,
 जो साड़ी तुमने पहनी है वह मेरी साली ने, दी है और तुम जो हार पहने हो वह भी मेरी
 ही सास का दिया हुआ है।”

रांची में सिगनल ग्रुप केंद्र एवं प्रशिक्षण संस्थान का उद्घाटन

के०रि०पु० बल के दूर संचार विभाग पर सही समय पर सही सूचना पहुंचाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। सिगनल कोर की सफलता पर ही बल की सफलता निर्भर करती है।

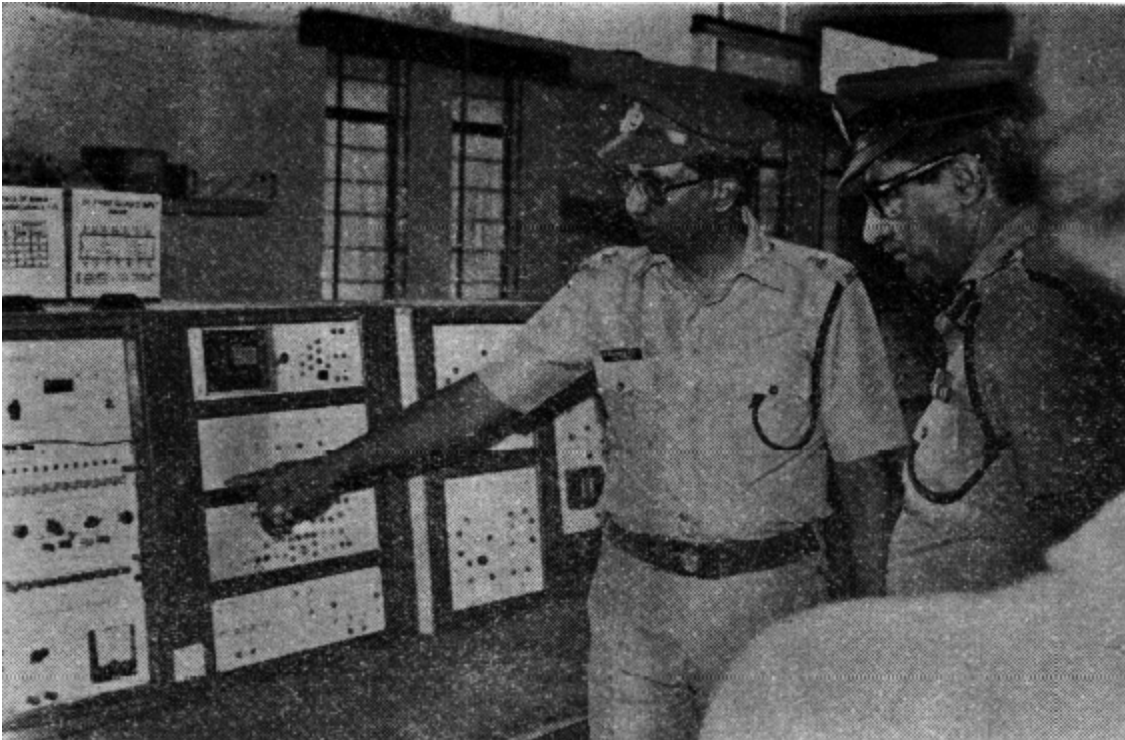
11 नवम्बर, 1987 को रांची के जगन्नाथपुर मंदिर के निकट तिरिल क्षेत्र में 4 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित के०रि०पु० बल के दूर संचार विभाग के केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान का बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय ने विधिवत उद्घाटन किया।

इस प्रशिक्षण संस्थान पर दूर संचार माध्यम के अत्याधुनिक उपकरणों के संबंध में बल के जवानों को प्रशिक्षित करने की गहन जिम्मेदारी है।

वर्ष 1967-68 में हुए दंगों के बाद प्रारम्भ किया गया के०रि०पु० बल का दूरसंचार विभाग आज पूरी तरह से अत्याधुनिक व आत्मनिर्भर है। प्रारम्भ में यह विभाग पुलिस विभाग द्वारा प्रशिक्षित होता था। इस केन्द्र की स्थापना रांची में करने से यहां से कुछ महत्वपूर्ण स्थलों को संपर्क करने में भी सुविधा रहेगी।



दूर संचार प्रशिक्षण संस्थान एवं ग्रुप केन्द्र का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस० डी० पाण्डेय।



आधुनिक कार्यप्रणाली से अवगत होते श्री पाण्डेय ।

रांची में ही 1.33 एकड़ भूमे में के० रि० पु० बल के जवानों के लिए एक आवासीय कालोनी की योजना भी विचाराधीन है।

प्रारम्भ में नीमच (मध्य प्रदेश) में सिगनल ग्रुप केन्द्र एवं प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूर संचार) के लिए अस्थायी रूप से स्थान मिला हुआ था किंतु यहां स्थान और सुविधाएं पर्याप्त न होने के कारण इस केन्द्र के स्थाई मुख्यालय के लिए रांची को चुना गया। रांची में सिगनल काम्पलेक्स के निर्माण कार्य के अंतर्गत सिगनल ग्रुप रैंज, केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूर संचार) के अतिरिक्त तृतीय बटालियन को भी बसाने की योजना है।

रांची में सिगनल ग्रुप केन्द्र के स्वतन्त्र काम के लिए उचित प्रशासनिक व्यवस्था का प्रबन्ध एक गंभीर समस्या थी। क्वार्टर गार्ड, स्कूल, अस्पताल इत्यादि की व्यवस्था के लिए बड़े पैमाने पर स्टेशन मुख्यालय नीमच पर निर्भर रहता था। रांची में आने के लिए जनशक्ति तथा अन्य व्यवस्थाओं की आवश्यकता थी।

अतिरिक्त जनशक्ति की आवश्यकता पूरी हो जाने पर दिसम्बर 1986 के दूसरे सप्ताह में कर्नल दौलतराम, अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक की अगुवाई में सिगनल ग्रुप केन्द्र रांची के लिए रवाना हुआ। कीमती रेडियो उपकरणों, भारी जनरेटरों, बारीक तकनीकी प्रयोगशाला के उपकरणों को लाना आसान काम नहीं था। नीमच और रांची के बीच सीधा रेल मार्ग न होने के कारण यह कार्य और भी कठिन हो गया था। लेकिन अधिकारियों तथा जवानों की कर्तव्यनिष्ठा, कड़ी मेहनत और लगन से यह कार्य ठीक ढंग से सम्पन्न हो गया और उपकरणों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में किसी प्रकार की क्षति नहीं उठानी पड़ी।



राँची में एक बीमार जवान से भेंट करते श्री पाण्डेय

आवड़ी में दीक्षान्त परेड

के० रि० पु० बल एवं मणिपुर राइफल्स के सीधे नियुक्त उपनिरीक्षकों एवं अधीनस्थ अधिकारियों के 47वें बैच की पासिंग आउट परेड 28 सितम्बर, 1987 को आवड़ी में हुई। 40 हफ्ते के कठिन एवं श्रमसाध्य प्रशिक्षण के बाद के० रि० पु० बल के 39 उपनिरीक्षकों तथा एक नायक ने और मणिपुर राइफल्स के 11 उपनिरीक्षकों व 35 हैडकांस्टेबलों ने अपने पद के प्रति निष्ठा की शपथ ली। कमांडेंट के० एस० पार० नायर ने प्रशिक्षणार्थियों को शपथ दिलायी। परेड के कमांडर केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के वाइस प्रिंसिपल एम० एस० रावत थे। श्री सी०वी० मैथ्यू, वाइस प्रिंसिपल (प्रशिक्षण) ने इस अवसर पर शानदार उदघोषण किया।

के० रि० पु० बल के दक्षिणी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री सी० सुब्रह्मण्यम ने सलामी ली व परेड का निरीक्षण किया। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कार भी दिए।

प्रशिक्षण सम्बन्धी नियमों में तब्दीली

महानिदेशालय से जारी एक परिपत्र आदेश के अनुसार सभी का ध्यान के० रि० पु० बल ट्रेनिंग मैनुअल—1983 के पैरा 2.7 की ओर दिलाया गया है, जिसमें यह निर्धारित किया गया है कि प्रशिक्षण संस्थान या किसी भी दूसरे स्थान पर बेसिक ट्रेनिंग कोर्स के अलावा केडर/कोर्सों के लिये रिजर्व सहित नमांकित किये गये व्यक्तियों को, कोर्स के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर उनकी यूनिट में कम से कम 4 सप्ताह का कोर्स पूर्व प्रशिक्षण दिया जाएगा।

बल की अत्याधिक तैनाती के कारण बटालियनों को वर्तमान समय में इन व्यवस्थानों का कठोरता से अनुपालन करने में कई कामकाजी परेशानियां आ रही हैं। वास्तव में 4 सप्ताह वाले प्रशिक्षण कोर्स जैसे एम. टी. इन्स्टक्टर कोर्स, माव डिस-पर्सल कोर्स आदि के लिये भी एक महीने का कोर्स पूर्व प्रशिक्षण लागू है। इस के अतिरिक्त विभागीय शैक्षिक प्रमाणपत्र परीक्षा से पूर्व कोचिंग कक्षाओं के लिये जवानों की कम्पनियों/आउट पोस्टों से भी हटा लिया जाता है।



सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थी उप निरीक्षक अजय टेलर, महानिरीक्षक श्री सी० सुब्रह्मण्यम से पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

फील्ड में कम्पनियों की आपरेशनल नफरी बनाए रखने के विचार से, निम्नलिखित के अलावा कोर्स के पूर्व की ट्रेनिंग की आवश्यकता को समाप्त करने का निर्णय लिया गया है—

(अ) शारीरिक प्रशिक्षण कोर्स, (ब) बिना हथियार लड़ाई कोर्स, (स) जिमनास्टिक कोर्स, (द) अन्य टैक्नीकल कोर्स जिनकी अवधि 6 महीने से अधिक हो।

श्री पाठक के प्रयासों की प्रशंसा

के० रि० पु० बल के सहायक कमांडेंट श्री डी० आर० पाठक जो आजकल आल इंडिया रेडियो में डेपुटेशन पर उपमहानिदेशक (सुरक्षा) हैं, के कार्य की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है। उनके जिम्मे आल इण्डिया रेडियो तथा दूरदर्शन भवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी है।



हाल ही में दूर दर्शन केन्द्र को आतंकवादियों द्वारा बम्ब से उड़ा देने के प्रयासों के बाद श्री पाठक ने इस केन्द्र को पूरी तरह अपनी सुरक्षा के घेरे में लिया हुआ है।

इस तरह की स्थिति से निबटने के उनके प्रयासों की आल इण्डिया रेडियो के महानिदेशक श्री अमृत राव शिंदे ने भरपूर प्रशंसा की है।

गोला बारूद्र के साथ / एक को पकड़ा

के. रि० पु० बल की 81वीं बटालियन की 'एफ' कम्पनी के एक सेक्शन ने स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर मुरादाबाद में एक व्यक्ति को पकड़ा और उस के पास से एक स्कूटर नं० यू. एम. सी. 1945, एक रिवाल्वर .38, 5 गोलियों सहित और .315 बोर की तीन गोलियां बरामद की।

**राजभाषा समिति का
महानिदेशालय में दौरा**



समिति के सदस्य महानिदेशालय के अधिकारियों से विचार विमर्श करते हुए।

3 नवम्बर, 1987 को प्रातः 10 बजे संसदीय राजभाषा समिति के 5 सदस्यों की टीम ने महानिदेशालय, के०रि०पु०बल, नई दिल्ली में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का जायजा लेने के लिए निरीक्षण दौरा किया। महानिदेशालय की ओर से महानिदेशक, अपर महानिदेशक तथा पुलिस महानिरीक्षक (मुख्या०) सहित सभी उपनिदेशकों ने परिचर्चा में भाग लिया। महानिदेशक महोदय ने सर्वप्रथम महानिदेशालय की ओर से भाग लेने वाले अधिकारियों से माननीय संसद सदस्यगणों का परिचय कराया तथा उसी प्रकार समिति के संयोजक श्री रुद्र प्रताप सिंह जी ने सदस्यों का परिचय दिया। महानिदेशक श्री सतीश दत्त पाण्डेय जी ने सदस्यों का स्वागत करते हुए बल के स्वरूप पर संक्षिप्त ब्यौरा दिया। तदुपरान्त हिन्दी प्रगति के लिए किए गए प्रयासों एवं सुझावों का सिलसिलेवार बयान किया। बल के काम-काज में वार्षिक कार्य क्रम के मुताबिक अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति के अनुरूप प्रगति न हो पाने के लिए महानिदेशक महोदय ने खेद प्रकट किया। राज- भाषा अधिनियम 1963 व नियम 1976 के अनुपालन में अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा दिखाई गई उदासीनता को समिति के सदस्यों ने गम्भीरता से लिया तथा यह सुझाव दिया कि राजभाषा नियम 1976 के नियम-12 में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी हर कार्यालय अध्यक्ष की है जिसका अनुपालन उन्हें करना है और इस जिम्मेदारी से उन्हें तनिक भी विचलित नहीं होना है।

समिति ने स्पष्ट तौर पर यह प्रकट किया कि उनकी समिति कोई हिन्दी प्रचार-प्रसार समिति नहीं है और न गलतियाँ ढूँढ़ने वाली कमेटी ही है, बल्कि इसका कर्तव्य

यह देखना है कि राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम-1963 व राजभाषा नियम-1976 का समुचित अनुपालन हो रहा है या नहीं। इनमें दी गई व्यवस्थाओं का अनुपालन न करना समिति के लिए एक गम्भीर बात होगी। महानिदेशक महोदय ने इनमें दी गई व्यवस्थाओं को अगले एक माह में पूरी तरह लागू करने का सदस्यों को आश्वासन दिया। अन्त में संयोजक महोदय ने सारी प्रगति की समीक्षा करते हुए परिचर्चा की समाप्ति की।

बल के कार्मिकों के बच्चों को छात्रवृत्तियाँ

यूनिट स्तर पर कक्षा 2 से 8 तक पढ़ने वाले के०रि०पु० बल के कार्मिकों के बच्चों को 350 रुपये की मैरिट स्कोलरशिप प्रति वर्ष दी जाएगी। इस छात्र वृत्ति का निर्धारण यूनिट स्तर पर तैयार की गई सभी कक्षाओं की एक सम्मिलित मैरिट लिस्ट के आधार पर किया जाएगा।

कक्षा 11 एवं 12 में पढ़ने वाले कार्मिकों के बच्चों को रेंज स्तर पर मैरिट के आधार पर 500 रुपये प्रति वर्ष की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

स्नातक तथा स्नातकोत्तर डिग्री के लिए कामर्स, आर्ट या अन्य तकनीकी डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के लिए अध्ययन कर रहे बल के कार्मिकों के बच्चों के लिये मैरिट के आधार पर 800 रुपये वार्षिक की छात्रवृत्ति तय की गई है, यदि विद्यार्थी छात्रावास में रह रहा है, तो 500 रुपये की अतिरिक्त वृत्ति या वास्तविक खर्च, जो भी कम हो राजपत्रित एवं अराजपत्रित अधिकारियों के बच्चों को प्रदान किया जाएगा। अन्य रैंकों के कार्मिकों के बच्चों को यह राशि 700 रुपये वार्षिक के हिसाब से मिलेगी।

1,000 रुपये वार्षिक की मैरिट छात्रवृत्ति उस कार्मिक को मिलेगी जिसके बच्चे स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान विषयों के साथ पढ़ रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष 500 रुपये या वास्तविक खर्च, जो भी कम हो का भुगतान उन राजपत्रित एवं अराजपत्रित अधिकारियों को किया जायेगा, जिनके बच्चे छात्रावासों में रह रहे हैं। अन्य रैंकों के कार्मिकों के लिये यह राशि 700 रुपये या वास्तविक खर्च जो भी कम हो, होगी।

कार्मिकों के जो बच्चे चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कृषि या इसी तरह के किसी अन्य विशेष ज्ञान वाले तकनीकी विषय में स्नातक डिग्री के लिए अध्ययन कर रहे हैं उन्हें प्रति वर्ष 1,200 रुपये की छात्रवृत्ति दी जाएगी, जो बच्चे छात्रावासों में रह रहे हैं वहां राजपत्रित एवं अराजपत्रित अधिकारियों के बच्चों को 1,200 रुपये या वास्तविक खर्च जो भी कम हो की वार्षिक वृत्ति दी जायेगी जबकि अन्य रैंकों के लिये यह राशि 2,400 रुपये या वास्तविक खर्च जो भी कम हो होगी। इन छात्रों को मैरिट छात्रवृत्ति महानिदेशालय स्तर पर दी जायेगी।

300 रुपये वार्षिक को सामान्य छात्रवृत्ति राजपत्रित अधिकारियों एवं 200 रुपए की सामान्य छात्रवृत्ति प्रतिवर्ष उन अराजपत्रित अधिकारियों के बच्चों को दी जायेगी जो कक्षा 2 से 12 तक पढ़ रहे हैं। अन्य रैंकों के मामले में यह राशि 150 रुपये प्रति वर्ष इस आधार पर दी जायेगी क्योंकि वे बच्चों की शिक्षा से संबंधित भत्ते के हकदार नहीं हैं। के०रि०पु० बल के उन कार्मिकों जिनके बच्चे आर्ट्स कार्मस में स्नातक (या स्नातकोत्तर) डिग्री ले रहे हैं उन्हें राजपत्रित व अराजपत्रित अधिकारियों के अलावा आने वाले रैंकों को 350 रुपये प्रति वर्ष अराजपत्रित के लिये 250 रुपये प्रति वर्ष तथा राजपत्रित के लिए 200 रुपये प्रति वर्ष दिये जायेंगे। 150 रुपये सभी रैंकों के उन कर्मचारियों को दिये जायेंगे जिनके बच्चे छात्रावासों में पढ़ रहे हैं।

यदि कार्मिकों के बच्चे विज्ञान विषय में डिग्री स्तर का अध्ययन कर रहे हों तो अन्य रैंकों को 400 रुपये, अराजपत्रित को 300 रुपए तथा राजपत्रित अधिकारी को 250 रुपये की छात्रवृत्ति के अलावा 150 रुपये छात्रावास वृत्ति भी मिलेगी।

चिकित्सा, इंजीनियरिंग, पशु चिकित्सा या ऐसे ही अन्य विशेषज्ञता वाले तकनीकी विषयों का अध्ययन करने वाले कार्मिकों के बच्चों को अन्य रैंकों के मामले में 750 रुपये, अराजपत्रित को 600 रुपये तथा राजपत्रित को 500 रुपये वार्षिक की छात्रवृत्ति दी जायेगी, इसके अलावा क्रमशः 350, 300 तथा 250 रुपये प्रति वर्ष की छात्रावास वृत्ति भी होगी।

इन छात्रवृत्तियों के लिये आवेदन यूनिट एवं रेंज स्तर पर 30 नवम्बर 1987 तथा महानिदेशालय स्तर पर 15 दिसम्बर, 1987 तक प्राप्त हो जाने चाहिये।

के०रि०पु० बल के उन कार्मिकों के आश्रित जो अपने सेवा काल में मारे गये या अश्वेपन या फेफड़ों की खराबी के कारण सेवा से अयोग्य करार दिये गये, भी के०रि० पु० बल एजुकेशन फंड से अर्थिक सहायता पाने के हकदार होंगे। 125 रुपये कक्षा 2 से 4 तक पढ़ने वालों को, 300 रुपये कक्षा 5 से 12 तक पढ़ने वालों को तथा 400 रुपये कला/कार्मस विषय में स्नातक स्तर की पढ़ाई या डिप्लोमा कोर्स करने वालों को दिये जायेंगे। 200 रुपये चिकित्सा शास्त्र की डिग्री या कृषि, इंजीनियरिंग या ऐसे विशेषज्ञता वाले विषयों का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को दिये जायेंगे।

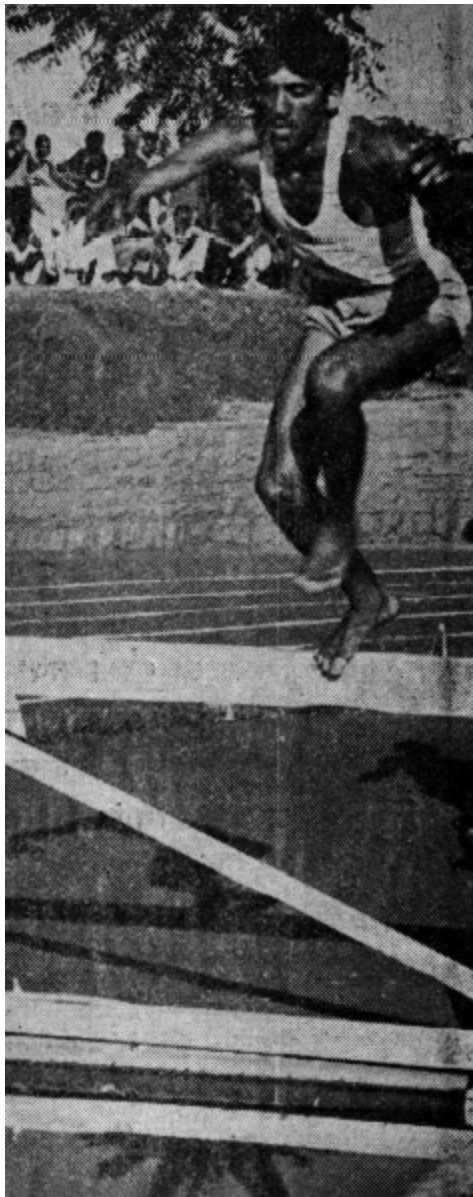
बल का अपना पब्लिक स्कूल

20 नवम्बर, 1987 को दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में के० रि० पु० बल को अपने स्कूल के लिए 6½ एकड़ भूमि के टुकड़े पर अधिकार मिल गया।

अब इस भूमि के टुकड़े पर अगले शैक्षिक सत्र से विद्यालय को शुरू करने की योजना है। शुरू में यह विद्यालय के० जी० से कक्षा 7 तक होगा। हर साल इस विद्यालय में तब तक एक कक्षा बढ़ाई जाती रहेगी, जब तक कि यह कक्षा 12 तक नहीं हो जाता। फिलहाल स्कूल के लिए अस्थाई व्यवस्था टेंटों आदि में की जाएगी, लेकिन जुलाई, 1988 तक इसके भवन का निर्माण कार्य भी शुरू हो जाने की आशा

हैं। भवन का निर्माण 3 वर्षों में पूरा हो जाने की सम्भावना है। वर्तमान योजना के अनुसार निर्माण के अंतिम चरणों में विद्यालय में छात्रों एवं छात्राओं के लिए छात्रावास की भी सुविधा होगी। विद्यालय के लिए एक वास्तुकार एवं प्रधानाध्यापक की सेवाओं के लिये विभिन्न अखबारों में विज्ञापन भी छप चुके हैं।

अंतररेंज दौड़ कूद प्रतियोगिताएं



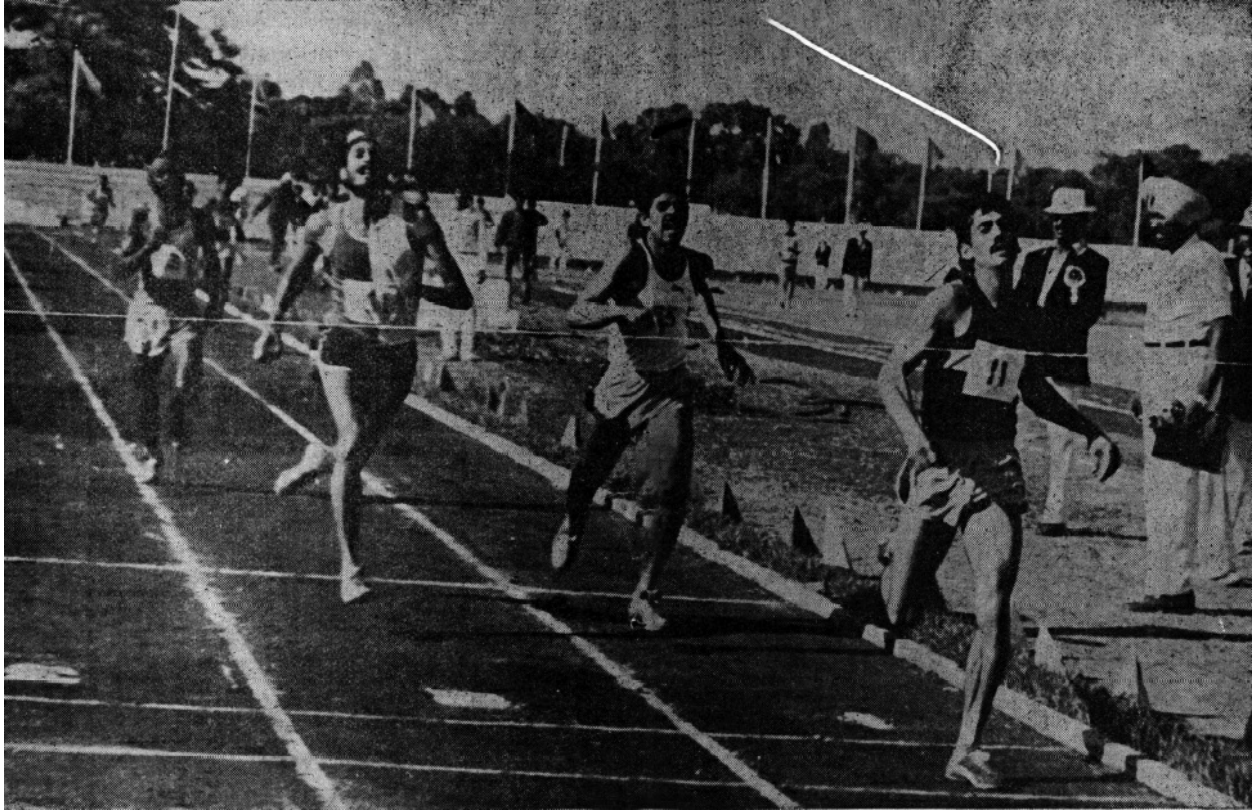
सम्सुद्दीन स्टीपल चेस दौड़ में भाग लेते हुए, जिसमें उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

1 से 4 दिसम्बर, 87 तक नौमच में हुई के०रे०पु० बल की अंतर रेंज खेल प्रतियोगिताओं में अजमेर रेंज ने 171 अंक प्राप्त कर चैम्पियन ट्राफी पर कब्जा कर लिया। सात अंक कम प्राप्त कर मद्रास रेंज द्वितीय रही।

चार दिन की इस प्रतियोगिता में एक भी रिकार्ड नहीं टूटा। पूरी प्रतियोगिता में 800 मीटर दौड़ के 1 मिनट, 53.3 सैकंड रिकार्ड के बराबर पहुंचने के कारण अजमेर के चांदवीर सिंह आकर्षण का केन्द्र रहे। गुवाहाटी के गुरमुख सिंह 1 मिनट 53.7 सैकंड लेकर द्वितीय रहे। जबकि अजमेर के करतारसिंह ने तीसरे स्थान के लिए .1 सैकंड का अधिक समय लिया।

गुरमुखसिंह ने बाद में 1,500 मीटर की प्रतियोगिता 3 मिनट 69.4 सैकंड का समय लेकर जीत ली। पूरे 4 मिनट का समय लेकर चांदवीरसिंह दूसरे नम्बर पर रहे। जबकि केवल .4 सैकंड के अंतर के कारण करतारसिंह ने अपना दूसरा कांस्य पदक पाया।

नवम्बर में कलकत्ता में हुए दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों में 3,000 मीटर की बाधा दौड़ में स्वर्ण पदक जीतने वाले अजमेर के सम्सुद्दीन को इस प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उसने कुल 9 मिनट 0.4 सैकंड का समय लिया। जबकि श्रीनगर के कुलविन्दर सिंह एवं हरजिन्दर सिंह क्रमशः 9 मिनट 30 सैकंड तथा 9 मिनट 40 सैकंड का समय लेकर दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। सम्सुद्दीन ने 5,000 मीटर की दौड़ भी 14 मिनट 40.1 सैकंड का समय ले कर जीत ली। इस प्रतियोगिता में दिल्ली के गुरनाम सिंह तथा श्रीनगर के कुलविन्दर सिंह क्रमशः 15 मिनट 14.2 सैकंड तथा 15 मिनट 18.3 सैकंड का समय लेकर द्वितीय व तृतीय रहे।



800 मीटर दौड़ की समाप्ति पर चाँदवीर सिंह : प्रथम

मद्रास के दलजीत सिंह ने दो स्वर्ण पदक प्राप्त किए जब उन्होंने 200 मीटर व 400 मीटर की बाधा दौड़ें क्रमशः 22.5 सैकंड तथा 56.6 सैकंड में जीती।

कलकत्ता रेंज के उपाधीक्षक रणबीर सिंह बल ने हैमर तथा डिस्कस श्रो प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीते। हैमर श्रो प्रतियोगिता में उन्होंने गोला, 59.26 मीटर की दूरी पर फेंका। यह दूरी उनके अपने रिकार्ड 62.12 मीटर से भी कहीं कम थी। डिस्कस श्रो में उन्होंने तश्तरी को 47.82 मीटर दूर फेंका।

अजमेर के लक्ष्मी टोकरे ने कठिन मैराथन को आसानी से जीत लिया। श्रीनगर के ए० एस० मान को उन्होंने दूसरे स्थान पर धकेल दिया। लक्ष्मी टोकरे ने दौड़ पूरी करने में 2 घंटे 35 मिनट 42 सैकंड का समय लिया, जबकि यनम ने 2 घंटे 37 मिनट 49 सैकंड में दौड़ पूरी की। नीमच के एक सफाई कर्मचारी दलीप कुमार ने 2 घंटे 49 मिनट 54 सैकंड का समय लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। हैदराबाद के देव आशीष राय प्रतियोगिता के सबसे तेज धावक रहे। उन्होंने 100 मीटर की दूरी 11.1 सैकंड में पूरी की। हैदराबाद की टीम ने 4X100 मीटर रिले दौड़ भी 43.3 सैकंड का समय लेकर जीत ली। मद्रास और श्रीनगर की टीम द्वितीय रही।

4X400 मीटर की रिले दौड़ में मद्रास की टीम 3 मिनट 24.1 सैकंड का समय लेकर प्रथम रही। नीमच तथा श्रीनगर की टीमों इस प्रतियोगिता में क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय रही।

मद्रास रेंज के वाई. सत्यशीलन ने लम्बी कूद में 7.17 मीटर की दूरी तय कर स्वर्ण जीता, ट्रिपल जंप में 13.85 मीटर की दूरी तय कर रजत पदक जीता एवं 100 मीटर की दौड़ 11.3 सैकंड में पूरी की और प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ एथलीट घोषित हुए।

बल के दक्षिणी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री सी. सुब्रह्मण्यम ने प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया जबकि बल के महानिदेशक श्री एस. डी. पाण्डेय ने पुरस्कार वितरित किए।



प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी वाई० सत्यशीलन



प्रतियोगिताओं के आयोजकों के साथ के. रि. पु. बल के महानिदेशक श्री एस. डी. पांडेय

प्रतियोगिता के कुल परिणाम इस प्रकार रहे :—

100 मीटर दौड़ : देवाशीष राय (हैदराबाद) 11.1 सैकंड, 2. सत्यशीलन (मद्रास) 11.3 सैकंड 3. नरीलाल (कलकत्ता) 11.3 सैकंड।

200 मीटर दौड़ : 1. दलजीत सिंह (मद्रास) 22.5 सैकंड, 2. गुरदेव सिंह (श्रीनगर) 23.0 सैकंड, 3. गुरमैलसिंह (चन्डीगढ़) 23.5 सैकंड।

400 मीटर दौड़ : 1. उम्मेदसिंह (नीमच) 49.8 सैकंड, 2. शंकर त्रिके (नीमच) 50.9 सैकंड, 3. गुरदेव सिंह (श्रीनगर) 50.9 सैकंड।

800 मीटर दौड़ : 1. चांदवीर सिंह (अजमेर) 1.53.3 सैकंड, 2. गुरमुख सिंह (गुवाहाटी) 1.53.7 सैकंड, 3. करतार सिंह (अजमेर) 1.53.8 सैकंड।

1500 मीटर दौड़ : 1. गुरमुख सिंह (गुवाहाटी) 3.59.4 सैकंड, 2. चांदवीर सिंह (अजमेर) 4.00.0 सैकंड, 3. करतार सिंह (अजमेर) 4.00.4 सैकंड।

3,000 मीटर दौड़ : 1. समसुद्दीन (अजमेर) 9.00.4 सैकंड, 2. कुलविंदर सिंह (श्रीनगर) 9.30.0 सैकंड, 3. हरजिंदर सिंह (श्रीनगर) 9.40.4 सैकंड।

5,000 मीटर दौड़ : 1. समसुद्दीन (अजमेर) 14.40.1 सैकंड, 2. गुरनाम सिंह (दिल्ली) 15.14.2 सैकंड, 3. लुलविंदर सिंह (श्रीनगर) 15.8.3 सैकंड।

10,000 मीटर दौड़ : महेन्द्र सिंह (श्रीनगर) 32.01.0 सैकंड, 2. वी. एन. सोमी (मद्रास) 32.09.0 सैकंड 3. रसदेव सिंह (मद्रास) 32.19.0 सैकंड।

मेराथन : 1. लक्ष्मी टोकरे (अजमेर) 3.35.42 सैकंड, 2. ए. एस. यनम (श्रीनगर) 2.37.49 सैकंड, 3. दलीप कुमार (नीमच) 2.49.54 सैकंड।

110 मीटर बाधा दौड़ : 1. घासीराम (अजमेर) 15.3 सैकंड, 2. तरणजीत सिंह (श्रीनगर) 15.4 सैकंड, 3. सयोधनन (दिल्ली) 15.5 सैकंड।

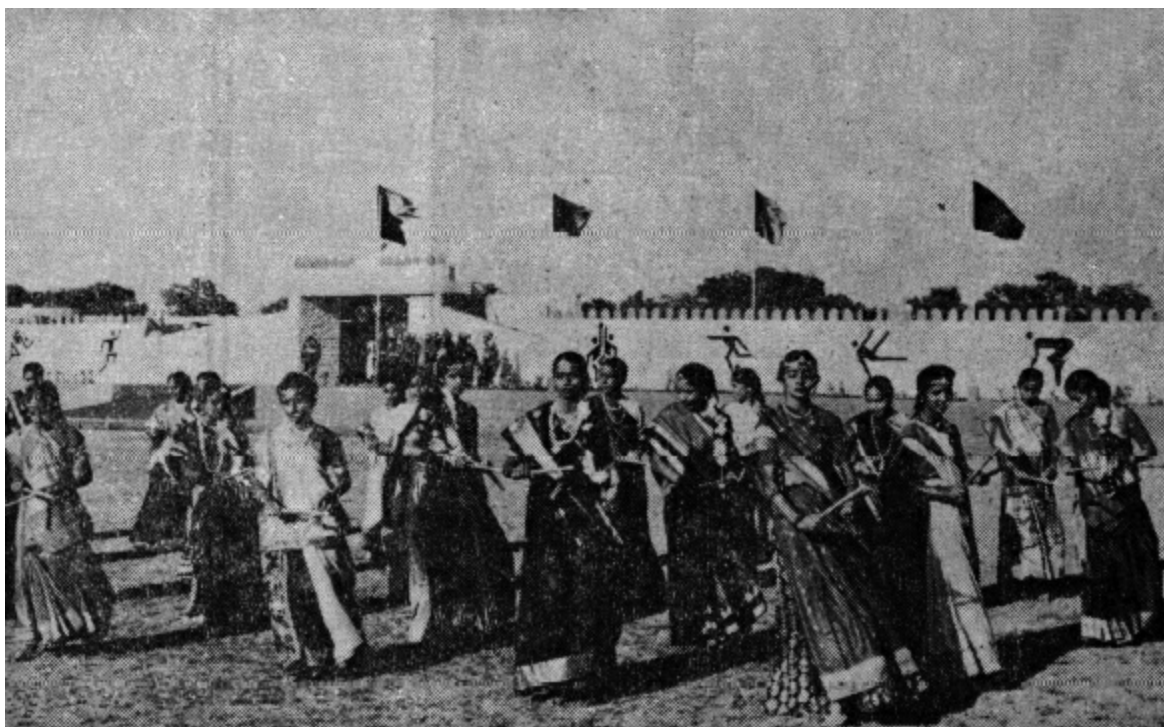
400 मीटर बाधा दौड़ : 1. दलजीत सिंह (मद्रास) 0.56.6 सैकंड 2. संजय यादव (गुवाहाटी) 0.57.4 सैकंड, 3. नरेन्द्रसिंह (अजमेर) 0.57.5 सैकंड।

पोल वाल्ट : 1. बलजीत सिंह (कलकत्ता) 4.20 मीटर, 2. जनक चन्द (मद्रास) 3.60 मीटर, 3. नासीर हुसैन (श्रीनगर) 3.50 मीटर।

ऊँची कूद : 1. रामकुमार (अजमेर) 1.90 मीटर, 2. सतबीर सिंह (अजमेर) 1.85 मीटर, 3. के० एस० गोपाल दास (मद्रास) 1.80 मीटर।

लम्बी कूद : 1. वाई. सत्यशीलन (मद्रास) 7.17 मीटर, 2. के० शियोधरन (दिल्ली) 7.8 मीटर, 3. बलदेव सिंह (श्रीनगर) 6.73 मीटर।

ट्रिपल जंप : राजेन्द्र कुमार (श्रीनगर) 14.50 मीटर, 2. वाई० सत्यशीलन (मद्रास) 13.85 मीटर, 3. बी. राबर्ट (मद्रास) 13.60 मीटर।



समापन समारोह के दौरान केन्द्रीय विद्यालय, नीमच की छात्राओं द्वारा आकर्षक नृत्य

डिस्कस थ्रो : 1. आर. एस. बल (कलकत्ता) 47.82 मीटर, 2. कमलदीप सिंह (मद्रास) 44.12 मीटर, 3. ए. पी. एस. मान (हैदराबाद) 43.58 मीटर।

हैमर थ्रो : आर. एस. बाल (कलकत्ता) 59.26 मीटर, 2. ओम प्रकाश (अजमेर)

55.66 मीटर, 3. जे. एस. भुल्लर (दिल्ली) 51.10 मीटर।

जैबलिन थ्रो : 1. रामाशंकर (अजमेर) 63.18 मीटर, 2. के. नटराजन (हैदराबाद) 58.54 मीटर, 3. बी० सुशीलन (पटना) 56.04 मीटर।

शाट पुट : 1. कमलदीप सिंह (मद्रास) 13.87 मीटर, 2. ए. पी. एस. मान (हैदराबाद) 13.65 मीटर, 3. मोहम्मद सादिक (श्रीनगर) 13.30 मीटर।

डेक्थलोन : 1. के० शयोधनन (दिल्ली) 6189 पाइंट्स, 2. हरमोहन मेहतो (अजमेर) 5942 पाइंट्स, 3. नासीर हुसैन (श्रीनगर) 5645 पाइंट्स।

4x100 मीटर रिले दौड़ : हैदराबाद रेंज 43.2 सैकंड, 2. मद्रास रेंज 43.8 सैकंड, 3. श्रीनगर रेंज 43.9 सैकंड।

4x400 मीटर रिले दौड़ : मद्रास रेंज 3.24.1 सैकंड, 2. नीमच रेंज 3.24.3. सैकंड, 3. श्रीनगर रेंज 3.26.7 सैकंड।

जोखिम निधि लाभ

अक्तूबर व नवम्बर, 1987 के दौरान के० रि० पु० बल के रिस्क प्रिमीया फंड के पास मृत्यु के कुल 34 मामले आए, जिनके लिए 5,78,000 रुपये की राशि का भुगतान किया गया।

नौकरी के लिए अनाधिकृत कार्मिकों के कुल 19 मामले आए, जिन्हें 2,85,000 रुपये की राशि दी गई।

नागा विद्रोहियों द्वारा बल के दो कार्मिकों की हत्या

4 दिसम्बर को संदिग्ध नागा विद्रोहियों ने असम नागालैंड सीमा के 'ए' सेक्टर के पास बोकेतो में बल की 18 बटालियन के दो कार्मिकों की घात लाग कर हत्या कर दी। तथा अन्य को घायल कर दिया। अखबारों में छपी खबरों के अनुसार घायल खतरे से बाहर हैं।

घटना के बाद की गई इलाके की छानबीन में 20 खाली कारतूस बरामद किए गए।

बल के सिगनलमैन को मेडल

महू में स्थित टेलीकम्युनिकेशन इन्जीनियरिंग के मिलिट्री कालिज में अगस्त माह में हुए सिगनल के फोरमैन कोर्स में प्रथम स्थान पाने के लिए बल की 1 सिगनल बटालियन के हैडकांस्टेबल रेडियो मैकेनिक पी. सी.साइमन को कमांडेंट के मेडल तथा भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के मेडल से सम्मानित किया गया है।



है० कां० साइमन

श्री साइमन ने इस कोर्स में 16 दिसम्बर, 1985 से 4 अगस्त, 1987 तक भाग लिया था।

इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण दिए जाने वाले विषयों में कम्प्यूटर कम्युनिकेशन, सेटेलाइट (उपग्रह) कम्युनिकेशन तथा अत्यधिक आधुनिक व संवेदनशील संचार यंत्रों के बारे में जानकारी थी।

पाठ्यक्रम के अन्त में श्री साइमन सर्वश्रेष्ठ पाए गए।

यह पाठ्यक्रम इलैक्ट्रॉनिक्स, रेडियो एवं टेली कम्युनिकेशन इन्जीनियरिंग के डिप्लोमा कोर्स के बराबर है तथा इसे केन्द्रीय सरकार से मान्यता प्राप्त है।

संदिग्ध व्यक्ति पकड़ा

21 अक्टूबर, 1987 को लगभग 20.00 बजे 81 बटालियन की एक टुकड़ी ने स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर मुरादाबाद में जावेद खान नाम के एक आदमी को आर./ओ महल्ला दरीबा तहसील स्कूल के पास पकड़ कर उससे .38 रिवाल्वर 1, .38 गोलियां 5, .315 गोलियां 3, तथा एक स्कूटर बरामद किया।

एक आतंकवादी मारा गया

7 दिसम्बर 1987 की रात को 8 संदिग्ध आतंकवादियों का पीछा करते हुए

उग्रवादियों से हुई बल के कामेकों की मुठभेड़ में 'खालेस्तान कमांडो फोर्स' का कुलदीपसिंह मारा गया। इस मुठभेड़ में बल का एक कांस्टेबल भी जखमी हुआ।

इस मुठभेड़ में गिरफ्तार आतंकवादियों से 1.15 लाख रुपए नकद तथा कई हथियार व गोला बारूद बरामद किया गया।

कुलदीप सिंह 'बी' श्रेणी का आतंकवादी था। यह मुठभेड़ अमृतसर जिले के बाहरी इलाके में स्थित हर्षा चिन्ना गाँव के पास हुई। कांस्टेबल सुरेश गोलियों से उस समय घायल हो गया जब बल के कार्मिकों पर चैक पोस्ट पर आतंकवादियों ने गोली चलाई।

अखबारों में छपी खबरों के अनुसार 'ए' श्रेणी का आतंकवादी मिल्कियत सिंह तथा उसका साथी सत्ता सांसी भागने में कामयाब रहे।

बल के अधिकारी दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों में

के० रि० पु० बल की एथलेटिक टीम के मैनेजर और कोच श्री एच०पी०एस० चीमा 20 से 27 नवम्बर, 1987 तक कलकत्ता में हुए दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों के लिए तकनीकी अधिकारी चुने गए थे।

77 बटालियन के डा० सी० आर० के० मूर्ती, जो खेल चिकित्सा के विशेषज्ञ हैं, का भारतीय ओलम्पिक संघ द्वारा दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों के दौरान भारतीय दल के चिकित्सक के रूप में चयन किया गया था।

बल के पूर्व महानिदेशक श्री वी० जी० कानेटकर का खत

18 वर्ष पूर्व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल से अवकाश ग्रहण करने के बाद मैं के० रि० पु० बल महानिदेशालय की समाचार पत्रिका (पहले 'क्रैपलर' और अब 'सी० आर० पी० एफ० समाचार') की प्रतियाँ लगातार पाता रहा हूँ। इस प्रकार बल से दूर रहने के बावजूद भी बल की गतिविधियों से पूर्णतया अवगत होता रहा हूँ। बल की गतिविधियाँ सदैव मुझे प्रभावित करती रही हैं। मैं बराबर अपने विचारों को पत्रिका में व्यक्त करने के लिए संपादक को भेजने के लिए सोचता रहा हूँ, लेकिन किन्हीं कारणों से ऐसा नहीं हो पाया। हालांकि इसके लिए मेरे पास कोई सफाई नहीं है और मैं सफाई देना भी नहीं चाहूँगा।

बल के विकास के जिन कारकों ने मेरे मस्तिष्क पर अपना प्रभाव छोड़ा है, उनमें बल की शक्ति व सामर्थ्य में आश्चर्यजनक रूप से बढ़ोत्तरी, हाल ही में शुरू हुई केवल महिलाओं की बटालियन की गौरवशाली शुरुआत, खेलकूद के क्षेत्र में बल के

खेलाड़ियों के गौरवशाली योगदान के आतिरेक्त बल के कामों पर दिनों-दिन बढ़ रही जिम्मेदारियाँ और उनका बलिदान है। बल के कार्मिकों को बहुत ही कठिन और जोखिम भरी स्थितियों में कार्य करना पड़ता है। इस तरह के अनुशासन और बहादुरी की प्रशंसा द्वारा भी समय-समय पर प्रशंसा की जाती रही है, समय-समय पर बल के कार्मिकों को प्रदान किये जाने वाले पदक व अन्य तरह के पुरस्कार इस बात के प्रमाण हैं।

जून 1963 में जब मैंने बल के प्रथम स्वतंत्र महानिरीक्षक पद का कार्यभार संभाला था तब के० रि० पु० बल में केवल 17 बटालियनें थीं। पूरे देश में स्थिति पूर्णतया शान्तिपूर्ण नहीं थी और बल की सेवाओं की माँग जम्मू कश्मीर, नागालैंड, मणिपुर, असम के पूर्वभाग वाले हिमालय के हिस्सों के अलावा जहाँ बल के कार्मिक स्थायी रूप से जमे थे पूरे देश में अलग-अलग राज्यों से की जा रही थी। विकट परिस्थितियों में बल के कार्मिकों पर लगातार बढ़ते कार्यभार को देखते हुए 1967 में केंद्रीय सरकार ने निर्णय लिया कि के० रि० पु० बल विभिन्न राज्यों से 35 आरक्षित बटालियनें लेकर उनका अपने में विलय करें। यह कोई आसान कार्य नहीं था लेकिन हर तरह की असुविधा को नजरअन्दाज करने वाले अधिकारियों की मदद से लगभग 2 वर्ष में यह कार्य सम्पन्न हो गया और सितम्बर, 1969 में जब मैं के० रि० पु० बल का प्रथम महानिदेशक बना तो इसमें 52 बटालियनें तथा 3 सिग्नल बटालियनें थीं। मेरे व मेरे कार्यालय द्वारा नए संगठन के ढाँचे की व्यवस्था तैयार की जा चुकी थी, जिसका मुख्य अंग ग्रुप केन्द्रों की रचना करना था जिनमें 3-4 बटालियनें हों तथा हर एक में विभिन्न सुविधाओं के साथ नये प्रशिक्षण केन्द्रों का निर्माण करना था। एक केन्द्रीय विचार यह भी था कि प्रत्येक ग्रुप केन्द्र पर कम से कम एक बटालियन सदा रहे तथा नए कार्मिकों का प्रशिक्षण भी चलता रहे। लेकिन जैसा कि मुझे समाचारपत्रों से ज्ञात हुआ है कि इस समय बल की बटालियनों की संख्या 80 से अधिक है और ग्रुप केन्द्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई है लेकिन प्रत्येक ग्रुप केन्द्र पर एक बटालियन को आराम, प्रशिक्षण के लिए रखने का लक्ष्य अभी तक पूरा नहीं हुआ है। बल की सेवाओं की माँग अभी भी उसकी सामर्थ्य से अधिक है।



अवकाश ग्रहण कर पूना में बसने के बाद जब भी मुझे देश के किसी हिस्से में जाना पड़ा है, और अगर वहाँ के० रि० पु० बल के केन्द्र थे तो मैं हमेशा मौके का फायदा उठाकर वहाँ गया हूँ जैसे आवडी, हैदराबाद, दिल्ली, गांधीनगर, नीमच, अजमेर, नागपुर तथा इंदौर के नजदीक स्थित बरवाह केन्द्र तक मैं गया हूँ। मेरे जैसा पुराना व्यक्ति यह देख कर बेहद उत्तेजना एवं प्रसन्नता महसूस करता है कि दिल्ली स्थित महानिदेशालय में बैठ कर हम जिन योजनाओं के प्रारूप तैयार करते हैं, वे किस प्रकार ग्रुप केन्द्रों के साफ-सुथरे व हरे भरे माहौल में सफलतापूर्वक कार्यरूप ग्रहण करती हैं। निस्संदेह यह कार्य गृह मंत्रालय द्वारा ली गई अतिरिक्त रुचि एवं वित्त मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई गई राशि के कारण ही संभव हुए हैं। मुझे इन केन्द्रों में उन अधिकारियों से मिल कर बेहद आश्चर्य मिश्रित हर्ष होता है जो मेरे सेवाकाल के दौरान भी कार्यरत थे।

हाल ही में प्राप्त हुए 31 जुलाई के 'सी० आर० पी० एफ० समाचार' के अंक से मुझे प्रेरणा प्राप्त हुई कि मैं अपनी चिरसिंचित इच्छा को पूर्ण कर सकूँ। खास कर पंजाब जाने वाले बल के कार्मिकों, मेरठ में हमारी बटालियन की लड़कियों की कार्यकुशलता और कंप्यूटर पर आधारित प्रणाली 'आटोमैक्स' के जरिए बल के आधुनिकीकरण के प्रयासों ने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया। पंजाब में पिछले कुछ सालों से जो हो रहा है, उसने न केवल प्रत्येक नागरिक को हिला कर रख दिया है, अपितु मेरे जैसे पहले बल से जुड़े व्यक्ति को भी व्यथा से भर दिया है, और यह बात अच्छी तरह से सोची जा सकती है कि पंजाब में हमारा बल किन स्थितियों से गुजर

रहा है। बिना यह जाने कि कब कहाँ से हाथियारों से सजे कुछ विश्वासघाती लोग आक्रमण कर देंगे हर समय कार्य करना लगभग आलौकिक कार्य सा ही है। वे बहुत कठिन परिस्थितियों में कार्य कर रहे हैं, लेकिन वे आतंकवादियों से जम कर टक्कर ले रहे हैं। स्थानीय पुलिस के साथ बल के कार्मिक जो बहादुरी दिखा रहे हैं वह प्रशंसा से परे है और उनका यह कार्य इतिहास के पन्नों पर एक दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। मैंने उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा जम्मू कश्मीर की अपनी यात्राओं के दौरान देखा है कि हमारे जवान विपरीत स्थितियों में काम करने के अभ्यस्त हैं, लेकिन पंजाब में स्थिति बहुत ही खराब है लेकिन फिर भी हमारे जवान व अधिकारी जिस प्रकार कई जानों के नुकसान के बावजूद स्थिति का मुकाबला कर रहे हैं, उसे देख कर सिर श्रद्धा से झुक जाता है।

इस साल मई में के० रि० पु० बल की महिला बटालियन की लड़कियों ने मेरठ में खुद को सौंपे गए कार्य को पूरी जिम्मेदारी से अंजाम देकर न केवल अपने बारे में उठ रहे संदेहों को ही समाप्त कर दिया अपितु इस बात का भी प्रमाण दे दिया कि जब भी जहाँ भी उनसे किसी भी प्रकार के कार्य की अपेक्षा की जाएगी वे उसके लिए प्रस्तुत होंगी। उन्होंने अपनी सामर्थ्य का परिचय दे दिया है और उन पर जरूरत पड़ने पर किसी भी तरह के कार्य के लिए विश्वास किया जा सकता है।

शौर्यवीरता के पदकों एवं खेलों की दुनिया में के० रि० पु० बल की दौड़ पूरी तरह बाधा रहित है। इन सब का समाचार परिका में पूरा-पूरा विवरण उपलब्ध है, साथ ही 'Disorders' तथा 'Cold & Flu' जैसे लेख भी पठनीय हैं।

कुल मिला कर यही कहा जा सकता है कि बेहद कठिन, विकट और विपरीत परिस्थितियों में भी बल अपने कार्य को बहुत ही अच्छी तरह से अंजाम दे रहा है। और मेरे जैसे व्यक्ति को जो कि विगत में स्वयं बल से जुड़ा रहा हो इस बात पर गर्व होना चाहिए कि वह इस बल का सदस्य रहा है, और मुझे इस बात की पूरी उम्मीद है कि बल अपने नारे 'सेवा और भक्ति' पर आने वाले दिनों में भी कायम रहेगा।

ह०

वी०जी० कानेटकर

भूतपूर्व महानिदेशक, के० रि० पु० बल

संशोधित पेंशन योजना

आतंकवादियों, अराजक तत्वों तथा अन्य असामाजिक तत्वों से निबटने व दंगों आदि पर काबू पाने के प्रयास में मृत्यु को प्राप्त हुए सरकारी कर्मचारियों की पेंशन के संदर्भ में केन्द्रीय सरकार द्वारा उनकी विधवाओं/आश्रितों की भलाई के लिए पेंशन में कुछ और लाभ दिए जाने की घोषणा की गई है। इस पेंशन योजना के कुछ लाभ इस प्रकार हैं।

विधवाओं के लिए

उपर्युक्त स्थितियों में मृत्यु के शिकार हुए सरकारी कर्मचारियों की विधवाओं को पुनर्विवाह/मृत्यु तक सरकारी कर्मचारी द्वारा लिए जा रहे अन्तिम वेतन के बराबर पेंशन मिलेगी। पुनर्विवाह के बाद विधवा को पुनर्विवाह के दिन से साधारण पारिवारिक पेंशन सी. सी. एस. (पेंशन) नियम, 1972 के अनुकूल ही पेंशन मिलेगी।

बच्चों के संदर्भ में

अगर कार्मिक की पत्नी पहले ही मर चुकी हो और उसके बच्चा/बच्चे हों तो पेंशन योजना का लाभ उसके बच्चों को निम्न प्रकार से दिया जाएगा।

(अ) 1,500 रुपए मासिक वेतन वाले कार्मिक के वेतन का 50 प्रतिशत।

(ब) 1,500 से ज्यादा लेकिन 3,000 रुपये से कम वेतन वाले कार्मिक के वेतन का 40 प्रतिशत जो 750 रुपए से कम न हो।

(स) 3,000 से अधिक वेतन वाले कार्मिक के वेतन का 30 प्रतिशत जो कम से कम 1,200 तथा अधिक से अधिक 2,500 रुपए प्रतिमाह हो सकता है।

अभिभावकों के लिए

बच्चों व विधवाओं की अनुपस्थिति में मृत कार्मिक के अभिभावक उसके अंतिम वेतन का 3/4 भाग प्रतिमाह पेंशन के रूप में पाने के हकदार होंगे।

बच्चों को शिक्षा संबंधी भत्ता/बच्चों का भत्ता

जब पेंशन योजना का लाभ बच्चों को मिल रहा हो, या जब विधवा पुनर्विवाह कर ले तो बच्चों की शिक्षा से संबंधित भत्ता इस प्रकार से दिया जाएगा।

(अ) यदि मृत कार्मिक का वेतन 2,200 रुपए प्रतिमाह से कम था तो प्रति बच्चा प्रतिमाह 100 रुपये।

(ब) यदि मृत कार्मिक का वेतन 2200 रुपए प्रतिमाह से अधिक था तो 150 रुपए प्रतिमाह प्रति बच्चा दिया जाएगा।

दो पल सोचें

मेरे दोनों हाथों को जुड़ जाने की आदत है। मैं नहीं पहचानता कि मेरे सामने कौन आया है। मैं तो सामने भगवान की मूर्ति देखता हूँ।

—विनोबा भावे

तप से शक्ति, त्याग से शांति, प्रेम से भक्ति और श्रद्धा से ज्ञान मिलता है।

—अज्ञात

क्रोध मूर्खता से आरम्भ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है।

—पाइथागोरस

स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है।

ज्यों ज्यों अभिमान कम होता है, कीर्ति बढ़ती है।

पंजाब से

१ आतंकवादी गिरफ्तार

5 अक्टूबर, 1987 को लगभग 05.10 बजे के० रि० पु० बल की 36 बटालियन की 'बी' कम्पनी के कार्मिकों ने स्थानीय पुलिस के साथ मिल कर ऐरी क्षेत्र में आने वाले गांव लाल चौक की गश्त की। गश्त के दौरान उग्रवादियों के एक गिरोह ने पुलिस पर अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसका जवाब पुलिस कर्मियों ने बड़ी दृढ़ता से दिया। परिणामस्वरूप 9 उग्रवादी पकड़े गए और उनसे एक देशी एस०बी०बी०एल० गन, एक 12 बोर गन, 3 सजीव गोलियां, 6 खोके, पाँच .315 गोलियाँ तथा 2 पसुली बरामद की।

एक आतंकवादी मरा

7 अक्टूबर, 1987 की रात लगभग 11.45 बजे, 48 बटालियन की 'ए' कंपनी के कार्मिकों ने स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर जोरा कैनल ब्रिज में घात लगाई और दो युवकों को आते देखा। जब युवकों को रुकने के लिए कहा गया तो उन्होंने पार्टी पर गोली चलानी शुरू कर दी। 15 मिनट तक दोनों तरफ से गोलीबारी होती रही। परिणामस्वरूप एक आतंकवादी मारा गया। दूसरा युवक भाग निकला। मृतक के पास से एक एस. बी. बी. एल. गन, दो 12 बोर के एल. जी. कारतूस तथा नौ 12 बोर के खाली कारतूस बरामद किए गए।

संदिग्ध आतंकवादी मरा

7 अक्टूबर, 1987 को लगभग 19.25 बजे; गाँव भोपाराम में 8 सशस्त्र उग्रवादियों ने चार आदमियों को मार गिराया। उन्होंने .315 बोर, .303 बोर, और .30 कारबाइन का प्रयोग किया। सूचना प्राप्त होने पर 24 बटालियन के कार्मिकों ने सब रास्तों को सील कर दिया। लगभग 23.30 बजे बल के कार्मिकों ने नाकाबंदी के दौरान पाँच व्यक्तियों को अपने पास आते देखा, ललका- रने पर उन्होंने गोली चलाई। पुलिस पार्टी ने भी शीघ्रता से गोली चलाई। मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया व बाकी भाग निकले। घटनास्थल पर एक .303 पिस्तौल के साथ खोके और 8 सजीव गोलियां

एमटी .315 और .303 बरामद हुए। मृतक आतंकवादों को शिनाख्त न हो सका।

गोली बारुद्र बरामद

13 अक्टूबर, 1987 को लगभग 2015 बजे बल की 38 बटालियन की 'एफ' कम्पनी द्वारा चूंचकवाल सोडियन गाँव सड़क पर लगाई गई घात के दौरान 5 आतंकवादियों से मुठभेड़ हो गई। लगभग आधे घंटे तक गोलीबारी होती रही। सूचना प्राप्त होने पर बल के और जवान घटनास्थल पर पहुंच गए। घटनास्थल पर खोज करने के दौरान उन्हें धान के खेतों में खून के निशान दिखाई दिए। घटनास्थल से 200 से ज्यादा ए. के. 47 राइफल की गोलियाँ, एस. ए. मैगजीन .30 माउसर पिस्तौल जो 8 सजीव गोलियों से भरी थी बरामद हुई।

स्मगलर पकड़े

15 अक्टूबर, 1987 को लगभग 1000 बजे एक मारुति कार नं० जी. एल. बी.-4101 से के०रि०पु० बल की 49 बटालियन के कार्मिकों ने बम्बेवाला खुली (अमृतसर शहर) में नाकाबंदी के दौरान चार लाख रुपये नकद, 785 रुपये जो पर्स में थे बरामद किए। ऐसा मालूम हुआ कि कार में बैठे युवक हरदियाल सिंह गांव पंडोरी और सुरजीतसिंह गांव कोहला (पुलिस स्टेशन लोपक) स्मगलर थे, कार, हाथ घड़ी व नकदी समेत उन युवकों को सी. आई. ए. स्टाफ को सौंप दिया गया। कार में बैठे युवकों ने बल के कार्मिकों को सारी राशि देने का भी लालच दिया किन्तु बल के कार्मिकों ने इस प्रलोभन को स्वीकार नहीं किया।

पांच आतंकवादी पकड़े

16 बटालियन की एक कम्पनी ने 16 अक्टूबर 1987 को एक व्यक्ति से सूचना प्राप्त होने पर गाँव वासावाल खुर्द माता राम मंदिर के पीछे 1930 बजे से 2245 बजे तक छापामारी की और पांच आतंकवादियों को पकड़ लिया। उनके पास से एक .38 बोर पिस्तौल, दो 12 बोर की पिस्तौल, तेरह 9 एम एम की सजीव गोलियाँ, पाँच .38 बोर की सजीव गोलियाँ, तथा पाठ 12 बोर के सजीब कारतूस बरामद किए। उनसे पूछताछ करने पर पुलिस स्टेशन दोराहा सावनी में ट्यूबवेल के पास एक रिफिलिंग मशीन 12 बोर कारतूस की, साथ में अपक हथियार प्राप्त हुए। अपक हथियार बनाने की एक फैक्टरी भी खोज निकाली गई।

कई हत्याओं का दोषी व्यक्ति मरा

17 अक्टूबर, 1987 को अमृतसर में बल की 29 बटालियन की एक कम्पनी तथा स्थानीय पुलिस ने मिलकर छक्करखान केनाल ब्रिज पर 2200 बजे नाकाबंदी के दौरान अलवेल की तरफ से आते एक संदिग्ध व्यक्ति को ललकारा। उस व्यक्ति ने रुकने के बजाय नाका पार्टीपर गोली चलानी शुरू कर दी। पुलिस ने भी जवाब में गोली चलाई। परिणाम स्वरूप वह व्यक्ति घटना स्थल पर ही मारा गया। उसके पास

से 12 बोर की पिस्तौल, 4 गोलेयों सहित और एक फायरड कोसेस प्राप्त हुआ। मृतक व्यक्ति जिसका नाम नरेन्द्रसिंह था वह पुरशी ब्राह्मण गांव के पुलिस स्टेशन जन्धियाला के पूरन सिंह का पुत्र था। इस व्यक्ति का कई हत्याओं में हाथ था।

पंजाब से

दो आतंकवादी मरे

17 अक्टूबर, 1987 को लगभग 15.30 बजे साधारण सूचना मिलने पर लाल गेंग रोडियन राजपुर बराई-छेवावल क्षेत्र से आ रही बल की 11 बटालियन की एक टुकड़ी ने विशेष गश्ती शुरू कर दी पिक्टस, पोस्टों पर पड़ताल शुरू कर दी। जब बल की टुकड़ी गांव पड़ौसी बीबी से दो जीपों में जा रही थी, तो उन्होंने स्कूटर पर सवार दो संदिग्ध व्यक्तियों को देखा और उन्हें रुकने के लिये कहा; किन्तु उन्होंने पिस्तौल और स्टेनगन से बल के कार्मिकों पर गोली चला दी। जल्दी ही बल के कार्मिकों ने जवाबी फायर किया। परिणाम स्वरूप दोनों आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारे गये उनमें से एक जसबीर सिंह उर्फ लाल था, जो 'ए' वर्ग का आतंकवादी था और दूसरा बलविंदर सिंह गांव सरीसंकर (होशियारपुर) का था जो 'बी' वर्ग का आतंकवादी था। उनके पास से एक 9 एम. एम. की पिस्तौल, एक स्टेनगन; एक पी. .30, यू.एस. कारबाइन, सत्रह .30 कारतूस की दो मैगजीन, 9 एम. एम. के कारतूस 39, 2 मैगजीन, सात .25 गोलियां, 6 अनदगे .25 खोल, 4 दगे खोल 9 एम.एम. एक बजाज चेतक स्कूटर तथा 23,100 रुपये नकद बरामद हुये।

'बी' श्रेणी का आतंकवादी मारा गया

23 अक्टूबर, 1987 को लगभग 1615 बजे बल की 24 बटालियन की एक टुकड़ी ने स्थानीय पुलिस के साथ कालावाला गांव में धान के खेतों पर घेरा डाला। इन खेतों में बलकर सिंह उर्फ काला, ओठियन गाँव का और दो अन्य व्यक्ति छिपे थे। घेरा डालने के बाद आतंकवादियों व पुलिस में हुई मुठभेड़ में काला मारा गया और अन्य दो आतंकवादी भाग निकले। मृत आतंकवादी काला 'बी' श्रेणी का आतंकवादी था जिसे पकड़ने के लिए 30,000 रुपए का ईनाम था। उसके पास से एक .30 माउसर चीन की बनी पिस्तौल 2 मैगजीनों सहित और एम्यूनीशन की 10 गोलियां बरामद हुईं।

एक आतंकवादी गिरफ्तार

19 बटालियन की 'ए' कम्पनी द्वारा 25 अक्टूबर, 1987 को इन्स्पेक्टर करतार

सिंह के नेतृत्व में पुलिस स्टेशन सरहालों के अन्तर्गत आने वाले धानमंडों के नजदीक स्थित गांव भोला साहिब में की गई छापामारी में एक आतंकवादी गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आतंकवादी से एक 12 बोर की पिस्तौल, एक 12 बोर की डी. बी. बी. एल गन 7 सजीव व एक खाली केस के साथ बरामद की गई।

6 संदिग्ध आतंकवादी गिरफ्तार

25 अक्टूबर, 1987 की रात को 19 बटालियन की 'ए' कम्पनी द्वारा स्थानीय पुलिस के सहयोग से पट्टी कस्बे के क्षेत्र में की गई छानबीन के दौरान 6 संदिग्ध आतंकवादी गिरफ्तार किए गए। गिरफ्तार आतंकवादियों से तीन .32 रिवाल्वर (जिनमें एक रिवाल्वर विदेश निर्मित है) 7 कारतूसों सहित एक 12 बोर की डी. बी. बी. एल. गन 17 कारतूसों सहित तथा दो 12 बोर की पिस्तौलें (देशी) पांच कारतूसों के साथ बरामद की गई।

4 जवानों की हत्या

30 नवम्बर, 1987 को इम्फाल में के० रि० पु० बल की 39वीं बटालियन के चार कार्मिकों की घात लगाकर हत्या कर दी गई। इम्फाल के निकट 30 नवम्बर की रात को लगाई गई इस घात में ट्रक पर जा रहे चार बल के कार्मिक मारे गये व चार बुरी तरह घायल हुये।

इस दौरान हुई गोलीबारी में एक नागरिक भी मारा गया। ट्रक में बल के कार्मिकों के वेतन की भारी राशि ले जाई जा रही थी।

अलगाववादी तत्वों के एक झुन्ड ने जो एक झाड़ी में छिपा बैठा था, सड़क से गुजरते ट्रक पर एक बम्ब फेंका, जिससे ट्रक क्षतिग्रस्त होकर सड़क के नीचे एक गड्ढे में उतर गया। इसके साथ ही अलगाववादी तत्वों ने गोली चलानी भी शुरू कर दी। बल के कार्मिकों द्वारा जबाब में गोली चलाए जाने पर अलगाववादी तत्व भाग खड़े हुए। आटोमैटिक शास्त्रों से लैस अलगाववादी तत्वों में से कोई घायल नहीं हुआ।

ऐसा ज्ञात हुआ कि अलगाववादी तत्वों को भारी राशि ले जा रहे इस ट्रक के बारे में जानकारी थी। अतः शाम को उन्होंने एक जीप चुरा कर सड़क पर बम छिपा दिया था। अलगाववादी तत्व बल के कर्मियों से भारी धनराशि व हथियार छीनना चाहते थे, लेकिन बल के कार्मिकों की सूझबूझ व जबाबी हमले के कारण उन का यह इरादा पूरा नहीं हो पाया।

स्थानीय पुलिस का कहना है कि ये वही अलगाववादी तत्व थे, जिन्होंने शाम को जीप चुराई थी।

तीन जवान मरे

11 दिसम्बर, 1987 को पश्चिमी बंगाल के दार्जिलिंग, क्षेत्र में गोरखा नेशनल

लैंबरेशन फ्रंट के विद्रोहियों द्वारा दो वाहनों पर लगाई गई घात में चार व्यक्ति मारे गए, जिनमें 34 बटालियन के के० रि० पु० बल के तीन जवान थे।

गाड़ियां जब भारत नेपाल सीमा के साथ साथ पशुपति से मिरिक की ओर जा रही थी, तो गोरखा नेशनल फ्रंट के विद्रोहियों द्वारा गाड़ियों पर गोलियां, व बम चलाते हुए हमला किया गया। एक वाहन पूरी तरह नष्ट हो गया। मारे गए जवान कांस्टेबल आर. गोपी, कांस्टेबल रामदास शर्मा तथा कांस्टेबल कालूनाथ थे।



आल इंडिया पुलिस मीट में भाग लेने वाली के० रि० पु० बल के वेलफेयर सेंटर नीमच की टीम

पुलिस ड्यूटी मीट में बल के स्टाल को दूसरा स्थान

आल इंडिया पुलिस ड्यूटी मीट 1987 के दौरान मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा 24 से 29 नवम्बर तक भोपाल में अखिल भारतीय पुलिस कल्याण प्रदर्शनियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभिन्न राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों एवं केन्द्रीय पुलिस बलों ने इन प्रदर्शनियों एवं प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

कल्याण प्रतियोगिता 24 और 25 नवम्बर को हुई। हर 27 चौजों के लिए 6 अलग अलग नामांकनों की जरूरत थी। इनमें कनिष्ठ और ज्येष्ठ दो वर्ग थे। जिनके लिए चित्रकला, कढ़ाई, बुनाई, चमड़े के काम, बढ़ई के काम, कातने, बुनने, सुन्दर लेख एवं नक्शे बनाने की प्रतियोगिताएं थी।

पिछले 15 सालों के बाद यह पहला मौका था, जब बल ने प्रतियोगिता खंड में सर्वोच्च तीन में अपना स्थान बनाया।

कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा ने किया। बल के स्टाल के नजदीक से गुजरते हुए उन्होंने बल के स्टाल की सजावट एवं योजना की तारीफ की। मध्य प्रदेश पुलिस के महानिदेशक श्री नटराजन का कहना था कि वह बल के स्टाल पर दो बार गए क्योंकि उसकी योजना व सजावट उन्हें अत्यधिक पसंद आई थी। स्टाल की सजावट के लिए बल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ।

नीमच ग्रुप केन्द्र के सहायक कमांडेंट एन० भारद्वाज की पत्नी श्रीमती वसुधा भारद्वाज बल की कल्याण टीम की मैनेजर थीं। उन्होंने समारोह के अन्तिम दिन 29 नवम्बर 1987 को उपराष्ट्रपति डा० एस०डी० शर्मा जो समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे से प्रतियोगिता खंड में तीसरे स्थान के लिये ट्राफी तथा स्टाल की सजावट के लिए दूसरे स्थान का प्रमाण पत्र बल के लिये प्राप्त किया।

एक सुनार के घर एक डाक्टर की पत्नी आई और सुनार की पत्नी से बोली, “अरी दीदी, तेरे तो बड़े मजे होंगे, रोज जीजाजी नए-नए आभूषण ला कर देते होंगे।”

“क्यों क्या तुम्हारे डाक्टर पति रोज रोज तुम्हारा चेकअप करते हैं,” सुनार की पत्नी का जवाब था।

क्रीड़ा जगत

दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों में बल के तैराकों का बोलबाला

नवम्बर, 1987 में कलकत्ता में हुए दक्षिण एशियाई फेडरेशन खेलों में बल के 24-वर्षीय ब्रेस्ट स्ट्रोक तैराक एस. राधाकृष्णन द्वारा दो स्वर्ण व एक कांस्य पदक जीत लिया गया।

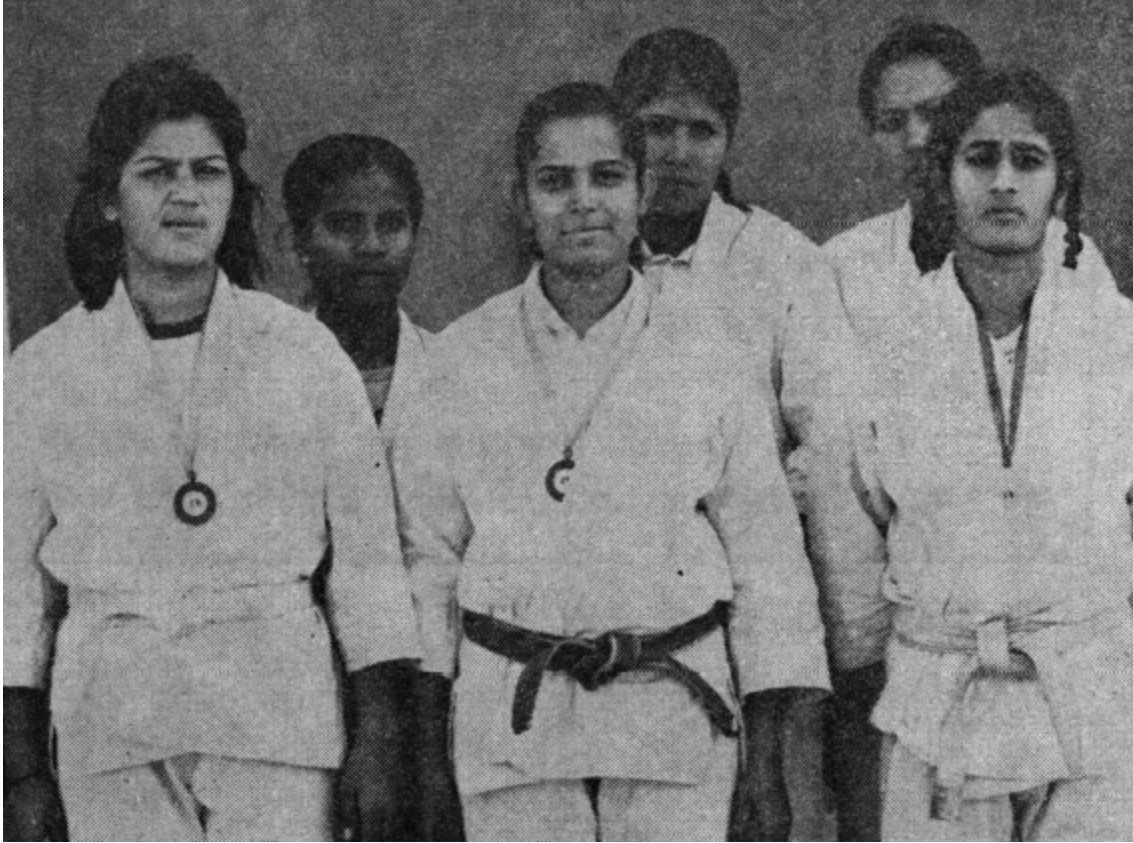
सुभाष सरोवर में हुए 200 मीटर के ब्रेस्ट स्ट्रोक मुकाबले में उसने 2 मिनट 39.10 सैकंड का समय लिया। यह उनके पिछले रिकॉर्ड 2 मिनट 37.78 सैकंड के पिछले

रिकार्ड से आधेक समय था, लेकिन वह स्वर्ण पदक जीतने में कामयाब रहे। दूसरा स्वर्ण पदक उन्हें 4X100 मीटर की रिले में प्राप्त हुआ, जिसमें भारतीय टीम ने 4 मिनट 14.48 सैकंड का समय लिया। इस मुकाबले में उन्होंने अपने पिछले 4 मिनट 16.19 सैकंड के रिकार्ड को तोड़ दिया। 100 मीटर ब्रेस्ट स्टोक मुकाबले में राधाकृष्णन को कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। पहले दो स्थानों पर बंगलादेश के तैराक रहे।

स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले बल के दूसरे तैराक समसुद्दीन रहे जिन्होंने 3,000 मीटर बाधा दौड़ को 8 मिनट, 53.22 सैकंड में पूरा कर स्वर्ण पदक जीता।



एस. राधाकृष्णन : दो स्वर्ण पदक



के० रि० पु० बल की महिला बटालियन की लड़कियों की जूडो टीम

बल के ही 23-वर्षीय उपनिरीक्षक आर. के. रोजन ने 200 मीटर बटरफ्लाई में 2 मिनट 19.58 का समय लेकर रजत पदक प्राप्त किया।

जूडो में बल की लड़कियां छाईं

इस वर्ष 27 से 29 नवम्बर तक लखनऊ में हुई प्रथम उत्तरी क्षेत्र जूडो चैम्पियनशिप में के० रि० पु० बल की महिला बटालियन की लड़कियां छाईं रहीं।

इस स्तर की प्रतियोगिता में महिला बटालियन की लड़कियों द्वारा पहली बार भाग लिया गया था। कुल छः लड़कियों की इस टीम ने पांच मेंडल जीत कर सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। 44-48 किग्रा० श्रेणी में नायक कमलजीत ने रजत पदक जीता। उप निरीक्षक सुधा शर्मा (52-76 किग्रा०), टी. एच. सीमा देवी (48-52 किग्रा०), कृष्णादेवी (61 किग्रा० एवं अधिक) तथा जूननंती चिलंग (ओपन वेट श्रेणी) ने कांस्य पदक प्राप्त किए।

बल की महिला टीम को सर्वश्रेष्ठ अनुशासित टीम घोषित किया गया।

पति पत्नी में किसी बात पर झगड़ा हो रहा था।

पत्नी : एक मैं ही बंदरिया थी जो तुम से शादी कर बैठी।

पांते : काश, यह मुझे शादी के समय मालूम होता।
चपरासी (क्लर्क से) : साहब ! आज मैं सपनों में बंबई घूम कर आया।
क्लर्क : तो जल्दी से टी. ए. का बिल जमा करा दो।

संस्मरण आतंक और आंसू

मार्क लिनैल व राबर्ट कालिंस अनु० अनिल गुप्त

यह संस्मरण घृणा की आग से सुलगते उत्तरी आयरलैंड में शांति स्थापना के प्रयासों के लिए गए ब्रिटिश सैनिकों की कहानी है। रोमन कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के आतंक के इस विभत्स खेल को कभी युद्ध का नाम नहीं दिया गया, हालांकि 1969 में समस्या के उग्र रूप धारण करने के बाद करीब 2,400 लोग मारे गए तथा 26,600 से अधिक घायल हुए। इन में से कुछ लोग मार्क लिनैल के दोस्त और परिचित थे, जिसने 'रायल मेरिन कमांडोस' के साथ शांति स्थापना के लिए अल्स्टर का आठ बार दौरा किया। वह इस सब का प्रत्यक्षदर्शी गवाह रहा। यह आतंक से उपजी घृणा, विद्वेष और एक मासूम के आंसुओं की कहानी है।

1970 की गर्मियों की उस सुबह को जब हम बेलफास्ट में उतरे थे, उसी क्षण से मुझे बेलफास्ट की सड़कें भय से सहमी हुई सी प्रतीत हो रही थीं। जहाज की डाक पर मुझे तथा फ्रोगी को एक कारपोरल तथा चार अन्य रायल नौसैनिक मिले। मुझे आश्चर्य हुआ कि हम दो की सुरक्षा के लिए पाँच आदमी क्यों? साथ ही मुझे आश्चर्य हुआ कि वे इतने भयभीत क्यों हैं? लेकिन कुछ ही घंटों में मैंने पाया कि मैं स्वयं भी उत्तरी आयरलैंड में फैले आतंक और भय के वातावरण से बुरी तरह प्रभावित हो उठा हूँ।

हमारी लैंड रोवर जली हुई बसों को पीछे छोड़ती चली जा रही थी, इन बसों को पिछली रात को सड़कें रोकने के लिए प्रयुक्त किया गया था। अधिकतर दुकानों की खिड़कियों के शीशे टूटे थे। पिछले कितने ही दिनों से शहर में दंगे चल रहे थे। प्रोटेस्टेंट गैंग कैथोलिक ठिकानों पर आक्रमण कर रहे थे। कई आदमी जिनमें अधिकतर प्रोटेस्टेंट रायल अल्स्टर कांस्टेबलरी (आई. यू. सी.) के थे भयंकर रूप से घायल हुए थे। कैथोलिक लोग पुलिस की बर्बरता की शिकायत कर रहे थे। हम

सौनेकों पर यहां पर शांति स्थापित करने का एक महत्त दावेतव था।

हमारी लैंड रोवर दो बहुत बड़ लकड़ी के दरवाजों के सामने रुकी, जिन पर लगे बोर्ड पर लिखा था—“फ्लैस स्ट्रीट मिल, 45 कमांडो रायल मैरिनस, एक्सरे कम्पनी में आपका स्वागत है।” अगले आठ सालों में अपनी इसी तरह की ड्यूटी के दौरों के दौरान यह स्थान लगभग तीन महीनों तक मेरा निवास रहा। उस भयंकर युद्ध के सालों के दौरान, जिसे कभी युद्ध नहीं कहा गया हालांकि मेरे नागरिक दोस्त और साथी सैनिक मेरे सामने ही मरते और घायल होते रहे; वो विवाद भरे साल, जब एक तरफ तो आतंकवादियों के अवर्णनीय अपराध, उनकी आर्थिक सहायता के लिए कई देशों का योगदान, बैंकों में डकैतियाँ, उनको संरक्षण देने वाले गुट और दूसरी तरफ आयरिश नागरिकों का भोलापन और उनपर लाद दी गई युद्ध की भीरुता और भय, वो साल जब पड़ौसी पड़ौसी से लड़ा और हर कोई उस लड़ाई का शिकार हुआ।

फ्रोगी और मैं दोबारा व्यवस्था स्थापित करने के लिए भेजे गए दल के अंग थे। मैं 3 वर्षों से नौसैनिक था लेकिन कुल 19 वर्ष की आयु होने के बावजूद ‘स्पोग’ के समान अनुभवी माना जाता था। वह 30 वर्ष आयु का, 188 सेंटीमीटर लम्बा था तथा उसके बाल काले थे। फोगी मेरा ‘समुद्र पिता’ था। वह कमाल का नौसैनिक था, रस्सों पर उसे महारत हासिल थी। यहाँ आने पर उसने शराब की बूंद तक नहीं छुई थी, हालांकि वह बियर का बेहद शौकीन था। वह विश्व में हर जगह सुरक्षा ड्यूटी पर रहा। निस्सन्देह मेरा “समुद्र पिता” ऐसा कुछ जानता था, जो मैं नहीं।

मिल में थकान से लटके अपने चेहरे के साथ हमारे नए सार्जेंट ने हमारा स्वागत किया, “माफ कीजिए आपके अधिकारी यहां आपका स्वागत करने के लिए उपस्थित नहीं हैं, वह अस्पताल में भर्ती हैं। कल रात उन्हें चोट लगी। उनके माथे व चेहरे पर पन्द्रह टांके लगे हैं।”

“चोट लगी! सार्जेंट।”

“जब उनका हैलमेट नीचे गिर गया था, तो एक ईंट उनके माथे पर लगी। लगभग हर व्यक्ति घायल हुआ है। ओह, भाड़ में जाएँ ये दंगे। ये आपके कारपोरल हैं। जंपर इन लड़कों का ध्यान रखना। मैं कुछ घंटों के लिए सोने जा रहा हूँ।”

पहले नाम की इस अनौपचारिकता से मुझे आश्चर्य हुआ। मैं जहाँ तक जानता था कि ‘पहला नाम’ केवल पेट्रोल के समय का एक नियम है। अधिकारियों को तो ‘बॉस’ या ‘नम्बर वन’ कह कर ही पुकारा जाता था। इसका एक कारण यह बताया गया कि आतंकवादियों की प्रोविजनल आयरिश रिपब्लिकन आर्मी उत्तरी आयरलैंड में काम कर रहे सुरक्षा दलों या उनके आश्रितों के प्रति बदले की कार्रवाई कर सकती है। सुरक्षा सैनिकों की पत्नियों को वापस उनके घरों को भेज दिया गया था। एक बार आतंकवादी सैनिकों तथा उनके परिवार वालों से भरी एक बस को इंग्लैंड में उड़ा चुके थे।

एक कमांडो यूनिट में 700 से 800 आदमी होते हैं, जो आगे कम्पनियों में विभक्त रहते हैं। हर कम्पनी में एक 30 आदमियों का टुप होता है। हर टुप में 10 आदमियों के

तीन सेक्शन होते हैं।

हमारे सेक्शन का मुख्य जंपर नाटु, कठोर तथा मुझसे काफी बड़ा था। बाकी पूरे ट्रुप में लगभग सभी को टांके, पट्टियाँ या खरोंचे लगी हुई थी। पहली बार मुझे भय प्रतीत हुआ।

“1800 बजे तत्काल कूच के लिए ट्रुप तैयार रहे,” जंपर ने कहा। इसका मतलब था कि पूरे काम्बेट कपड़ों में ही, हैलमेट, धातु के कवचों, गैस मास्कों, तथा सेमी ऑटोमैटिक राइफलों या लम्बे लकड़ी के डंडों को तैयार रखते हुए किसी भी अल्प कालिक सूचना पर तैयार हो जाने की तयारी के साथ ही सोना था।

मिल में हमारा निवास स्थान हमारी जरूरत से कहीं कम था। एक लम्बा कमरा, दो शौचालयों तथा चार ठंडे पानी के नलकों के साथ 120 नौसैनिकों के लिए पर्याप्त नहीं था। एक पानी के फौव्वारे वाला मोबाईल टुक प्रति सप्ताह आता था। उस टुक के पीछे नंगे धड़ पर तौलिया लपेटे एक हाथ में बन्दूक लेकर दौड़ना पड़ता था। अगले दिन सोते समय नौसैनिक बताया करते थे कि सैनिकों का इस तरह भागना मिल में काम करने वाली लड़कियों के लिए काफी रोमांचक होता था।

मैं सो गया। अचानक मेरे कानों में भयंकर रूप से गूँजती घंटी की आवाज पड़ी।

“उठो मार्क, क्या तुम्हारे कानों में इस हरामी अलार्म की आवाज नहीं पड़ रही?” फ्रोगी अपने स्थान से चिल्लाता हुआ बोला। हम लोग दौड़कर आहाते में आए।

“मार्क, फ्रोगी, यहां आओ,” सार्जेंट चिल्लाया। “अपने सेक्शन के बाएं में। आदेशों को सुनो और वही करो जो हम करें।” धुएँ के बादल और विस्फोटों की आवाज दीवार से ऊपर उठी आ रही थीं।

“अच्छा जवानों, एक और बुरा मौका सामने है।” सार्जेंट बोला, “बाहर जमा भीड़ हिंसात्मक हो रही है। मेरे नेतृत्व में सभी उस ओर दौड़ेंगे और उस पर काबू पा लेंगे। तुम लोगों में से दो जने कांटेदार तार ले लो और उसे लाईन के 25 मीटर आगे लगा दो।”

उसने अपने माथे पर आया पसीना पोंछा। “अच्छा जवानों, मैं कोई अतिरिक्त वीरता नहीं चाहता। मेरी शुभकामनाएँ, मेरे पीछे आओ।”

हम उसका अनुसरण करते हुए गेट के बाहर चल दिए। बाहर उठ रहा शोरगुल कानों को बहरा किए दे रहा था। सड़कों के किनारे खड़े स्त्री, पुरुष और बच्चे हम पर चिल्ला रहे थे। पेट्रोल बम्ब, पत्थर, ईंटें तथा धातु की छड़ें पूरे वातावरण में फैली थीं। पूरी सड़क पर टूटे शीशे, धातु के टुकड़े तथा जलता हुआ पेट्रोल बिखरा पड़ा था।

“फायर” हमसे आगे के ट्रुप ने आंसू गैस छोड़ दी। भीड़ पीछे को हटी। “गैस मास्क पहने!” हम आगे बढ़े, लेकिन जैसे-जैसे गैस के बादल छंटते गये भीड़ पहले से अधिक क्रोधित होते हुए पुनः एकत्रित होने लगी। फ्रोगी की उसके मास्क के अन्दर से गूँजती हुई सी आवाज आई, “हम आगे बढ़ रहे हैं, स्प्रीग अपना सिर नीचा रखो।” लेकिन एक क्षण बाद ही वह आलू की तरह सड़क पर लुढ़क गया। उसके घायल

चेहरे से लगातार खून बह रहा था। मैं उसको सहायता को झुका।

“लाइन में वापस आओ, मार्क।” कार्पोरल चिल्लाया, “उसे छोड़ दो।”

मैंने ऐसा ही किया। मेरा पहला ही पाठ था, भीड़ के सामने अपनी लाइन मत तोड़ो। जमीन पर पड़ा फोगी चिल्लाया “जाओ मार्क!” मैं जैसे ही बढ़ा एक पेट्रोल बम्ब मेरे सिर के पीछे जाकर गिरा। पीछे आ रहे सैनिक के दंगों से बचाने वाले कवच को छूता हुआ वह फटते ही आग की लपटें उगलने लगा। जलता हुआ पेट्रोल हमारे पैरों के नीचे एक नदी के समान फैल गया। सैनिक अपने जलते हुए हाथों में पकड़ी अपनी काम्बेट जैकट से आग बुझाने का प्रयत्न करने लगा। वह जैसे ही भीड़ की तरफ मुड़ा जोर से आता एक पत्थर उसके चेहरे पर लगा।

अब जंपर पागलों के समान चिल्लाया, “नम्बर दो, जाओ तार के पास पीली कमीज वाले व्यक्ति को पकड़ो।”

चार सैनिक तत्काल कांटेदार तार की तरफ बढ़े और उससे उलझे अपनी ही तरफ के पत्थरों से घायल व्यक्ति को वहां से खींच लिया। उनमें से एक ने अपने ही साथी के कंधे पर अपनी लाठी को तोड़ लिया था। हमारे टुप में एक खुशी की लहर दौड़ गई। मैं भी पूरी शक्ति से चिल्लाया। मैं समझ नहीं पाया कि यह क्या हो रहा है। बाद में पता चला कि उस व्यक्ति के पास पिस्तौल थी।

और इसी प्रकार यह सब चलता रहा। सुबह 3 बजे के करीब हम लोग पूरी तरह खतरे से बाहर थे। भीड़ छंट चुकी थी। 4 बजे हमें इलाके की पैदल छानबीन का आदेश प्राप्त हुआ। अब तक वर्षा शुरू हो चुकी थी। हमारा सारा जोश ठंडा पड़ने लगा। जब हम चारों तरफ से निराश हो चुके थे, तो हमें आशा की एक किरण दिखाई दी। हमें मुक्तिदाता के समान सेना की कैटीन का एक टुक दिखाई दिया। हमने एक साथ दो दो कप चाय पी। इससे हम लोग कुछ बेहतर महसूस करने लगे। इतने में सामने से आती एक कार दिखाई दी।

“मार्क कार की तलाशी लो।” कार्पोरल ने आदेश दिया।

“शुभ प्रभात, महोदय,” मैंने आदेशों के मुताबिक विनम्रता से कहा, “कृपया लाइसेंस दिखाएं। आपकी गाड़ी का रजिस्ट्रेशन नंबर क्या है?”

“मुझे अपने काम पर पहुंचने को देर हो रही है।” ड्राइवर की सीट से गुस्से से भुनभुनाती हुई सी आवाज आई, “मैं तुम सिपाहियों के उलटे सीधे कामों के लिए सारा दिन यहीं नहीं बैठा रह सकता।”

“उसके लिए मुझे खेद है, महोदय पर...” उसने अपनी गाड़ी स्टार्ट करने के लिए गियर बदला। अचानक जंपर ने अपने रायफल के बट से कार की विंडस्क्रीन पर प्रहार किया। और उसे आगे बढ़ने से रोक दिया। “कार से बाहर आओ!” जंपर चिल्लाया। कार में बैठे व्यक्ति ने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ आदेश का पालन किया।

“हमें एक बात सीधी करनी चाहिए। मेरे आदमी तुम्हें कुछ करने के लिए कहें, तो तुम उसे तुरन्त करो, समझे।”

“मुझे खेद है, महोदय,” जंपर को ऊपर से बहुत ही दयनीय दृष्टि से देखता हुआ ड्राइवर फुसफुसाया।

“मार्क इस आदमी को ले जाओ और। इसके बूटों की तलाशी लो।”

हम कार के पीछे गए। ड्राइवर काफी घबराया हुआ लग रहा था। उसने धीरे से अपने बूट खोले। मैं स्वयं आश्चर्य में आ गया केवल 20 घंटे पूर्व की दूध की बोतल पेट्रोल से भरी हुई उसके तस्मों के साथ बंधी थी।

“निंगो,” मैं चिल्लाया, “पेट्रोल बम” आदमी ने भागना चाहा। मैंने लाठी के एक ही वार से उसे नीचे गिरा दिया। उसके नीचे गिरते ही मैंने कहना शुरू कर दिया, “मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूँ। स्पेशल पावर एक्ट, रेगुलेशन II के अधीन...”

प्रातः तड़के ही मैं बहुत उत्तेजित सा अपने बिस्तर पर जा पड़ा। पट्टियों और। टांकों से भरे चेहरे को लिए फ्रोगी अपना बैग पैक कर रहा था।

“तुम कहां जा रहे हो, दोस्त?”

“वापस इंग्लैंड,” उसने दर्द में डूबे स्वर से कहा, “और अधिक इलाज के लिये, तुम ठीक से रहोगे। तुम्हारे नेता अच्छे हैं। मेरा कार्य अब समाप्त हो गया है। मुझे अपना हाथ दो।” और मेरा सबसे अच्छा मित्र चला गया।

आगे का सारा टूर मेरे लिए मलिन सा रहा। हम लगातार अपने तरीकों व चालों का उपयोग करते रहे। हमारे धातु के कवच बहुत छोटे थे। (बाद में हमें प्लास्टिक के बड़े कवच दिए गए।) अतः हम मिल में पड़े गते और सन के डिब्बों से अपने घड़ों के निचले हिस्से को ढके रहते थे। और दंगाई हमें अपने पैड से बाहर निकालने के लिए हम पर कांच के टुकड़े फैंकते थे।

हम गते के डिब्बों को आगे कर अपनी रक्षा करते थे। दंगाई दीवारों और घरों की छतों से तेजाब की बोतलें फैंकते थे। हमने किट में भीगा कंबल और वाटर एक्सटिंग-निशर (पानी फेंकने का यन्त्र) भी शामिल कर लिए थे। लेकिन यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती।

अपने खाली समय में हम अपनी सामान्य जिंदगी की तरफ लौटने की कोशिश करते थे। हर चार दिन बाद या उसके आसपास हमें एक दोपहर को खरीददारी करने, बार में जाने या फिल्म देखने के लिए छुट्टी दी जाती थी। हर महीने हमें सामान्यतः 24 घंटे की छुट्टी दी जाती थी। इस छुट्टी को हम बेंगूर समुद्र तट पर जाते थे। जहां प्रोटेस्टेंट एवं कैथोलिक लोग अक्सर साथ खाते पीते व नाचते गाते थे।

हमने वहां एक नृत्य कैंप का आयोजन भी किया और उसमें आयरिश लडकियां भी शामिल हुईं और वह तब तक चलता रहा जब तक कि उसे अतिवादियों ने रोक नहीं दिया।

जब टूर समाप्त हुआ तो हम छुट्टी पर घर चले गए। हमारी जगह उन ब्रिटिश सैनिकों ने ले ली जो उन हजारों ब्रिटिश सैनिकों में से थे जो अल्स्टर से आये थे। मैं सौभाग्यशाली रहा कि 1970 की शरद ऋतु ने बाहरी रूप से मुझे कोई यातना नहीं

दो। लोकेन यातना मन के अन्दर थी। आने वाले सालों में उत्तरी आयरलैंड के प्रांते मेरे मन में भय और घृणा ही भरती गई।

लेकिन मेरे हृदय में इसके कुछ नागरिकों के प्रति कोमल भाव भी था। उन लोगों के प्रति जो निर्दोष थे मेरी तरह लेकिन उस बर्बर लड़ाई में फंस गए थे जिसे न तो वे चाहते थे न समझते थे।

बचपन से यौवन

बचपन से ही मैं जानता था कि युद्ध एक बुरी चीज है। मेरे कैनेडियन पिता द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रायल कैनेडियन आर्मी की मेडिकल कोर में सेवारत थे, युद्ध की समाप्ति पर उन्होंने नाजियों के मृत्यु कैंप अस्चविट्च को देखा था, और उसकी दुःस्मृति ने कभी उनका पीछा नहीं छोड़ा। इंग्लैंड की मूल निवासिनी मेरी माँ युद्ध के समय पौधे रोपने वाली एक सेविका थी, जो लंदन में हुई भयंकर बमबारी के बीच से बच निकली थी।

युद्ध के बाद वे लोग तीन साल के लिए कनाडा चले गए फिर वहां से वे लोग इंग्लैंड लौट आए, जहां पर मेरे पिता ने इंजीनियर के रूप में कार्य किया।

मैं बचपन में कविता को बहुत पसंद करता था। और एक बार मैंने अपनी मां से सुन कर लंदन में हुई बमबारी के बारे में कुछ पद्य भी लिखे थे। मुझे संगीत के प्रति प्यार और अच्छी आवाज मां से विरासत के रूप में मिले थे। शैशवावस्था से ऊपर उठते ही मैं क्लबों और शौकिया रंगमंचों पर गाने लगा था।

मैं नाजुक सा सीधे साधे स्वभाव का कविता तथा संगीत से प्यार करने वाला लड़का था। स्वभावतः मुझे स्कूल से उठा लिया गया। मैं स्काऊट में शामिल हो गया, जहां मैंने कुछ जूडो सीखा जिस का अन्त काफी निर्दयता से हुआ। 16 साल की उम्र में मेरे दिमाग में पादरी बनने के विचार ने जन्म लिया। किसी और व्यवसाय के नजर में न होने तथा रोमांचकता के लालच में मैं रायल मैरिनस् में शामिल हो गया।

सेना की यह महत्वपूर्ण कोर, अपनी अद्वितीय हरे रंग की टोपी के साथ इसमें शामिल होने वाले व्यक्ति के लिये इतनी जल्दी शूद्र हो जायेगी इसका मुझे ज्ञान भी न था।

मेरे पहले ही दिन—लालिमा लिये मेरे भूरे लंबे बालों को मूंडने के बाद एक सार्जेंट अपमान और धूर्तता से भरे शब्दों से बोला, “तुम नौसैनिक बनना चाहते हो, क्यों चिकने ?” मुझे ताज्जुब हुआ कि उनके साथ काम करना पड़ेगा। मैं शराब नहीं पीता, सिगरेट या तुम्बाकू का सेवन भी नहीं करता था। मुझे अपने घर की याद आने लगी और इसी समय मुझे अहसास हुआ कि 16 साल की उम्र में संरक्षणता की कितनी अधिक आवश्यकता महसूस होती है।

अब तक मेरा वजन 86 किलो तथा कद 178 सेंटीमीटर का हो चुका था। मैंने बाक्सिंग सीखी तथा स्काटलैंड और उत्तरी आयरलैंड में रायल नेवी का चैंपियन बन गया। मैरिनस् द्वारा मुझे 18 महीने तक अंग्रेजी, गणित तथा अन्य विषयों में उच्च

शिक्षा के लिये कालेज में भेज दिया गया। समुद्र में अपनी ड्यूटी के दौरान में दाक्षिण में टीनीडाड तक गया। उत्तरी ध्रुव प्रदेश में प्रशिक्षण के लिये में स्कैंडिनाविया तक गया। मैरिन्स में मैं एक युवक से पूर्ण प्रादमी बना।

1970 में बेलफास्ट की ड्यूटी के बाद 35 कमांडो स्काटलैंड में गहन प्रशिक्षण के लिये भेजे गये। ऐसा स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि हम फिर आयरलैंड लौटेंगे। अतः मैंने आयरलैंड की समस्याओं और इतिहास के बारे में पढ़ना शुरू किया।

वास्तव में समस्या तब पैदा हुई जब पोप की गद्दी पर बैठने वाले अकेले अंग्रेज पोप एडरियन IV ने 1155 में बादशाह हेनरी II को आयरलैंड को कब्जाने के लिये अधिकार दिये। लगभग 450 वर्ष के संघर्ष के बाद ही अंग्रेज आयरलैंड के कैथोलिक सामंतों को हरा सके, जिनकी जमीन बाद में इंग्लैंड स्काटलैंड से आये प्रोटेस्टेंटों को दे दी गई।

इसके बाद भी बिलकुल गरीबी का जीवन जीने को मजबूर हुये कैथोलिक अपना संघर्ष जारी रखे रहे, लेकिन कोई बहुत अच्छे परिणाम सामने नहीं आये।

इसी बीच ब्रिटिश सरकार द्वारा 1914 में आयरलैंड के लिए एक 'होम रूल बिल' पास किया गया, लेकिन इसके कार्यान्वयन को प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति तक रोक दिया गया। इसके कार्यान्वयन में हो रही देर को लेकर उपजे माक्रोश के कारण 24 अप्रैल, 1916 को डबलिंग में एक खूनी दंगा हुआ। और 1919 में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी का आविर्भाव हुआ। इसी साल में ब्रिटिश सरकार ने 'गवर्नमेंट आफ आयरलैंड एक्ट' पास किया, जिसमें इस बात का प्रावधान था कि आयरलैंड का जो भी भाग ब्रिटिश साम्राज्य के साथ रहना चाहता है रह सकता है।

1922 में ब्रिटेन की ज्यादातियों से ऊब कर 26 दक्षिणी कैथोलिक काउंटीस में विद्रोह फूट पड़ा। बाद में इन्हीं को मिलाकर आयरलैंड का गणतंत्र बना। बाकी 6 प्रोटेस्टेंटों की बहुलता वाली अल्स्टर की काउंटीस ने ब्रिटेन के साथ रहने के पक्ष में मत दिया। लेकिन यहां प्रतिबंधित आयरिश रिपब्लिकन आर्मी ने संयुक्त एवं स्वतंत्र आयरलैंड के लिये अपने प्रयासों में कभी ढील नहीं दी।

उत्तरी क्षेत्र के रहने वाले कैथोलिकों के साथ कानून भी भेदभाव करता था। पिछली कई पीढ़ियों से उन्हें द्वितीय श्रेणी की नौकरियां एवं द्वितीय श्रेणी की आवासीय सुविधायें दी जा रही थीं। इस असमानता को दूर करने के लिये कैथोलिकों द्वारा शुरू किये गये नागरिक अधिकारों से संबंधित आंदोलन से 1969 में समस्या पैदा हुई।

पहले तो कैथोलिकों ने अपने प्रदर्शनों पर आक्रमण करने वाले प्रोटेस्टेन्ट गिरोहों से अपनी सुरक्षा के लिए ब्रिटिश टुकड़ियों का स्वागत किया, बाद में वह प्रोटेस्टेंटों से उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के कारण ब्रिटिश सैनिकों का सम्मान करने लगे। अतिवादियों (जो बाद में और अधिक प्राधुनिक होकर 1970 में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी का एक अंग हो गए) ने इस मौके का फायदा उठाया और कैथोलिक अल्पसंख्यक समुदाय के रक्षक के रूप में सामने आए। उन्होंने आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के प्रभुत्व वाले समाजवादी ढांचे पर आधारित स्वतंत्र आयरलैंड की

रचना के लिए आतंकबादी आंदोलन का रास्ता चुन लिया।

सदियों से अन्याय सह रहे कैथोलिकों के प्रति मेरे मन में सहानुभूति थी। लेकिन मुझे प्रोटेस्टेंटों की अल्सटर वालंटियर फोर्स तथा असटलर फ्रीडम फाइटरस् सहित हर आतंकवादी से घृणा की। अतिवादियों की बर्बर चालों और हत्यारों को किसी भी तरह से न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता था, मेरे लिए भी वह साधारण गिरोहबाज और हत्यारे थे। 1969 तक लगभग 2,400 लोग-जिनमें तीन चौथाई भाग निर्दोष नागरिक थे—हिंसात्मक मौत के शिकार हो चुके थे, इनमें से अधिकतर अतिवादियों के हाथों मारे गए थे। दूसरी तरफ लगभग 26,600 आयरिश तथा ब्रिटिश सैनिक घायल हुए थे, जिनमें से कुछ अपने जीवन के लिए गिड़गिड़ा रहे थे।

शुभचिंतक लेकिन बहुत बुजुर्ग नहीं—के रूप में मैं अगस्त 1971 में दो दौरों के लिए फिर बेलफास्ट लौटा। दूसरा दौरा अगले साल के फरवरी माह में समाप्त हुआ। कार्पोरल के रूप में मैं अब अपने से अधिक उम्र के 9 नौसैनिकों का नेतृत्व करता था। और अपने को अधिक आयु का प्रदर्शित करने के लिए मैंने मूछें रख ली थीं। इस अघोषित युद्ध की समस्याएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही थीं। शस्त्रों से सजी एक गुप्त कार जिसमें मशीन गनों लगीं थीं ने हमें डाक से अपनी सुरक्षा में लिया। हालांकि दंगे अब कम समय के अंतराल से हो रहे थे, फिर भी अतिवादियों के सशस्त्र हमलों या आंदोलनों से बचाते हुए हमें ले जाया गया।

पहले मेरे सेक्शन को बेलफास्ट के उत्तरी पश्चिमी भाग में स्थित एक छोटे कस्बे टोमब्रिज में ठहराया गया। हमारा घर रायल अल्सटर कांस्टेबलरी का स्टेशन था। यह सलीन व भयंकर नीरवता से भरा जगह-जगह से उखड़े प्लस्टर वाला घर था। लेकिन पुलिस सार्जेंट डोड्स अतिरिक्त रूप से दयालु था, और उसकी गर्भवती स्त्री ने अपनी स्वेच्छा से हमारे लिए खाना बनाया।

एक दिन मैं उस स्थानीय दुकान पर रुका जहां से कि हम कभी-कभी सिगरेट, मिठाईयां या अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएं खरीदा करते थे। बुजुर्ग दुकानदार महिला ने आंसू भरी आंखों से मुझे देखते हुए कहा “मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती बेटे।”

“क्यों नहीं?”

संस्मरण

“क्योंकि वे मुझे ब्रिटिशों की मदद करने के कारण पकड़ कर ले जाएंगे।” और वह अपनी नम आंखों से खिड़की के बाहर देखने लगी। पहले कुछ युवक हमें मदद देने के कारण उससे बुरी तरह पेश आए थे।

बाद में हमारा स्थानांतरण बेलफास्ट के ओल्ड पार्क पुलिस स्टेशन में कर दिया

गया। वहां टोमाब्रेज से एक बुरी खबर आई। सार्जेंट डोड्स की आतंकवादीयों द्वारा हत्या कर दी गई थी।

ओल्ड पार्क की पुलिस भी हमारी दोस्त बन गई थी। एक लम्बी श्रमसाध्य रात के बाद मैंने उनमें से एक के साथ कार्य किया। वह एक अच्छा बहादुर तथा रायल अल्सटर कांस्टेबलरी में काम रहे कुछ कैथोलिकों में से एक का रिश्तेदार था। उसने मुझे बताया कि उसके पांच बच्चों को किस प्रकार स्कूल में पीटा जाता है, और किस प्रकार कैथोलिक संप्रदाय के कुछ लोग उसके प्रोटेस्टेंटों के बीच पुलिस का कार्य करने के लिए उसकी भर्त्सना करते हैं।

सुबह वह जल्दी-जल्दी अपने घर के लिए प्रस्थान कर गया। मैंने शेव की और सोने चला गया। थोड़ी ही देर में अलार्म की आवाज चीखने लगी। मैं तत्काल आप्रेशन रूम की ओर भागा।

“शराब की दुकान पर गोली चली।” ड्यूटी कांस्टेबल ने बताया। मैंने जल्दी से रेडियो तथा रायफल छीनी और अपने तीन साथियों के साथ सड़क की ओर दौड़ा। हमारे नजदीक जुटी भीड़ हल्ला मचाते हुए हम पर थूक रही थी, हमें कोस रही थी।

“पीछे हटो!” मैं चिल्लाया और रेडियो पर सहायता के लिए कहा। मेरा एक आदमी दर्द से कराह रहा था। उसने प्रहार करने वाले को अपने रायफल के बट से रोका और उसे दुकान के अंदर धकेल दिया। और अब मेरी पुलिस का आदमी नीचे खून से लथपथ पड़ा था। आक्रमण के समय उसके पास केवल इतना ही समय था कि वह अपने चेहरे की ओर आती गोलियों को अपने हाथ से रोक पाया था।

जब मेरे दोस्त के शरीर को एम्बुलेंस में लादा गया, तो भीड़ हर्ष से चिल्लाने लगी, कुछ ने उस पर थूका भी। मेरे आदमियों ने भीड़ को अपने रायफलों के बटों की मदद से पीछे हटाया।

मुझे इस समय उनके लिए विशेष सावधानी बरतनी थी। क्योंकि हमें सख्त आदेश थे कि बिना अत्यधिक आवश्यकता के न तो सख्त व्यवहार करना था और न ही गोली चलानी थी, और इस आदेश के पालन में जरा सी भी ढील हमें अदालत तक खींच कर ले जा सकती थी। एक बार मुझे स्वयं अपने एक आदमी की अत्यधिक कठोरता पर गुस्सा आ गया। लेकिन आखिरकार हम लोग भी मनुष्य थे कभी-कभी अत्यधिक तनाव के क्षणों में कोई व्यक्ति ‘फिसल’ ही जाता था। जैसे रात को जंपर हवा से बचाने वाले कवच पर चोटें करता था।

क्रमशः

(©) 1983 दि रिडर्स डाइजेस्ट एसोसिएशन (कनाडा) लिमिटेड की अनुमति से मुद्रित।

5 अक्टूबर, 1987 को नक्सलवादियों की सूचना मिलने पर जमशेदपुर के वजीरगंज क्षेत्र में स्थित के. रि. पु. बल की 36 बटालियन की 'बी' कंपनी के दो सेक्शन उपनिरीक्षक रामखिलावन सिंह के नेतृत्व में तथा प्लाटून पोस्ट वजीरगंज से दो सेक्शन उपनिरीक्षक चंदरलाल के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस के साथ लालूचक गाँव में छापामारी के लिए गए।

जब एक छोटी नदी के किनारे-किनारे पुलिस पार्टी लालूचक गाँव की ओर बढ़ रही थी तो नक्सलवादियों ने संयुक्त पार्टी पर आक्रमण कर दिया। पार्टी ने तत्काल पोजिशन लेकर फायर का जवाब दिया। बाद में पूरे क्षेत्र की तलाशी के दौरान 12 नक्सलवादी गिरफ्तार किए गए तथा 1 देशी एम. एम. एल. 12 बोर, तीन 12 बोर के सजीव कारतूस, 6 दगे हुए केस, पांच .315 के खोके बरामद किए गए। बल के जवानों के इस कार्य की नागरिक अधिकारियों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

मनोरंजन

एक नेताजी बस के इंतजार में बैठे थे। जब काफी देर तक बस नहीं आई तो वह एक पेड़ के नीचे बैठ कर सुस्ताने लगे और सो गए, जब बस आई तो नौकर ने झिंझोड़ते हुए कहा, “उठिए साहब, बस आ गई।”

नेताजी चिढ़कर बोले, “चुप रह, शोर मत कर, कह दे कल मुलाकात होगी।”

एक अफसर अपनी पत्नी के साथ बाजार में घूम रहा था। लोग उन्हें सलाम कर रहे थे। अफसर अपनी पत्नी को प्रभावित करते हुए बोला, “देखा मेरी प्रतिभा को। मेरी कीर्ति कितनी बड़ी है।”

पत्नी चिढ़कर तपाक से बोली, “मुझे नहीं देखनी तुम्हारी प्रतिभा और कीर्ति। उन्हीं कलमंहियों को दिखाने के लिए लाए हो क्या।”

एक मुकदमा बड़े ही नाजुक दौर में पहुंच गया था। जज ने कैदी के वकील को राय दी कि वह अपने मुवक्किल को बाहर ले जाए और उसे आधे घंटे तक समझा दे कि उस का भला किस में है।

वकील अपने मुवक्किल को बाहर ले गया और आधे घंटे बाद जब वह अकेला ही लौटा तो जज ने पूछा, “तुम्हारा मुवक्किल कहाँ है?”

“जी, वह फरार हो गया,” वकील ने मासूमियत से जवाब दिया।

“क्यों?” जज ने फिर पूछा।

“क्योंकि मैंने समझा दिया था कि उस का भला फरार हो जाने में ही है,” वकील का जवाब था।

कक्षा में किसी विषय पर बात चल रही थी। एक छात्र दूसरे से बोला, “तुम मूर्ख हो।” उसकी आवाज शिक्षिका के कानों में पड़ी तो वह बोली, “मूर्ख को पहचानने वाला महामूर्ख है।” अचानक पीछे से आवाज आई, “महामूर्ख को पहचानने वाला

परम मूखे है।”



सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 18वें बैच के अधिकारी व के० रि० पु० बल के अन्य उच्च अधिकारियों के साथ आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री पी. चिदंबरम।



सोधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 18वें बॅच के पुरस्कार विजेता अधिकारियों के साथ आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री पी. बिहंदरम ।